शावर

तन्त्र शास्त्र

२. तांत्रिक कर्मकाण्ड के बारे में २६८
३. महर्षि यतीन्द्र नक्षत्र सारणी २७४
४. गुरु मंत्र का चयन २७७
५. गृह और व्यक्तित्व २७८
६. पाश्चात्य अंक दर्शन २८८
७. अंग्रेजी मूल्य तालिका २८९
८. काकणी गणना २९०

SHAKTI ACHARYA SABAR NIALI,ODISHA

SABAR MANTRA HINDI

१ | प्रारम्भिक ज्ञातव्य

शाबर-मन्त्रों के विषय में

जनश्रुति है कि कलियुग के आरम्भ होने पर देवाधिदेव महादेव शिवजी ने वेदोक्त मन्त्रों को कील दिया, जिसके कारण वे अप्रभावी हो गये; परन्तु यथार्थ में उनकी सामर्थ्य समाप्त नहीं हुई, केवल यही अन्तर पड़ा कि यदि उन्हें उत्कीलन-विधि से उत्कीलित कर दिया जाय तो वे अपना चमत्कार प्रदर्शित करने में समर्थ हो जाते हैं।

मन्त्रों की उत्कीलन-विधि का ज्ञान बड़े विद्वानों तक ही सीमित था, अतः सामान्य मन्त्र-साधकों को उनके साधन में कठिनाइयाँ होने लगीं। ऐसी स्थिति में कतिपय सिद्ध महापुरुषों द्वारा शाबर-मन्त्रों की रचना की गई। ये मन्त्र लोक-भाषाओं में रचे गये थे और इन्हें सिद्ध करने हेतु उत्कीलनादि की प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता भी न थी, अतः ये बड़े लोकप्रिय हुए और इनका प्रचार-प्रसार भी खूब हुआ।

शाबर-मन्त्रों के रचयिता सिद्ध-पुरुष ही रहे होंगे, इसमें तो सन्देह नहीं, परन्तु वे शास्त्रज्ञ अथवा विद्वानों की कोटि में रक्खे जाने के योग्य भी रहे हों, इस सम्बन्ध में अलग-अलग मत हैं। लिपिबद्ध न किये जाने के कारण ये मन्त्र गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से केवल कण्ठ-निवासी ही बने रहे। आरम्भ में बहुत समय तक विद्वानों को इनके महत्व का ज्ञान नहीं हो सका, परन्तु कालान्तर में इनका प्रभाव प्रकट होते हुए प्रत्यक्ष देखा गया, तो वे भी इनका महत्व स्वीकार करने को बाध्य हुए। फलतः इन मन्त्रों के संकलन का कार्य भी आगे बढ़ा।

प्रस्तुत प्रकरण में मन्त्र-साधना सम्बन्धी प्रारम्भिक-ज्ञातव्य विषयों का उल्लेख किया जा रहा है। इनका सम्यक्-ज्ञान होने पर ही साधक को मन्त्र-साधन में सफलता प्राप्त हो सकती है।

मन्त्र-उत्कीलन विधि (१)

SHAIKH ABDUL GAFFAR MAHAMMAD MUSHA

प्रसिद्ध है कि कलियुग में महादेवजी ने सभी मन्त्र कील दिये हैं, अतः वे फलदायक सिद्ध नहीं होते। परन्तु यदि उनका उत्कीलन कर दिया जाय तो वे सद्य फलप्रद सिद्ध होते हैं। अतः यहाँ उत्कीलन की विधियाँ लिखी जाती हैं। किसी भी मन्त्र का साधन करने से पूर्व उसका नियमानुसार उत्कीलन कर लेने से सिद्धि एवं सफलता शीघ्र तथा अवश्य प्राप्त होती है।

जिस मन्त्र को जपना हो उसे अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र के ऊपर १०८ बार लिखकर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से उसका पूजन करके, ब्राह्मण भोजन करायें। फिर एक मिट्टी के पात्र में पानी भर कर मन्त्र-लिखित भोजपत्रों को उसमें डालते जायें अथवा उन्हें किसी नदी की धारा में प्रवाहित करदें तो उस मन्त्र का उत्कीलन हो जाता है।

अष्टगन्ध में निम्नलिखित वस्तुओं की गणना की जाती है—

१. गोरोचन, २. कपूर, ३. हाथी का मद, ४. अगर, ५. कस्तूरी, ६. केशर, ७. लाल चन्दन और ८. श्वेत चन्दन।

मन्त्र-उत्कीलन विधि (२)

मिट्टी द्वारा पुरुष के आकार वाली इष्टदेव की प्रतिमा बनायें, फिर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त शुभ मुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर मन्त्र लिखकर, उसे प्रतिमा की छाती में लगाएँ तथा एक मास तक उसका धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करें। तदुपरान्त गुरु की आज्ञा लेकर उस मन्त्र को तो स्वयं लेलें तथा प्रतिमा को नदी में बहाकर ब्राह्मण भोजन करायें। फिर मन्त्र का जप करें तो वह सिद्ध हो जायेगा।

मन्त्र-उत्कीलन विधि (३)

मन्त्रोत्कीलन के लिए १० संस्कार करने का भी विधान है, उसके लिए हमारी पुस्तक 'हिन्दू तन्त्र शास्त्र' का अध्ययन करें।

नजरबन्दी का मन्त्र (१)

मन्त्र (१)—"ॐ नमो भगवते वासुदेव नागराजाय गोप कुण्डली चलनानिनी स्वाहा।"

साधन-विधि—

रविवार के दिन अंकोल की लकड़ी लें, गोल चौका देकर, धूप-दीप, नैवेद्य का भोग लगाकर, १०८ बार इस मन्त्र का जप करें तो सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

तमाशा करते समय देखने वाले लोगों की नजर बाँधने के लिये, तमाशा करने से पूर्व इस मन्त्र को पढ़ कर, जिन लोगों पर अपनी दृष्टि घुमायें, उनकी नजर बँध जाय।

नजरबन्दी का मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो वटुकी चामुण्डी ठः ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

पद्म नाल पर क्वारी कन्या के हाथ से कते सूत को लपेट कर १०८ बार मन्त्र का जप करे तो सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

पहले मन्त्र के अनुसार।

नजरबन्दी की गोली (१)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते वासूकी नागराजाय गोप कुण्डली चलनानिनी स्वाहा।"

साधन-विधि—

अंगूर की डाली, शशा की बीट, थूहर का पत्ता, बहड़े की छाल तथा पटोल पत्र (परवल के पत्ते)—इन पांचों को भेड़ के मूत्र में पीस कर गोली बांधें। फिर गूगल की धूनी दें तथा दीपक जलायें। दूध-बूरा मिलाकर भोग धरें तथा पुष्प चढ़ावें। फिर १०८ बार मन्त्र का जप करके, गोली को छाया में सुखा कर रख लें।

प्रयोग-विधि—

खेल-तमाशा दिखाते समय सर्व प्रथम "ॐ पानी बल स्वाहा।"

इस मन्त्र को विभूति पर ७ बार पढ़ कर, उसे अपने मस्तक पर लगायें; फिर उक्त गोली को मेहदी की भांति हाथ पर लगाकर यह कहें कि—"फलाना (अमुक) आये"—तो दर्शकों को वही व्यक्ति आता दिखाई देगा।

अथवा—

गोली को किसी के गले से लगायें तो रुण्ड सा दिखाई दे।

अथवा—

गोली को कौए के पंख से लगायें तो कौआ दिखाई दे।

अथवा—

गोली को कमल की नाल में मल कर ऊँचा करें तो आदमी ऊँचा दिखाई दे और नीचा रक्खें तो उल्टा दिखाई दे।

अथवा—

गोली को नीबू के पत्ते में लगायें तो वह बिच्छू जैसा दिखाई दे।

अथवा—

गोली और हरताल, इन दोनों को मिलाकर अँगुली में लगा दें तो खोवा दिखाई दे।

अथवा—

मुर्गे के पंख पर गोली को मल कर उसे हाथ में लें तो मुरगावी दिखाई दे।

अथवा—

गोली को अन्न पर मलें तो रत्न दिखाई दे।

अथवा—

गोली को करंज बीज पर मल कर उसे मुँह में रक्खें तो पेट में पानी भरने और उसे बाहर निकालने में आनन्द हो।

अथवा—

गोली को हाथ, नाक पर मलें तो अदृश्य होकर भीड से बाहर निकल जाय।

अथवा—

गोली को सारे अंग पर लगायें तो हाथ-पाँव आदि सब अंग टूटे हुए से दिखाई दें और जब उस लेप को पानी से धो दें तो सब जुड़े हुए दीखें।

इस प्रकार एक ही गोली के प्रयोग से अनेक प्रकार के चमत्कार प्रदर्शित किये जा सकते हैं।

नजरबन्दी की गोली (२)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते वासुकी नागराजाय गोप कुण्डली चलनानिनी स्वाहा।"

साधन-विधि—

गोदन्ती, हरताल, आँवला, केला की जड़, मूंगभीगे का अंगूर, सोलह पर्ण, तथा भृंग शाख—इन छहों वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर भेड़ के मूत्र में पीस कर गोली बाँध लें तथा उसे पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित कर, छाया में रख कर सुखालें।

प्रयोग-विधि—

उक्त गोली को घिस कर काँसे के पात्र पर लगाने से पाताल की देवी और देवता दिखाई देते हैं।

अथवा—

गोली और सरसों को गोमूत्र में पीस कर शरीर पर मलने से बड़ा आकार छोटा दिखाई देता है।

अथवा—

गोली और सरसों को बकरी के मूत्र में पीस कर शरीर पर लगाने से छोटा आकार बड़ा दिखाई देता है।

अथवा—

गोली को धतूरे के बीज तथा दूध के साथ पीस कर अपनी अँगुली पर मलें, फिर वह अँगुली जिसे दिखाई जायेगी, वह नंगा होकर नाचने लगेगा।

मन्त्र-तन्त्र सिद्धिकर मन्त्र

SHAIKH ABDUL GAFAR,KHALI,ODISHA

मन्त्र–"ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः जगदुत्पत्ति स्थिति प्रलय कराय ब्रह्मा हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुकानि दर्शय दर्शय त्रैलोक्येश्वराय नमः तन्त्रान् सिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

घी का दीपक जलाकर, धूप देकर तथा चन्दन इत्यादि चढ़ाकर किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर २१ दिन तक नित्य १०८ की संख्या में जप करते रहने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र को सिद्ध हो जाने के उपरान्त जिस मन्त्र अथवा तन्त्र का साधन एवं प्रयोग किया जाता है, वह सफल होता है।

इन्द्र जाल का मन्त्र

मन्त्र–"ॐ नमो नारायणाय विश्वंभराय इन्द्रजाल कौतुकान् दर्शय-दर्शय सिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा।"

साधन एव प्रयोग-विधि—

यह मन्त्र किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर २१ दिनों तक नित्य १०८ की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। किसी भी इन्द्रजाल के कौतुक को करने से पूर्व इस मन्त्र का उच्चारण कर लेने से कार्य में सफलता मिलती है।

रसायन-मन्त्र

मन्त्र–"ॐ नमो हरिहराय रसायण सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा!"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर इस मन्त्र को २१ दिनों तक नित्य १०८ की संख्या में जपने से यह सिद्ध हो जाता है। इसे मन्त्र के प्रारम्भ में उच्चारण करने से रासायनिक कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है।

मूठ को वापिस भेजने का मन्त्र

मन्त्र–"काला कलुवा चौंसठ वीर मेरा कलुवा मारा तीर जहाँ को भेजूँ उहाँ जाय माँस मच्छी को छूवन न जाय अपना मारा आपही खाय चलत वाण मारूँ उलट मूँठ मारू मार मार कलुवा तोरी आस चार चौमुखा दिया न बातो जा मारूँ वाही की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनो माँ का दूध पीया हराम है।"

साधन-विधि—

सात मंगलवार तक प्रति दिन २१ बार इस मन्त्र का जाप करें। घी का दीपक जला कर रक्खें तथा अग्नि पर गुग्गुल डालें। लौंग का जोड़ा, फूल तथा मिठाई रक्खें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

यदि किसी ने अपने ऊपर मूठ चलाई हो तो इस मन्त्र को पढ़कर उसे उल्टी भेज दें।

इसी मन्त्र द्वारा आकर्षण तथा वशीकरण के कार्य भी सिद्ध होते हैं। इस हेतु सुपारी की छाल पर २१ बार इस मन्त्र को पढ़कर पान में रखकर खिलादें तो साध्य-व्यक्ति आकर्षित अथवा वशीभूत होता है।

यह मन्त्र रोग-परीक्षा में भी प्रयुक्त होता है। इसके लिए कच्चे सूत के धागे द्वारा रोगी को सिर से पाँव तक नाप कर, २१ बार मन्त्र फूँके, फिर डोरा को पुनः नापें। उस समय यदि डोरा बढ़ जाय तो समझें कि "रोगी पर आसेब का खलल है" और यदि घटे तो 'शारीरिक-रोग' समझना चाहिए।

हाजरात का मन्त्र

मन्त्र–"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम खुदाई बड़ा तू बड़ा जैनु द्दीन पैगंबर दुनी तेरी सादात फुरो वादा नामुरादी देवुन यादी तुर्क मा पीर ताइया सिलार देखूँ तेरी शक्ति वेग बांधि ल्याव नौ नारसिंह चौरासी कलुवा ब्रह्मा

अठोत्तर सै शाकिनी कमण दुरामन छलछिद्र प्रेत चोर चावर अगिया बेताल बगी बाँधि ल्याव जो न बाँधि ल्यावें तो दुहाई सुलेमान पैगंबर की।"

SHAHU AGENCY GEAR BENGLORE

साधन-विधि—

शुक्रवार को आरम्भ करके तैल, फुलेल, लोंग, धूप एवं मिठाई से पूजन करके नित्य २१ मन्त्र जपे तो ४० दिन में सिद्ध हो।

प्रयोग-विधि—

जब हाजरात करनी हो तो सर्व प्रथम मिट्टी से जगह लीपकर, चावल की मस्जिद बनायें। फिर कपास की बत्ती बनाकर, पट्टे पर त्रिशूल लिख कर एक क्वारी कन्या को स्नान करा के उसे स्वच्छ वस्त्र पहना कर सामने बैठायें। फिर चावलों को अभिमन्त्रित करके उस कन्या पर मारे तथा उसके मस्तक पर दीपक रख कर, जो पूछना चाहे, वह पूछे तो उसके द्वारा सत्य-सत्य उत्तर मिलेगा।

प्रत्यक्ष हाजरात का भाषा मन्त्र

.....

मन्त्र—"ॐ नमो कामाख्यायै सर्व सिद्धिदायै अमुक कर्म कुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां जिस कार्य की इच्छा से मन्त्र का जप करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

मन्त्र-जप से पूर्व निम्नलिखित संकल्प-वाक्य का उच्चारण करके कराङ्ग-न्यास तथा हृदयादि-न्यास करना चाहिए। अन्त में ध्यान करके, मन्त्र--जप करना चाहिये।

संकल्प-वाक्य—"अस्य मन्त्रस्य वह्निक ऋषि जगती छन्दः कामाख्या देवता प्रणवः शक्तिः अव्यक्तं कीलकं 'अमुक' कर्मणि जपे विनियोगः।"

विशेष—

उक्त संकल्प वाक्य में जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां जो कार्य करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

अथ कराङ्ग न्यास—

इसके बाद निम्नानुसार कराङ्ग न्यास करें—

"ॐ नमो अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः स्वाहा।
सर्व सिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वौषट्।
अमुक कर्म अनामिकाभ्यां हुँ।
कुरु कुरु कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् स्वाहा।
करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।"

अथ हृदयादि न्यास—

इसके बाद निम्नानुसार हृदयादि न्यास करें—

"ॐ नमो हृदयाय।
कामाख्यायै शिरसे स्वाहा।
सर्व सिद्धिदायै शिखायै वषट्।
अमुक कर्म कवचाय हुँ।
कुरु कुरु नेत्र त्रयाय वौषट्।
स्वाहा अस्त्राय फट्।"

अथ ध्यान—

इसके उपरान्त निम्नानुसार ध्यान करें—

"योनि मात्र शरीराया कंगुवासिनि कामदा।
रजः स्वला महातेजा कामाक्षी ध्येयतां सदा।।"

साधन-विधि—

पूर्वोक्त मन्त्र को १००० की संख्या में जप कर १०० गुड़हल के फूलों की आहुति देकर होम करें। फिर होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन कर, मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र-जप के बाद सकल्प का पानी फूलों पर डालें।

प्रयोग-विधि—

हाजरात करते समय पहले नीचे के चित्र में प्रदर्शित यन्त्र को भोज-पत्र के ऊपर लाल चन्दन, केशर आदि से लिखना चाहिए।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

१	८	३	८	त
५	६	३	६	२
७	२	९	२	क
७	४	५	४	ली

(हाजरात का यन्त्र)

रुई में मेढल की राख मिलाकर बत्ती बनावें। उसे तेल के दीपक में रख कर, दीपक का पूजन करके, उसके आगे आठ या दस वर्ष की आयु वाले किसी उच्चवंश एवं देवतागण बालक अथवा बालिका को बैठायें। फिर दीपक के आगे यन्त्र रख कर उसका पूजन करें। फिर यन्त्र उस बालक या बालिका को दें और बालक को हथेली में मेढल की राख तैल में सान कर लगावें। फिर उससे जो कुछ पूछना हो, वह पूछें तो वह सच-सच बतायेगा।

चौकी चढ़ाने का मन्त्र (१)

मन्त्र–(१) "ॐ नमो आं हां कंत जुगराज फटंत, कार्या जिस कारन जुगराज मैं तो कूँ ध्याया हांक मारता जुगराज आया गाजंत आया घोरंत आया मिरस के फूल लेता उडंता आया और की चौकी उठाता आया आपकी चौकी बैठाता आया, और का किवाड़ तोड़ता आया, अपना किवाड़ माँड़ता आया, बाँध बाँध किसकों बाँध, भूत कों बाँध, प्रेत कों बाँध, उडंत कों बाँध, राडंत कों बाँध, जोगिनी कों बाँध, देव कों बाँध, तिरेसठ कला कों बाँध, चौसठ जोगिनी कूँ बाँध, आकास की परी कों बाँध, धरती कों बाँध, डाकिनी कों बाँध, खेंचरी कों बाँध, को नाटक कों बाँध, छल कों बाँध, छिद्र कों बाँध, कीया कों बाँध, अपनी कों बांध, पराई कों बाँध, मैली कों बाँध, कुचैली कों बाँध, स्याह कों बाँध, सफेद कों बाँध, काली कों बाँध, पीली कों बाँध, रे गढ़ गजनी महम्मदा वीर बिसर जाय मद खाय तेरा, तीसों रोजा हलाल उलटि मार, पटकि पछाड़, कबजा चढ़ाय मुख बुलाय, शशि वाय शब्द साँचा, पिंड काचा फुरी मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

साधना एवं प्रयोग विधि—

नीचे दिये गये मन्त्र संख्या २ के अनुसार।

चौकी चढ़ाने का मन्त्र (२)

मन्त्र–"ॐ नमो नाहरसिंह नारी का जाया, याद किया सों जल्दी आया, पाँच पान का बीड़ा मध की धार, चाल

SHAIKH ABDUL GAFAR NAVLOCHHA

चाल नाहरसिंह कहां लगाई एती बार देसूं केसर कूँ मुर्गा की ताज कड़ी, देसूं मद्य की धार, आराधो आयो नहीं कहाँ लगाई एती बार। देखूँ नाहरसिंह वीर तेरा कीया, अमुकी का घट पिण्ड बाँध मेरे हाथ दीया, मारता का हाथ बाँध, बोलता की जीभ बाँध, झांकता का नैन बाँध, हीया बूका बकडो बकडो बाँध, बोटी बोटी बाँध, पकड़ लटी पछाड़ मार, मेरा पग तले ला पछाड़, चढ़तो देसूं केसर कूकडो उतरतां देसूं मद्य की धार, इतना दूँ जब उतर जो खोल जो धोरे-धार, हमारा उतारा उतरजो, और का उतारा उतरे तो नाहरसिंह तू सही चिण्डाल शब्द साँचा, पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विशेष—

उक्त मन्त्रों में जहां 'अमुकी' शब्द आया है, वहां साध्य के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर, मुर्गा की केसर एक चने के बराबर, गूगल तथा शहद मिलाकर गोली बाँधे। पूजन के समय उसे आग पर रक्खें। ५ बताशे, पान का बीड़ा, नारियल, लौंग, इलायची, सुपारी तथा भोग रक्खें। फिर दीपक जलाकर उसके आगे १०८ की संख्या में मन्त्र का जाप करें। इस प्रकार नित्य सात दिनों तक मन्त्र जप करने से सिद्ध हो जाता जाता है।

बाद में हर होली, दिवाली तथा ग्रहण के समय इस मन्त्र का जप करते रहना चाहिये।

मसान जगाने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आठ काठ की लाकड़ी मूज बनी का बान, मूवा मुर्दा बोले नहीं तो माया महावीर की आण, शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

पीने की दारू (शराब) एक सेर, चमेली का फूल, लोबान की धूप, छाड़, छबीला, कपूर कचरी, इत्र तथा सुगन्ध इन वस्तुओं को लेकर श्मशान में जा बैठे। वहाँ श्मशान के मुर्दे के ऊपर दारू की धार छोड़े तथा धूप देकर फूल बखेर दें। फिर उससे कुछ दूर हट कर पूर्वोक्त मन्त्र को पढ़े, तदुपरान्त पुनः दारू की धार दे। श्मशान हाहाकार करता हुआ जग पड़ेगा।

अदृश्य करण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ हुँ फट् कालि कालि मांस शोणितं खादय खादय देवि मा, पश्यतु मानुषेति हुँ फट्।"

साधन-विधि—

दीपावली अथवा होली की रात्रि अथवा ग्रहण पर्व में ३ लाख की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आक, सेमल, कपास, रेशम तथा कमल सूत—इन पांच वस्तुओं की ५ अलग-अलग बत्तियां बनावें, फिर उन्हें ५ मनुष्यों की खोपड़ियों में अंकोल का तेल भर कर अलग-अलग जलायें तथा उन पांचों दीपकों की लौ में काजल पारें।

विशेष—

उक्त क्रिया किसी शिवालय अथवा श्मशानभूमि में करनी चाहिए। काजल पर जाने पर, पांचों काजलों को एकत्र कर, उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपनी आंखों में आंजे तो स्वयं तो सबको देख सकेंगे, परन्तु अन्य लोगों की दृष्टि में अदृश्य बने रहेंगे अर्थात् उक्त काजल को अपनी आंखों में लगाने वाला व्यक्ति अन्य लोगों को दिखाई नहीं देता।

चाल नाहरसिंह कहां लगाई एती बार देसूं केसर कूँ मुर्गा की ताज कड़ी, देसूं मद्य की धार, आराधो आयो नहीं कहाँ लगाई एती बार। देखूँ नाहरसिंह वीर तेरा कोया, अमुकी का घट पिण्ड बाँध मेरे हाथ दीया, मारता का हाथ बाँध, बोलता की जीभ बाँध, झांकता का नैन बाँध, हीया बूका बकडो बकडो बाँध, बोटी बोटी बाँध, पकड़ लटी पछाड़ मार, मेरा पग तले ला पछाड़, चढ़तो देसूँ केसर कूकडो उतरतां देसूँ मद्य की धार, इतना दूँ जब उतर जो खोल जो धोरे-धार, हमारा उतारा उतरजो, और का उतारा उतरे तो नाहरसिंह तू सही चिण्डाल शब्द साँचा, पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

SHAIKH ABDUL GAFAR MALLOOSHA

विशेष—

उक्त मन्त्रों में जहां 'अमुकी' शब्द आया है, वहां साध्य के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर, मुर्गा की केसर एक चने के बराबर, गुगल तथा शहद मिलाकर गोली बाँधे। पूजन के समय उसे आग पर रक्खें। ५ बताशे, पान का बीड़ा, नारियल, लौंग, इलायची, सुपारी तथा भोग रक्खें। फिर दीपक जलाकर उसके आगे १०८ की संख्या में मन्त्र का जाप करें। इस प्रकार नित्य सात दिनों तक मन्त्र जप करने से सिद्ध हो जाता जाता है।

बाद में हर होली, दिवाली तथा ग्रहण के समय इस मन्त्र का जप करते रहना चाहिये।

मसान जगाने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आठ काठ की लाकड़ी मूज बनी का बान, मूवा मुर्दा बोले नहीं तो माया महावीर की आण, शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

पीने की दारू (शराब) एक सेर, चमेली का फूल, लोबान की धूप, छाड़, छबीला, कपूर कचरी, इत्र तथा सुगन्ध इन वस्तुओं को लेकर श्मशान में जा बैठे। वहाँ श्मशान के मुर्दे के ऊपर दारू की धार छोड़े तथा धूप देकर फूल बखेर दें। फिर उससे कुछ दूर हट कर पूर्वोक्त मन्त्र को पढ़े, तदुपरान्त पुनः दारू की धार दे। श्मशान हाहाकार करता हुआ जग पड़ेगा।

अदृश्य करण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं फट् कालि कालि मांस शोणितं खादय खादय देवि मा. पश्यतु मानुषेति ह्रीं फट्।"

साधन-विधि—

दीपावली अथवा होली की रात्रि अथवा ग्रहण पर्व में ३ लाख की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आक, मेमल, कपास, रेशम तथा कमल सूत—इन पांच वस्तुओं की ५ अलग-अलग बत्तियां बनायें, फिर उन्हें ५ मनुष्यों की खोपड़ियों में अंकोल का तैल भर कर अलग-अलग जलायें तथा उन पांचों दीपकों की लौ से काजल पारें।

विशेष—

उक्त क्रिया किसी शिवालय अथवा श्मसानभूमि में करनी चाहिए। काजल पर जाने पर, पांचों काजलों को एकत्र कर, उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपनी आंखों में आंजें तो स्वयं तो सबको देख सकेंगे, परन्तु अन्य लोगों की दृष्टि में अदृश्य बने रहेंगे अर्थात् उक्त काजल को अपनी आंखों में लगाने वाला व्यक्ति अन्य लोगों को दिखाई नहीं देता।

लहरि जगाने के मन्त्र (१)

मन्त्र–"छव मास को परी डंकत्याकी कपार गराने न तेरो मछिहि काग आवत कागा चरइ भीटै पानि आपरई पीठे सवाभार विष निजवडं अपने उडीठे ॐ नमः शिव विआज्ञा आज्ञा गिद्ध उड़इ ऊपर ईश्वर बाहन भय ठांवहिषंव नोना परिहाथ षंडान के परिडंक उठि ठाढि भइ जागु जागु ईश्वर डुहुरे डंकहाडं कंडा डिगौ बंजरहू लागिकाइ देहांक देत आवं नोना योगिनि डंक उठै विहसाइते साते समुद्रे माझे षंडी कबीर ववाठे जीव धरवरो आमन्ति रहहि जगावै नोना योगिनि पारवती जागु परमइ शतहुहुँरे डंक।"

लहरि जगाने के मन्त्र (२)

मन्त्र–"वोह परोस रात सुनु सुनु काल डंक डंक मरै तो मैं मारो सात गद सुरल पांजरराघु एकका काल महेश समन्त्र यहाँ आप कह काटे तौ मनमह चुहुकीके थुकि डारौं आन के काटे तौ हाथ सें ॐ चुहकार अर्धकार कनुविशनार षार छिछी विशनाहि आपु कह काटे भा आनकह काटे तौ पढि डंक पोछि देई।"

पादुका-साधन मन्त्र

मन्त्र–"ॐ नमो भगवते रुद्राय हरितगदाधराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा।"

साधन-विधि–

होली दीवाली की रात्रि अथवा ग्रहण के समय ३ लाख सख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि–

कौऐ की आँख, हृदय और जीभ–इनके साथ मैनसिल, सिन्दूर कौंच, मालती के फूल, रुद्रजटा तथा विदारीकन्द–इन सबको समभाग पीस कर उक्त सिद्ध मन्त्र से ३ बार अभिमन्त्रित कर अपने पाँवों पर लेप करें तो एक सहस्र योजन तक पैदल चलने की सामर्थ्य प्राप्त होती है। □□

२ | आकर्षण तथा मोहन प्रयोग

आकर्षण तथा मोहन प्रयोगों के विषय में

'आकर्षण' का अर्थ है–किसी को अपनी ओर आकर्षित करना और 'मोहन' का अर्थ है–किसी को अपने ऊपर मोहित करना। ये दोनों क्रियाएँ वशीकरण की ही अङ्गभूता हैं। अर्थात् आकर्षण एवं मोहन क्रियाओं के द्वारा साध्य-व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित एवं मोहित करके अपने वश में किया जा सकता है।

प्रस्तुत प्रकरण में विभिन्न प्रकार के आकर्षण तथा मोहन सम्बन्धी प्रयोगों का उल्लेख किया गया है।

स्मरणीय है कि जब किसी भी सामान्य उपाय से कोई व्यक्ति स्त्री या पुरुष, राजा या दुश्मन अपने प्रति आकर्षित न हो सकें और उस स्थिति में स्वयं को मानसिक, शारीरिक अथवा किसी अन्य प्रकार की हानि होने की सम्भावना हो, उस समय इन मन्त्रों का प्रयोग मनोभिलाषा की पूर्ति करता है।

सामान्यतः इन प्रयोगों का उपयोग जीवन रक्षा, स्वार्थ-साधन अथवा विपत्ति से त्राण पाने के लिये किया जाता है। अतः जब अनिवार्य आवश्यकता अनुभव हो, तभी इन प्रयोगों का साधन करना चाहिये। किसी पर-स्त्री के प्रति इन प्रयोगों का साधन तभी करना चाहिये, जब कि उसके बिना स्वयं की प्राण-रक्षा असम्भव अनुभव होती हो। दुराचार अथवा किसी को लज्जित करने के उद्देश्य से इन प्रयोगों का साधन वर्जित है।

आकर्षण मन्त्र (१)

मन्त्र–"ॐ आकर्षय।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

SHAIKH ABDUL GAFFAR MALLICK

साधक को चाहिये कि वह एकान्त में खड़ा होकर १२०० की संख्या में जपने तथा साध्य-स्त्री का स्मरण करने से वह दो या तीन दिन में साधक के प्रति आकर्षित हो जाती है।

आकर्षण मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो आदि रूपाय अमुकं आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां साध्य-...क के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन विधि –

ग्रहण, दीपावली अथवा होली को १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि –

(१) काले धतूरे के पत्ते का रस तथा गोरोचन—इन दोनों को मिलाकर श्वेत कनेर की कलम से भोजपत्र के ऊपर उक्त मन्त्र को लिखकर उसे खैर के अंगारों पर तपाये। इस विधि से साध्य-व्यक्ति यदि १०० योजन दूर चला गया हो तो भी वह आकर्षित होकर समीप चला आता है।

अथवा—

(२) अनामिका अंगुली के रक्त से सफेद कनेर की कलम द्वारा भोज-पत्र के ऊपर उक्त मन्त्र को साध्य-व्यक्ति के नाम सहित लिखे। फिर उसके नाम से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, भोजपत्र को शहद में डाल दे तो गया हुआ व्यक्ति आकर्षित होकर लौट आता है।

अथवा—

(३) मनुष्य की खोपड़ी में गोरोचन तथा केसर द्वारा मन्त्र लिखकर तीनों समय खैर की अग्नि में तपाने से साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है।

आकर्षण मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

मंगलवार से प्रारम्भ कर, इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जपना आरम्भ करें। जप पूर्ण हो जाने पर जप संख्या का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें।

प्रयोग-विधि—

नीचे लिखे मन्त्र संख्या ४ के अनुसार।

आकर्षण मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते रुद्राय एदृष्टि लेखि नाहरः स्वाहा दुहाई कंसासुर की जूट जूट फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन-विधि—

किसी भी मंगलवार से आरम्भ कर इस मन्त्र का २१ दिन या १० दिन में अथवा ११ मंगलवारों में कुल १०००० की संख्या में जप करें। मन्त्र-जप पूरा हो जाने पर, जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें।

परीक्षा-विधि—

उक्त दोनों मन्त्रों (संख्या ३ तथा संख्या ४) की परीक्षा करने की विधि एक जैसी है, जो इस प्रकार है—

एक सरकण्डे को बीच में से चीर कर दो लम्बे टुकड़े करलें तथा दोनों सरकण्डों के सिरों को दो मनुष्य अपने दोनों हाथों में अलग-अलग पकड़ लें। फिर चूहे के बिल की मिट्टी, सरसों और बिनौला—इन तीनों का चूर्ण कर, उसे मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सरकण्डों के टुकड़ों पर मारें। इस क्रिया से यदि वे दोनों टुकड़े एक दूसरे की ओर झुकते हुए आपस में मिल जांय तो समझें कि मन्त्र सिद्ध हो गया है।

प्रयोग-विधि—

जिस व्यक्ति का आकर्षण करना हो, वह यदि परदेश में हो तो उसके पहनने के वस्त्र पर पूर्वोक्त वस्तुओं के चूर्ण को अभिमन्त्रित करके

मारे तो जितने दिन का यात्रा-मार्ग होगा, उतने दिनों के भीतर ही साध्य-व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के पास चला आयेगा।

आकर्षण मन्त्र (५)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रां नमः"

साधन एवं प्रयोग विधि—

इस मन्त्र का प्रतिदिन १०००० की संख्या में जप करते हुए साध्य-व्यक्ति का ध्यान करना चाहिए। नित्य १५ दिनों तक इस प्रकार साधन करते रहने से साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है।

स्त्री आकर्षण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ चामुण्डे तरुततु अमुकाय कर्षय आकर्षय स्वाहा।"

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहां 'अमुकाय' शब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन-विधि—

इस मन्त्र को तीनों सन्ध्या-काल में एक-एक हजार की संख्या में २१ दिनों तक जपना चाहिये।

प्रयोग-विधि—

(१) उत्तर दिशा की ओर मुँह करके लाल चन्दन अथवा लाख द्वारा लाल वस्त्र के ऊपर इस मन्त्र को लिखकर पूजन करें, तदुपरान्त उसे पृथ्वी में गाड़ कर २१ दिनों तक चावल के धोवन के पानी से सींचते रहें। इस प्रयोग से मानवती वैरिणी-स्त्री भी साधक के समीप खिंची चली आती है।

अथवा—

(२) अर्जुन-वृक्ष के बांदा को आश्लेषा नक्षत्र में लाकर, बकरी के मूत्र में पीस कर, तथा उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाय, वह आकर्षित होकर चली आती है।

अथवा—

(३) काले सर्प के फन को काट कर चूर्ण करें, फिर उसे उक्त मन्त्र पढ़ते हुए अग्नि में डालें तथा उसके धुएँ की धूप अपने अंग में लें। जिस स्त्री का नाम लेकर मन्त्र पढ़ा जायेगा, वह आकर्षित होकर समीप चली आयेगी।

सर्व मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र—"पवनी अंजन मेरा नाम, इस नगरी में पैस कै मोहूं सगरा गाम, न्याव करन्ता राजा मोहूं, फरस बैठा पंच मोहूं, पनघट की पनिहार मोहूं, इस नगरी में पैस के छत्तीस पवन मोहूं, जो कोई मार मार करन्त आवै, ताहै नाहरसिंह वीर बायां पग के अंगूठा तरे घेर घेर लावे, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा, सत्त-नाम आदेस गुरु का।"

साधन-विधि—

मात शनि, रविवार को रात्रि के समय नाहरसिंह का विधि पूर्वक पूजन करे। दीप, धूप, चन्दन, पुष्प, रोली, चावल, गूगल, पान, सुपारी तथा लौंग से १०८ मन्त्र जपे। प्रत्येक मन्त्र के साथ पान, सुपारी, शक्कर तथा गूगल को घृत में सान कर अग्नि में होम करता जाय तथा ब्रह्मचर्य से रहे। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—

वन कपास की रुई में ओंगा (अपामार्ग) की जड़ लपेट कर बत्ती बनाये और उससे काजल पारे। उस काजल को ७ बार मन्त्र द्वारा अभि-मन्त्रित कर अपनी आंखों में आंज कर जिस स्थान पर अथवा गाँव में जाये, वहां के सब स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध, युवा वशीभूत हों और सेवा में लगे रहें। पण्डितों के लिए इस अंजन का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है।

सर्व ग्राम मोहिनी मन्त्र

मन्त्र—"जती हनुमन्त कनेरी मेरे घट पिण्ड का कौन है वैरी छत्तीस पवन मोहि मोहि जोहि जोहि दह दह मेरी भक्ति

गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्त नाम आदेस गुरू का।"

SHAIKH ABDUL GAFAR,NIALI,ODISHA

साधन-विधि—

पहले शनिवार से आरम्भ करके ६ दिन तक हनुमान जी का धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करके नित्य १४४ की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

चौराहे से ७ कंकड़ी लाकर, पनघट के कुएं पर जाकर उन कंकड़ियों को मन्त्र द्वारा १४४ बार अभिमन्त्रित करके उसी कुएं में डाल दें। फलतः उस कुएं का पानी जो भी पियेगा, वह साधक के प्रति मोहित एवं वशीभूत बना रहेगा।

सभा मोहिनी सुर्मा

मन्त्र—"कालू मुख धोयो करूँ सलाम मेरी आँखों में सुर्मा बसे जो देखे सो पांयन पड़े दुहाई गौसुल आजमदस्तगीर को छू।"

साधन-विधि—

सवा लाख गेहूं के दानों पर इस मन्त्र को पढ़े। प्रत्येक दाने पर एक-एक मन्त्र पढ़ना चाहिए। फिर उनका आटा पिसवा कर, कड़ाई में घी-शक्कर मिलाकर, हलुआ बनायें तथा गौसुल आजमदस्तगीर की नियाज दिलाकर, उस हलवे को स्वयं ही खाकर तथा सुर्मे को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपनी आँखों में आँज कर राज-दरबार अथवा किसी सभा आदि में पहुंचे तो देखते ही वहां के सब लोग मोहित हो जांय।

मोहिनी मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेस गुरू का मोहनी जगमोहनी मोहनी मेरो नाम। ऊँचे टीले हूं बसूं मोहूं सगरो गाम। ठग मोहूं, ठाकुर मोहूं, बाट का बटोही मोहूं, कुवा की पनिहार

मोहूं, महलों बैठी राणी मोहूं, जोहि-जोहि वां वां पग तरे देहु गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन-विधि—

दीपावली की रात को दीपक के सामने धूप देकर मिठाई रखें तथा १४४ बार मन्त्र को पढ़े तो यह सिद्ध हो अथवा रविवार से आरम्भ करके प्रतिदिन २१ बार, २१ दिनों तक मन्त्र का जप करे तो भी सिद्ध हो।

प्रयोग-विधि—

पहले चौराहे की रेत पर सात बार मन्त्र पढ़कर, उससे अपने मस्तक पर बिन्दी लगाये, फिर एक गुड़ की डेली पर २१ बार मन्त्र पढ़े तथा जिसे मोहित करना हो, उसका नाम लेकर, गुड़ की डेली को कुएं में डाल दें तो जब वह व्यक्ति उस कुएं का पानी पियेगा, तब वह तुरन्त ही साधक के प्रति मोहित तथा आकर्षित हो जायेगा।

स्त्री मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र—"धूली धूलेश्वरी धूली माता परमेश्वरी धूली चंचली जै जैकार दनरन चौंप भरे अमुकी छाती छार छार ते न हटै देतां घर बार मरे तो मसान लोटे जीवे तो पांउ पलोटे वाचा बाँध सूतो हो तो जगाइ लाव माता धूलेश्वरी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ठः ठः ठः [illegible]।"

[illegible]त्र में जहां 'अमुकी' शब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री के नाम [illegible] करना चाहिए।

[illegible]योग विधि—

[illegible]र के दिन जो मरा हो, उसकी चिता से ३ मुट्ठी राख लाकर [illegible] से आरम्भ करके ७ दिन तक नित्य १४४ की संख्या में उक्त [illegible]रें तथा धूप, दीप, नैवेद्य रक्खें। श्मशान की राख पर

दीपक रक्खें तथा उसी राख में से थोड़ी सी लेकर, उसे मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित करके जिस साध्य-स्त्री पर डालेंगे, तुरंत वह मोहित होकर साधक के पास चली आयेगी।

इस प्रयोग की परीक्षा भेंस पर कर लेनी चाहिए। अभिमन्त्रित राख भेंस पर डालने से वह साधक के पीछे-पीछे चल देगी।

स्त्री मोहिनी तन्त्र (२)

मन्त्र—"अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहनी मोहे जग संसार, मुझे करे मार मार, उसे मेरे बाँये कदम तले डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर बज्र की वाण, बहक्क लाइलाइ अल्ला है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

शनिवार के दिन घी का दीपक जला कर उसके आगे फूल, मिठाई रख कर लोबान की धूनी दे तथा १०१ बार मन्त्र पढ़े। दूसरे शनिवार को फिर साध्य-स्त्री के पाँव के नीचे मिट्टी पर ७ बार मन्त्र पढ़कर, उसके ऊपर डाल दे तो वह साधक के प्रति मोहित होकर वशीभूत हो जाय।

सर्व मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र—(५) "ॐ साखाहूली वन में फूली बैठी करैं सिंगार, राजा मोहे प्रजा मोहे सबने करे सियार, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—

शनिवार के दिन वन में जाकर चावल, शक्कर चढ़ाकर तथा धूप देकर शंखाहूली को न्योत आवे। फिर रविवार को प्रातः काल पुनः उसके पास जाकर सर्वप्रथम उसे जल से स्नान करायें, फिर चावल तथा फूल चढ़ा, धूप दे, घी का दीपक जलाकर, गुड़ का भोग उसके आगे रक्खें। तत्पश्चात् १२१ बार मन्त्र पढ़ कर, उसे फूल समेत उखाड़ कर घर ले आवें।

फिर गोरोचन, साँप की केंचुल तथा संखाहूली—इन तीनों को पीस कर २१ दिन तक रात्रि के समय नित्य १२१ की संख्या में मन्त्र का जप करे तो वह सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय अभिमन्त्रित शंखाहूली को अपनी पगड़ी में रखकर राजसभा में जाये तो वहाँ पहुंचते ही राजा तथा सारी सभा मोहित होकर वश में हो जाय।

सर्व मोहिनी मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ साखाहूली वन में फूली ईश्वर देख गवरजा भूली जो याकों सिर पर धरे राजा प्रजा वाके चरणों पड़े मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

मन्त्र—(३) "ॐ नमो आदेस गुरू को ॐ साखाहूली वन में फूली ईश्वर देख गवरजा भूली आव आव राजा प्रजा पाव पड़ाव मंगल मोहन वसकरन मोहन मेरो नाम दे मोहन फलाना के अन्त शव सों मंग महेसुर गाँव चल मोहनी राऊल चल जलती आग बुझावत चली तीन खेत आगे मोह तीन खेत पाछै मोह तीन खेत उत्तर मोह तीन खेत दक्षिण मोह आवते की दृष्टि मोह दर मोह दीवान मोह गाँव का मुकद्दम मोह काजी का कुरान मोह हे तू नरसिंह वीर हमारा काज न करे तो अपनी माँ का दूध पीया हराम करे ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

शनिवार के दिन वन में जाकर शंखाहूली को न्योत आवे, फिर

रविवार को प्रातः काल वहाँ पुनः जाकर उसका मन्त्र संख्या १ में वर्णित विधि के अनुसार पूजन करे तथा २१ बार मन्त्र पढ़कर उसे उखाड़ कर घर ले आये। साधना के समय दीपक जलाकर नृसिंह का आवाहन करे तथा २ पेड़ा एवं पान के बीड़े का भोग रख कर, चावल, घृत शक्कर पर १२१ बार मन्त्र पढ़कर उन्हें अग्नि में होम करे तथा कपूर से आरती करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

रविवार के दिन व्रत रक्खे। फिर शंखाहूली का पीस कर उसकी गोली बना ले तथा गोली को अपनी पगड़ी में रखकर राजदरबार में जाय तो राजा, प्रजा और सारी सभा अत्यन्त प्रसन्न हो। सम्पूर्ण सभा उसे पिता के समान आदर दे।

यदि उक्त अभिमन्त्रित शंखाहूली की गोली को मिठाई में रख कर, किसी स्त्री को खिला दे तो वह मोहित तथा वशीभूत हो।

यदि अभिमन्त्रित शंखाहूली की गोली को पानी में घिस कर, किसी स्त्री पुरुष के माथे पर उसकी बिन्दी लगा दें तो वह भी मोहित हो जाता है तथा मनोभिलाषा की पूर्ति करता है।

फूल मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र–"ॐ नमो आदेस गुरू को एक फूल फूल भर दोना, चौंसठ जोगनी ने मिल किया टौना, फूल फूल वह फूल न जानी, हनुवन्त वीर घेर घेर दे आनी, जो सूंघे इस फूल की बास, उसका जी प्राण रहे हमारे पास, सूती हो तो जगाइ लाव, बैठी हो तो उठाइ लाव, औरे देखे जरे, बरे, मोहे देख मेरे पायन परे, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा वाचावाची से टरे कुम्भी नरक में परे।"

साधन-विधि–

शनिवार से आरम्भ करके २१ दिन तक विधि पूर्वक दीपक का पूजन कर नित्य १४४ की संख्या में मन्त्र का जप करें तो सिद्ध हो।

साधन-विधि–

सोमवार के दिन इस मन्त्र को किसी फूल पर २१ बार फूंक कर, उसे जिसे भी सुंघावे, वह मन-प्राण से मोहित तथा वशीभूत हो।

फूल मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र–"कामरूदेस कामाख्या देवी, जहाँ बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने दोई बारी, फूल उतारे लोना चमारी, एक फूल हँसे, दूजा फूल बिगसे, तीजे फूल में छोटा बड़ा नाहरसिंह बसे, जो सूंघे इस फूल की बास, सो आवे हमारे पास, और के पास जाय, हियो काट मर जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि–

रविवार को स्नान करके लौंग, सुपारी, पान, फूल, मिठाई ले, दीपक जला, धूप-गन्ध करके एक पुष्प को घृत में सान कर, उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अग्नि में होम दे। इसी प्रकार १०६ फूलों की आहुतियाँ दे। ब्रह्मचर्य से रहे। २१ दिन तक इसी प्रक्रिया को दुहराता रहे तो मन्त्र सिद्ध हो। बाईसवें दिन ब्राह्मणों को भोजन कराके दक्षिणा दे, तदुपरान्त सुगंधित पुष्प को ७ बार इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसे सुंघाया जायेगा। वह मोहित होकर पास चला आयेगा।

लाल कनेर फूल का मोहिनी मन्त्र

मन्त्र–"ॐ मूठो माता गूठी रानी गूठी लगावे आग, अमुका के चटक लगावे, बेधड़क कलह मचावे, मुख न बोले, सुख न सोवे, कहत मंत्र उठाय मार्‌यो उरझ, ज्यों काचा सूत की आटी उरझ, अब देखूँ नाहरसिंह वीर तेरे मन्त्र की शक्ति, शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुका' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करें।

SHAIKH ABDUL GAFAR NIALI,ODISHA

साधन-विधि—

शनिवार के दिन लाल कनेर की डाली के लाल रंग का डोरा बांध कर, उसे न्यौत आवे। रविवार को प्रातः काल उसी डाली को तोड़ लावे तथा रात्रि के समय विधि पूर्वक दीपक के आगे रख कर १२१ बार मन्त्र का जप करें। २१ दिन तक नित्य इतनी ही संख्या में जप करते रहने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

सिद्ध मन्त्र द्वारा लाल कनेर के फूल को २१ बार अभिमन्त्रित करके जिसे दिया जायेगा, वह अवश्य ही मोहित होकर, साधक के पास चला आयेगा।

चम्पा फूल का मोहिनी मन्त्र

मन्त्र—"कामरू देस कामाख्या देवी, जहाँ बसे इसमाइल जोगी इसमाइल जोगी ने लगाई बारी, फूल चुने लोना चमारी, फूल राता फूल माता, फूल हांसा फूल बिगसा, तहाँ बसे चम्पा का पेड़, चम्पा के पेड़ में रहे काल भैरू, भूत प्रेत मरे मसान पै आवें, किसके काम ये आवें, टोना टामन के काम, भेजूँ काल भैरूं को लावे मुशकें बाँध, बैठी हो तो वेगी लाव, सोती हो तो उठा लाव, वह सोवे राजा के महलों प्रजा के महलों मुझ से होनी राणी फूल दूँ उसी के हाथ, वह उठ लागे मेरे साथ, हमको छाँड़ि पर घर जाय, छाती फार वहीं मर जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा, वाचा चूके उमा हसूके, लोना चमारी बहरे जोगी के कूंड में पड़े वाचा छोड़ कुवाचा जाय, तो नरक में पड़े जाय।"

साधन-विधि—

शनिवार के दिन चम्पा के पेड़ को न्यौत आवे और उसकी डाली में लाल कलावे का डोरा बांध आवे। रविवार को प्रातः काल उसी डाली को ७ बार मन्त्र पढ़कर तथा गूगल की धूनी एवं धूप देकर तोड़कर घर ले आवे। रात्रि के समय दीपक जला कर उसके सामने फूल की डाली को रक्खे तथा भैरों का पूजन कर २१ बार में २१ मन्त्र जपे। इक्कीस दिन तक नित्य इतनी ही संख्या में जप करते रहने पर मन्त्र सिद्ध हो। भोग में शराब तथा उड़द के बड़े, तैल, गुड़ तथा दही रक्खें।

प्रयोग विधि—

चम्पा के फूल को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके, जिसे सुंघाया जायेगा, भैरों उसे लाकर साधक के सम्मुख हाजिर कर देंगे।

सुपारी मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र—"खरी सुपारी टामनगारी, राजा प्रजा खरी पियारी, मन्त्र पढ़ लगाऊँ तो रही या कलेजा लावे तोड़, जीवत चाटे पगथली मूवे सेवे मसान, या शब्द की मारी न लावे तो जती हनुमन्त की आज्ञा न माने, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

७ सुपारी लेकर उन पर १०८ बार मन्त्र पढ़ कर २१ दिन में सिद्ध करले। अथवा सूर्य ग्रहण के दिन केवल १०८ बार मन्त्र पढ़ कर सुपारी को सिद्ध करले। यह सुपारी जिसे खिलाई जायेगी, वही मोहित होकर वश में हो जायेगा।

सुपारी मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ देव नमो हरय ठं ठं स्वाहा।"

साधन विधि—

पूर्व मन्त्र के अनुसार।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित सुपारी जिसे खिलावे वह मोहित हो।

SHAIKH ABDUL GAFAR MALOBHA

सुपारी मोहिनी मन्त्र (३)

मन्त्र—"पीर मे नाथ पीर तू नाथ जिसे खिलाऊँ तिसे बस करना, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन-विधि—

सूर्य-ग्रहण के समय नाभि पर्यन्त नदी के जल में खड़े होकर ७ सुपारियों को ७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके निगल जाँय। जब शौच के समय वे पेट के बाहर निकले, तब उन्हें पहले जल से, फिर गाय के दूध से धोकर ७ बार मन्त्र पढ़ कर अभिमन्त्रित करें तथा गूगल की धूनी देकर रखलें।

प्रयोग-विधि—

उक्त सुपारी को मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके जिसे खिला दिया जायेगा, वह स्त्री-पुरुष कोई भी क्यों न हो, मोहित होकर, वशीभूत हो जायेगा।

लौंग मोहिनी मन्त्र

मन्त्र—"ॐ सत्त नाम आदेस गुरु को लौंगा लौंगा मेरा भाई इन ही लौंगा ने शक्ति चलाई, पहली लौंग राती माती, दूजी लौंग जीवन माती, तीजी लौंग अंग मरोड़े, चौथी लौंग दोऊ कर जोड़, चारों लौंग जो मेरी खाय, फलाना के पास सों फलाना कने आ जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

शनिवार से आरम्भ करके, रात्रि के समय दीपक का पूजन कर २१ बार मन्त्र को पढ़। २२ दिन तक नित्य इसी संख्या में जप करने से मन्त्र

सिद्ध हो जाता है। फिर ४ लौंग को ७ बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित कर, जिसे खिला देंगे, वह मोहित होकर हाजिर होगा।

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहाँ "फलाना के पास सों फलाना कने" शब्द आया है, वहाँ स्त्री जिस पुरुष के पास रहती हो पहले उसके नाम का और बाद में अपने नाम का उच्चारण करना चाहिए।

तैल मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ मोहना राणी मोहना राणी चली सैर को, सिर पर धरे तेल की दोहनी, जल मोहूं थल मोहूं मोहूं सब संसार, मोहना राणी पलंग चढ़ बैठी मोह रहा दरबार, मेरी भक्ति गुरू की, भक्ति दुहाई गौरा पारवती की, दुहाई बजरंगबली की।"

साधन-विधि—

इत्र, मिठाई, दीपक तथा लोबान लेकर, दीपावली की रात्रि में २२ माला जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

उक्त सिद्ध मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित-तैल की बिन्दी अपने मस्तक पर लगा कर राज दरबार में जाने से वहाँ उपस्थित सब लोग मोहित हो जाते हैं। यदि ७ बार अभिमन्त्रित तैल को साध्य-स्त्री के अंग से लगा दिया जाय तो वह मोहित होकर, साधक के वश में हो जाती है।

तैल मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो मोहना राणी पलंग चढ़ बैठी मोह रहा दरबार, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति दुहाई लोना चमारी की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई बजरंगबली की।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

मिठाई मोहिनी मन्त्र

SHAIKH ABDUL GAFAR,NIALI,ODISHA

मन्त्र–"जल मोहूं थल मोहूं, जंगल की हिरणी मोहूं, बाट चलत बटोही मोहूं, कचेहरी बैठा राजा मोहूं, पीढ़ी बैठी रानी मोहूं, मोहनी मेंरा नाम, मोहूं जग संसार, तरा तरीला तोतला तीनों बसें कपाल, दस्तक दे दी मात के दुश्मन करूं पामाल, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—

शनिवार से आरम्भ करके ११ दिन तक नित्य १४४ बार मन्त्र का जप करे तथा मन्त्र पढ़-पढ़ कर अग्नि में गूगल का होम करे। दीपक पर बतासे तथा फल चढ़ाये तो मन्त्र सिद्ध हो।

प्रयोग-विधि—

मिठाई को २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिसे खिलाये, वह मोहित होकर वशीभूत हो।

गुड़ मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र–"ॐ नमो आदेश गुरु को गूगल की धूप को धूवां धार, देखूं पलमा तेरो शक्ति, तेरस रात्रि को टूटा तारा, ऐसा टूटे भैरों बाबा का मन गाये, गुड़ मन्त्र पढ़ उसको दे, घर में चक्क न बाहर चक्क, फिर फिर देखे मेरा मुख, जीव न सेवे जीव को मूवें सेवे मसाण, हम से आकुल व्याकुल हो तो जती हनुमन्त की आन, हमें छांड़ और के पास जाय, पेडू फाट तुरत मर जाय, सत्यनाम आदेस गुरु को।"

साधन-विधि—

शनिवार से आरम्भ करके ७ शनिवार में प्रतिदिन १२५ बार मन्त्र का जप करे तथा भोग में शराब, लपसी, कलेजी धरे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

उक्त सिद्ध मन्त्र से गुड़ को ७ बार अभिमन्त्रित करके जिसे खिलादे, वह मोहित होकर सेवा में हाजिर हो जाता है।

गुड़ मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र–"ॐ नमो आदेस गुरू को या गुड़ राती, या गुड़ माती या गुड़ आवै पायां पड़ती, जो मांगू श्योजन पाऊं, सूती तिरिया जगायर ल्याऊं, चलिरे आगिया बेताल, फलानी के पेट चलावे झाल, रात्रि को चैन न दिन कों सुख, फिर फिर जोवे हमारा मुख, जै मकड़ी मकड़ी सैट ले, सींस फाट दो टूक हो पड़ै, काला कलुआ काली रात, कलुआ चाला आधी रात, चाल चाल रे काला कलुआ, सोधन चाटे, हमारा तलुआ, आक के पान बसे कवारी, धन जोबन सों खरी पियारी, रेतरगत गुड़ करे गिरास, अमुकी आवे फलाना पास, हनुवत जती की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

२ टंक (तोला) गुड़ लेकर उसमें अपनी अनामिका अंगुली का रक्त मिला दे। फिर उस पर २१ बार मन्त्र पढ़ कर, साध्य-स्त्री को खिला दे तो वह मोहित होकर वशीभूत हो जायेगी। यदि स्त्री को खिला न सके तो गुड़ को कुएँ में डाल दे तो उसका पानी पीने पर वह वश में होगी।

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ "अमुकी आवे फलाना पास" वाक्य है, वहाँ साध्य-स्त्री तथा पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

मोहिनी पुतली वशीकरण मन्त्र

SHAIKH ABDUL GAFAR NIALI ODISHA

मन्त्र—"बाँधूँ इन्दु बांधूँ तारा, बाँधूँ बिन्दु लोही की धारा, उठे इन्दन घाले घाव, सूक साक पूणी हों जाइ, वण ऊपर लोंका कड़ो हीया लपर लो भूत, मैं तो बन्धन बंधियों सासू ससुर जाया पूत, मन बाँधूँ तन बाँधूं बाँधूं विद्या देसूँ साथ चार कूंट जों फिर आवे तो फलानी फलाना के साथ गुरु गुरे स्वाहा।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ "फलानी फलाना के साथ" लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री तथा साध्य-पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

शनिवार से आरम्भ कर, २१ दिन तक रात्रि के समय स्वच्छ स्थान में पवित्र होकर एक पुतली बनाकर उसका विधि पूर्वक पूजन करे तथा गूगल की धूनी देकर २१ बार मन्त्र का जप करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जप की अवधि में प्रत्येक शनिवार को सवा पाव लपसी का भोग रखना चाहिए तथा अन्य दिनों में ५ बताशों का भोग लगाना चाहिए।

प्रयोग-विधि—

शनिवार के दिन एक पुतली बनाकर उसके पेट में स्त्री का नाम लिखे। फिर पुतली के ऊपर १०८ बार मन्त्र पढ़ कर फूंके। पुतली के चारों ओर जिन वर्णों को लिखा जायेगा, उनका स्वरूप आगे दिये गये चित्र में प्रदर्शित है। इसी के अनुसार पुतली का चित्र बनाना चाहिए। पुतली के तैयार हो जाने पर, उसे स्त्री को दिखाकर अपनी छाती से लगा ले तो साध्य-स्त्री बेचैन तथा मोहित होकर साधक के कदमों में आकर हाजिर हो जायेगी।

(मोहिनी पुतली वशीकरण)

SHAIKH ABDUL GAFAR,NIALI,ODISHA

३ वशीकरण-प्रयोग

वशीकरण के विषय में

'वशीकरण' का अर्थ है—किसी व्यक्ति अथवा प्राणी को अपने वश में करना। स्व-वशीभूत किये गये प्राणी से इच्छित कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है। इस प्रकरण में विविध प्रकार के वशीकरण मन्त्र प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग अधिकतर किसी स्त्री अथवा पुरुष को वश में करने के लिए किया जाता है। इनके अतिरिक्त कभी-कभी वेश्या, शत्रु, राजा, राज-कर्मचारी आदि को वशीभूत करने की आवश्यकता भी पड़ती है।

न्यायालय में चल रहे किसी विवाद के समय जब यह अनुभव हो कि राजा अथवा न्यायाधीश विरोध पक्ष से सहमत होकर दण्ड देने पर उतारू है—उस समय राजा अथवा राज-कर्मचारी विषयक वशीकरण-साधनों का प्रयोग स्व-पक्ष के लिए हितकर सिद्ध होता है। इसी प्रकार जब यह अनुभव हो कि कोई शत्रु, स्त्री, पुरुष अथवा वेश्या अपने से प्रतिकूल होकर हानि पहुंचा सकते हैं। तो भी वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग करना उचित रहता है।

पति के विमुख होने पर पति-वशीकरण एवं स्त्री के विमुख होने पर स्त्री-वशीकरण सम्बन्धी प्रयोगों का साधन करना चाहिए। किसी कुमारी कन्या अथवा पर-स्त्री को वशीभूत करने के लिए वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग तब तक वर्जित माना गया है, जब तक कि वैसा करना अपने व्यापक-हित के लिए नितान्त ही आवश्यक अनुभव न हो।

वशीकरण प्रयोग (१)

इस प्रयोग की सिद्धि आगे लिखे अनुसार की जाती है। सर्व प्रथम अग्रलिखित विनियोग वाक्य का उच्चारण करें—

विनियोग—"ॐ अस्य श्री वामदेवमन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री कामदेव देवता अमुकवश्यार्थे जपे विनियोगः।"

टिप्पणी—

इस विनियोग-वाक्य में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जैसे—रामलाल नामक किसी पुरुष को वश में करना है तो 'रामलाल वश्यार्थे अथवा मालतीदेवी नामक किसी स्त्री को वश में करना है तो 'मालती देवी वश्यार्थे' आदि उच्चारण करना चाहिए।

इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'अङ्गन्यास' करें।

"कां हृदयाय नमः।
कीं शिरसे स्वाहा।
कूं शिखायै वौषट्
कामदेवो देवता अस्त्राय फट्।"

फिर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए कामदेव देवता का ध्यान करें।

जपारुणं रक्तविभूषणाढ्यं,
मीनध्वजं चारुकृताङ्गरागम्।
कराम्बुजैरंकुशमिक्षु चापं
पुष्पास्त्रपाशौ दधतं नमामिः।"

ध्यानोपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का ५००० की संख्या में जप करें—

"ॐ कामदेवाय सर्वजन प्रियाय सर्व जन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

प्रयोग-विधि—

मन्त्र-जप पूर्ण हो जाने पर कनेर के लाल पुष्पों पर चमेली का इत्र लगाकर दशांश अर्थात् ५०० की संख्या में होम करें।

फिर बटुक के निमित्त किसी कुमार (बालक) को भोजन करायें तथा उक्त मन्त्र द्वारा चन्दन को १०८ बार अभिमन्त्रित करके, उसका तिलक कुमार के मस्तक (ललाट) पर लगायें। तत्पश्चात् जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसका ध्यान करते हुए बटुक (बालक) से संभाषण (वार्तालाप) करें तो वह अवश्य वशीभूत हो जाएगा।

SHABAR ABDUL QUDDUS

वशीकरण प्रयोग (२)

मन्त्र—"ॐ मोंड़ो।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र का बिना भोजन किये ही ५०० बार जप करें। जिस व्यक्ति को वशीभूत करने की इच्छा से इस मन्त्र का जप किया जाता है, वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (३)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं मोहिनी स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जल, पुष्प, वस्त्र अथवा किसी उत्तम फल को इस सिद्ध मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के हाथ में दे दिया जाता है, वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (४)

मन्त्र—"चामुण्डे जृंभ मोहये वशमानय स्वाहा।"

यह वशीकरण हेतु चामुण्डा का मन्त्र है। मन्त्र का जप करने से पूर्व निम्नानुसार चामुण्डा देवी का ध्यान करना चाहिए—

ध्यान मन्त्र—"दंष्ट्राकोटिविशंकटा सुवदना
सान्द्रान्धकारे स्थिता।
खट्वांगासित मूढदेच्छित करा
वामेशया संशिरः॥

श्यामा पिङ्गल मूर्धजा भयकरा
शार्दूल चर्माम्बरा।
चामुण्डाशववाहिनी जप विधौ
ध्येयो सदा साधकैः॥"

साधन-विधि—

उक्त प्रकार से ध्यान करने के उपरान्त पूर्वोक्त मन्त्र का १००००० की संख्या में जप करें, फिर जप का दशांश अर्थात् १०००० की संख्या में पलाश के पुष्पों से होम करें। होम करते समय एक-एक पुष्प को सात-सात बार अभिमन्त्रित करते हुए होम करना चाहिये।

प्रयोग विधि—

होम करते समय जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसका ध्यान करने से सिद्धि प्राप्त होती है अर्थात् वह व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (५)

वशीकरण हेतु कामेश्वर मन्त्र की प्रयोग-विधि इस प्रकार है—

मन्त्र—"कामदेवामुकीमानय मम पदं वशं च।"

यह कामेश्वर मन्त्र है। इसका जप करने से पूर्व सर्व प्रथम निम्नानुसार ध्यान करना चाहिए—

ध्यान—"आकर्णाञ्चितकार्मुको हर पदे
धुन्वन् हरं सायकै—
र्भानोमेण्डलमध्यगो दयितया
सानन्दभालिङ्गितः।
प्रत्यालीढपदो जपानिभतनु-
र्भग्नः परेतासनः,
कन्दर्पो जयकर्मणि प्रतिदिनं
ध्येयो नरैरीट्टशः॥"

साधन-विधि—

ध्यानोपरान्त पूर्वोक्त मन्त्र का पहले शुद्ध भाग ले ५००० की संख्या में जप करें, तदुपरान्त ५०० की संख्या में पलाश के पुष्प तथा कदम्बक के फलों से दशांश होम करें। पान, फूल अथवा अन्य सुगन्धित वस्तुओं का भी होम करना चाहिए।

प्रयोग-विधि—

उक्त प्रयोग को सात बार करने से साध्य-स्त्री वशीभूत होती है।

टिप्पणी—

मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। जैसे—साध्य-स्त्री का नाम 'मालती' हो तो

"कामदेवा मालतो मानय मम पद वशं च"

इस प्रकार मन्त्रोच्चारण करना चाहिए।

विशेष—

उक्त प्रयोग में शिव मन्दिर, चौराहे के मध्य भाग, नदी के तट अथवा श्मसान भूमि—इनमें से किसी एक स्थान में बैठकर मन्त्र-जप करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं। यह प्रयोग वशीकरण के अतिरिक्त आकर्षण एवं मोहन का कार्य भी करता है। कहा गया है कि यदि इस मन्त्र को भली प्रकार सिद्ध कर लिया जाय तो वाक्-सिद्धि तक हो जाती है।

भूत-वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ श्रीं वं वं भूं भूतेश्वरी मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि—

मूल नक्षत्र से आरम्भ करके शौच के बचे हुए जल को बबूल के पेड़ की जड़ में डालकर, उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करें। इस क्रिया को ४० दिनों तक निरन्तर करते रहें तो इकतालीसवें दिन भूत सामने प्रकट होकर पानी की माँग करेगा। उस समय उससे तीन वचन लेकर यह कहें कि याद किये जाने पर वह तुरन्त काम करने के लिए हाजिर हो जाया करेगा। जब वह वचन दे दे, तब उसे पानी दे दें। तत्पश्चात् जब तक उसे पूर्वोक्त विधि से पानी मिलता रहेगा, तब तक वह साधक की सेवा में बना रहेगा। भूत के

सामने आने पर उससे डरना नहीं चाहिए तथा निर्भय होकर बातचीत करनी चाहिए। परन्तु जिस दिन पानी देना बन्द कर दिया जायेगा, उसी दिन से भूत आना तथा सेवा करना बन्द कर देगा।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रूः।१२। सौं ह ह सः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

उक्त मन्त्र ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र के प्रारम्भिक भाग—"ॐ क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रूः को बारह बार दुहराना चाहिए, तदुपरान्त शेष भाग का केवल एक बार उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग-विधि—

(१) आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित भोजन राजा को खिला देने से अथवा उसे स्वयं खाकर राजा के पास जाने से राजा वशीभूत होता है।

(२) उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित भोजन जिस साध्य-मनुष्य का नाम लेकर खाया जाय, वह वशीभूत हो जाता है।

(३) उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित पुष्पों की माला को अपने सिर पर धारण करके साध्य-स्त्री के पास पहुंचने से वह वशीभूत होती है।

(४) उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जायफल को खाने से कामोद्दीपन होता है। उस स्थिति में साध्य-स्त्री के साथ सहवास करने से वह सदैव के लिए वशीभूत हो जाती है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ चिटि चिटि चामुण्डा काली काली महाकाली अमुकं मे वशमानय स्वाहा।"

SHAIKH ABDUL GAFAR WALI DELHI

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ जिस स्त्री-पुरुष को वश में करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

उक्त मन्त्र किसी ग्रहण पर्व में १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

आवश्यकता के समय इस मन्त्र को ताड़पत्र के ऊपर, साध्य-व्यक्ति के नाम सहित लिखें। फिर कनेर का दूध तथा जल बराबर मात्रा में लेकर उसमें उक्त ताड़पत्र को डाल दें तथा रात्रि के समय उस ताड़पत्र एवं कनेर के दूध तथा जल वाले पात्र को अग्नि पर चढ़ावें तथा स्वयं उसके सामने बैठकर १००० बार उक्त मन्त्र का जप करें। इस क्रिया को निरन्तर सात दिन तक करते रहने से साध्य-व्यक्ति वशीभूत हो जाता है। यह प्रयोग स्त्री-पुरुष दोनों को वशीभूत करने वाला है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ नमः कामाय सर्वजन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजनस्य हृदयं मम वशं कुरु-कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि एवं प्रयोग-विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जिस व्यक्ति के ऊपर प्रयोग करना हो, उसके सम्मुख पहुंच कर १०८ बार मन्त्र को मन-ही-मन पढ़ कर साध्य-व्यक्ति के शरीर पर फूंक मारने से वह वशीभूत हो जाता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुरवाहनाय। 'अमुकं' मम वश्य कुरु-कुरु स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति (जिस व्यक्ति को वश में करना हो) के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

जैसे—'मालती' नामक किसी स्त्री को वश में करना हो तो

"मालती मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा"

अथवा 'रामप्रसाद' नामक किसी पुरुष को वश में करना हो तो—

"रामप्रसादं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा"

इस प्रकार उच्चारण करना चाहिए।

साधन विधि—

उक्त मन्त्र को 'सिद्धि' योग में १०८ बार जप कर सिद्ध करलें। 'सिद्धि' योग किस दिन और तिथि को पड़ेगी, इसका ज्ञान पञ्चाङ्ग (पत्रा) द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

प्रयोग विधि—

सिद्धि योग में मन्त्र को सिद्ध कर लेने के बाद उक्त मन्त्र से एक सुपारी को अभिमन्त्रित करें अर्थात् १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़कर सुपारी पर फूंक मारें, तत्पश्चात् वह सुपारी साध्य-व्यक्ति को खाने के लिए दें। उस अभिमन्त्रित सुपारी को खा लेने पर साध्य-व्यक्ति (चाहे स्त्री हो अथवा पुरुष) साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (५)

मन्त्र—"ॐ चामुण्डे जय जय वश्यकरि जय जय सर्व सत्वानमः स्वाहा।"

साधन-विधि—

इस मन्त्र को 'सिद्धि योग' में अथवा ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें।

प्रयोग विधि—

मन्त्र सिद्ध कर लेने के बाद किसी रविवार अथवा मंगलवार के दिन इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमंत्रित किया हुआ कोई पुष्प साध्य-व्यक्ति को सूंघने के लिए दें तो वह व्यक्ति पुष्प को सूंघते ही साधक के वशीभूत हो जाएगा।

सर्व वशीकरण मन्त्र (६)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवती सूचि चण्डालिनि नमः स्वाहाः।

साधन एवं प्रयोग विधि—

इस मन्त्र का पाठ करते हुए मोम द्वारा अभिलषित-व्यक्ति की एक मूर्ति का निर्माण करें। उस मूर्ति को कृताजलि, युक्त पाद तथा अंग-प्रत्यंग सहित बनाकर, उसमें अभिलषित-व्यक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करें। प्राण प्रतिष्ठा की विधि किसी विद्वान् पण्डित से सीख लें अथवा उसी के द्वारा करायें। फिर उस पुतली के ऊपर उक्त मन्त्र का १०००० की संख्या में जप करके पुतली को अंगारे की अग्नि में तपायें तो अभिलषित-व्यक्ति वशीभूत होता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (७)

मन्त्र—"पिंगलायै नमः"

साधन विधि—

सिद्धि योग अथवा ग्रहण पर्व में अथवा किसी अन्य शुभ-मुहूर्त में २००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

दोनों पंखों सहित भ्रमर (भौंरा या मधुप) तथा शुक (तोता) के मांस को एकत्र कर, उसमें अपनी अनामिका अंगुली का रक्त तथा कान का मैल मिलादें। इस मिश्रण को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर, जिस व्यक्ति को खिला दिया जाता है, वह वशीभूत हो जाता है।

टिप्पणी—

स्मरणीय है कि यह मिश्रण विषैला होगा, अतः इसका प्रयोग अत्यन्त स्वल्प मात्रा में ही करना उचित है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (८)

मन्त्र—"ॐ नमः कामाय सर्वजन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। प्रयोग करने से पूर्व इस मन्त्र को १०८ बार जप कर अभिलषित व्यक्ति के सम्मुख पहुंचने से वह वशीभूत होता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (९)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते ईशानाय सोमभद्राय वशमानय स्वाहा।"

साधन-विधि—

उक्त मन्त्र ग्रहण काल में १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

(१) देवदाली का रस निकाल कर, उसे सुखाकर चूर्ण करें, फिर किसी कन्या अथवा युवती स्त्री द्वारा उस चूर्ण की छोटी-छोटी गोलियां तैयार करायें। इनमें से एक गोली उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री, पुरुष अथवा राजा को खिला दी जाती है, वह वशीभूत हो जाता है।

(२) उक्त वटी का स्वयं सेवन करने से चोर, शत्रु तथा हर प्रकार की व्याधियों का भय नष्ट होता है एवं शुभत्व की प्राप्ति होती है।

(३) पुष्यार्क में सफेद गुन्धा (घुंघची) की जड़ लाकर उसे पांच मलों से युक्त कर तांबूल में रख लें, फिर उसे मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर साध्य-मनुष्य को खिला दें तो वह स्त्री-पुरुष कोई भी क्यों न हो, वशीभूत हो जायेगा।

(४) उक्त मन्त्र द्वारा अपने वीर्य को अभिमन्त्रित कर, उसे पान में रख कर जिसे खिला दिया जायेगा, वह अवश्य वशीभूत हो जायेगा।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१०)

मन्त्र—"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके सर्वान् मम वश्यं कुरु कुरु सर्वान् कामान् मे साधय साधय ।"

SHAIKH ABDUL GAFAR,NALI,ODISHA

साधन विधि—

किसी ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

(१) प्रातः काल इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण करते हुए, जिस व्यक्ति का नाम लेकर अपने मुख को पानी से धोया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगा।

(२) इस मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित जल जिस व्यक्ति को पिला दिया जायगा, वह वश में हो जायेगा।

सर्व वशीकरण मन्त्र (११)

मन्त्र—"ॐ क्लं क्लौं ह्रीं नमः ।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को ग्रहण के समय १००० की संख्या में जप किया जाय तो पाताल वासी वशीभूत होते हैं। यदि १०००० की संख्या में जप किया जाय तो देवता वश में होते हैं। यदि १००००० की संख्या में जप किया जाय तो तीनों लोकों के प्राणी वशीभूत होते हैं।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१२)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवति पुर पुर देशनि पुराधिपतये सर्वजगद्-भयंकरि छीं भैं ऊं रां रां रं रीं क्लीं वालौसः वंचकाम-वाण सर्व श्री समस्त नरनारीगणं मम वश्यं नय नय स्वाहा ।"

साधन-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

आवश्यकता के समय इस मन्त्र को १५ बार पढ़कर अपने मुँह के ऊपर हाथ फेरें, फिर जिधर को देखेंगे, उस ओर के सब लोग वशीभूत हो जावेंगे।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१३)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवति चामुण्डे महाहृदय कंपिनि स्वाहाः ।"

साधन-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

इस मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमंत्रित पान का बीड़ा जिस स्त्री-पुरुष को खिला दिया जाय, वह वशीभूत हो जाता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१४)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुख रंजनि सर्वेषां महामाये मातंगे कुमारिके नन्द नन्द जिह्वे सर्वलोक वश्यंकरि स्वाहा ।"

साधन विधि—

'सिद्धि' योग अथवा ग्रहण-पर्व में १००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

(१) चन्द्र ग्रहण के समय सफेद विष्णुक्रान्ता की जड़ को उक्त सिद्ध मन्त्र से ७ बार अभिमंत्रित करें। फिर उसके अंजन को अपने नेत्रों में लगाकर जिस साध्य-व्यक्ति के पास पहुँचेंगे, वह (स्त्री हो अथवा पुरुष) वशीभूत हो जाएगा।

(२) ताम्बूल (बिना लगा सादा पान) में गोरोचन मिला कर उसे पूर्वोक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर पीस लें। फिर उस मिश्रण का

अपने माथे पर तिलक लगाकर साध्य-व्यक्ति के पास पहुँचें तो वह वशीभूत हो जाता है।

(३) उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित गोरोचन को लगे हुए पान अथवा भोजन में मिलाकर, उसे साध्य-व्यक्ति को भक्षण करा दें तो वह साधक के वशीभूत हो जाएगा।

SHAHI ASHIL GUPTA, GALI GONDA

(४) मैनसिल, गोरोचन और ताम्बूल (सादा पान) इन तीनों को पीसकर उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करें, फिर उक्त मिश्रण का अपने मस्तक पर तिलक लगाकर, साध्य-व्यक्ति के पास पहुँचकर उससे बातचीत करें तो वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

(५) शुक्लपक्ष की त्रयोदशी को सफेद घु घची की बेल को जड़ सहित उखाड़ लावें, फिर उसे पूर्वोक्त मन्त्र से ७ बार अभिमंत्रित कर; पीस लें तथा पान में रखकर साध्य-व्यक्ति को खिलादें तो वह वशीभूत हो जाता है—

टिप्पणी

संख्या १ से लेकर ५ तक जिन वशीकरण क्रियाओं का उल्लेख किया गया है, उन्हें बिना अभिमन्त्रित किए हुए भी प्रयोग में लाया जाता है परन्तु पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर, प्रयोग में लाने से प्रभाव शीघ्र प्रकट होता है।

पति वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ काम मालिनी ठः ठः स्वाहा।"

साधन विधि—

यह मन्त्र १०८ बार जपने से ही सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

(१) गोरोचन को मछली के पित्ते में मिलाकर, उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर, उसका मस्तक पर तिलक लगाने से पति वशीभूत हो जाता है।

अथवा

(२) उक्त विधि से तिलक लगाकर पति की ओर बाईं अंगुली से संकेत करने से वह वश में हो जाता है।

अथवा

(३) कौडिन्य पक्षी की बीठ, मांस, घृत तथा शरीर के मल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गुप्ताङ्ग में लेप करके सहवास करने से पति वशीभूत हो जाता है।

पति वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो महायक्षिणी पति से वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

(१) अपनी योनि का रक्त, केला का रस तथा गोरोचन-इन सबके मिश्रण से अपने मस्तक पर तिलक करके स्त्री पति के पास जाय तो वह वशीभूत हो।

अथवा

(२) मंगलवार के दिन एक साबुत सुपारी को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके निगल लें। जब वह शौच के समय बाहर निकले तो उसे पानी, दूध तथा गंगाजल से धोकर पुनः मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित करें। फिर उसे पान में रख कर पति को खिला दे तो वह वशीभूत हो।

अथवा

(३) लौंग और अपनी जिह्वा का मल-इन दोनों को मिला कर ७ बार अभिमन्त्रित कर, पति को खिला दें तो वह वशीभूत हो।

सर्व जन वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को राजा मोहूं, प्रजा मोहूं, ब्राह्मण वाणियाँ, हनुमन्त रूप में जगत मोहूं, तो रामचन्द्र पर माणिया, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन-विधि—

शुभ मुहूर्त में धूप, दीप, नेवैद्य रख कर पहले श्री रामचन्द्र जी का ध्यान करें, फिर २१ दिनों तक नित्य १२१ की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

गाँव के चौराहे पर जाकर वहाँ से धूलि की चुटकी ले आयें। उसे ७ बार अभिमन्त्रित करके, अपने मस्तक पर बिन्दी लगायें तो जो भी व्यक्ति देखेगा, वही वशीभूत होगा।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ नमो कटविकट घोर रूपिणी अमुकं मे वशमानय स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री अर्थात् जिस स्त्री को वश में करना हो उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण के समय इस मन्त्र का १०००० की संख्या में जप करें तो यह सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—

मन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद किसी रविवार के दिन जब भोजन करने बैठे तब सर्व-प्रथम १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़ कर भोजन-सामग्री को अभिमन्त्रित कर लें अर्थात् १०८ बार मन्त्र पढ़-पढ़ कर भोजन सामग्री पर फूँक मारें। फिर जिस स्त्री को वश में करना हो, उसका नाम लेते हुए भोजन करें। भोजन करते समय उस स्त्री का नाम बारम्बार लेते रहना चाहिए। इस प्रक्रिया से साध्य-स्त्री साधक के शीघ्र वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ भगवति भग भाग दायिनी अमुकीं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

गुरुवार के दिन नमक को इस मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के खान-पान की वस्तु में मिला कर उसे खिला-पिला दिया जाय, वह वशीभूत हो जाती है।

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं महामातंगीश्वरी चांण्डालिनि अमुकीं पच पच दह दह मथ मथ स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

रविवार के दिन जिस स्त्री का नाम लेकर दूध तथा शर्करा से होम किया जाय, वह वशीभूत हो जाती है। होम के समय मन्त्र जप १०००० की संख्या में करना चाहिए।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ नमो उच्छिष्ट चाण्डालिनि पच पच भंज भंज मोहे मोहे मम अमुकीं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

SHAIKH ABDUL GAFAR,NIALI,ODISHA

प्रयोग-विधि—

भोजनोपरान्त पके हुए चावलों को एक हाथ में लेकर इस मन्त्रको पढ़ें, फिर उस भात को रख दें। इसी प्रकार १० दिनों तक नित्य करते रहें। तत्पश्चात् उस १० दिनों के एकत्र भात को लेकर उसे ७ बार मन्त्र पढ़ कर अभिमन्त्रित करें। फर वह भात साध्य-स्त्री को खाने के लिए दें अथवा उसके घर में फेंक दें तो वह साधक के वशीभूत हो जाती है।

विशेष—

मन्त्र जप करते समय नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्ट गन्ध द्वारा भोज पत्र के ऊपर लिख कर, उसको विधिवत् पूजा-प्रतिष्ठा करें; फिर उसे आसन के नीचे दबा कर तथा उस आसन के ऊपर स्वय बैठ कर उक्त मन्त्र का जप करना चाहिए।

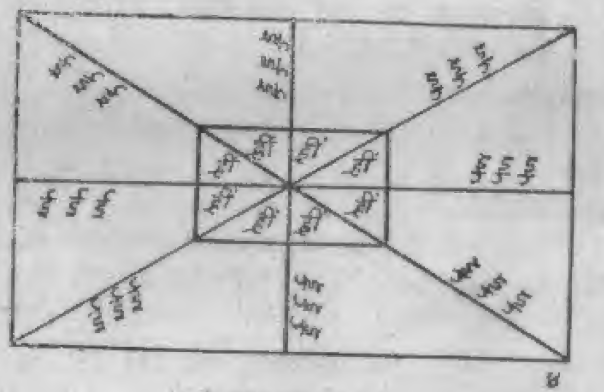

(स्त्री-वशीकरण यन्त्र)

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (५)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं सः।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

जिस स्त्री को सदैव के लिए वश में करना हो, उसके 'स्मर सदन' में अपने 'मदनांकुश' को डाल कर अर्थात् सहवास करने की स्थिति में रहते हुए इस मन्त्र का १०००० की संख्या में जप किया जाय, तो वह सदा-सदा के लिए वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (६)

मन्त्र—"ह्रां अघोरे ह्रीं अघोरे ह्रूं घोर घोरतरे सर्व सर्वे नमस्ते रूपे ह्रः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे विच्चे।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

साध्य-स्त्री को भोजन के लिए आमन्त्रित कर, उक्त सिद्ध मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित भोजन-सामग्री को उसे खिला देने से वह सदैव के लिए वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (७)

मन्त्र—"ॐ कामिनी रंजनि स्वाहा।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

(१) आवश्यकता के समय उक्त सिद्ध मन्त्र को जिस साध्य-स्त्री की हथेली पर अलक्त (अलता) द्वारा लिख दिया जाय, वह वशीभूत हो जाती है।

(२) रवि, गुरु तथा भौमवार-इन तीन दिनों तक यह मन्त्र स्त्री की हथेली पर लिखते रहने से वह अवश्य वशीभूत होती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (८)

SHAIKH ABDUL GAFAR NIALI ODISHA

मन्त्र—"ॐ कुम्भनी स्वाहा।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस सिद्ध मन्त्र द्वारा किसी सुगन्धित पुष्प को १०८ बार अभिमन्त्रित करें फिर वह पुष्प साध्य-स्त्री को सुंघा दें तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (९)

मन्त्र—"ॐ नमो नमः पिशानी रूप त्रिशूलं खड्गं हस्ते सिंहारूढे अमुकीं मे वशमागच्छमागच्छ कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व से आरम्भ करके ७ या २१ दिन तक नित्य १००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

टिप्पणी—

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग-विधि—

सिद्ध मन्त्र को भोज पत्र के ऊपर लिखकर जिस साध्य-स्त्री का नाम लेकर धूप दी जाती है; वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१०)

मन्त्र—"ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाच अमुकीं कामं ग्राहय ग्राहय स्वप्ने मम रूपेण नखैर्विदारय विदारय द्रावय द्रावय रद महेन बन्धय श्रीं फट्।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

उक्त मंत्र को काम-विह्वल चित्त से १५ दिनों तक रात्रि के समय निरन्तर जपते रहने से साध्य-स्त्री वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (११)

मन्त्र—"ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाचि अमुकीं काम ग्राहय पद्मे मम रूपेण नखैर्विदारय विदारय द्रावय द्रावय बन्धय बन्धय श्रीं फट्।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

पूर्व मन्त्र के समान है।

विशेष—

यदि उक्त दोनों मन्त्रों को काम-विह्वल-चित्त से १५ दिनों तक रात्रि के समय लगातार जपा जाय तो शिवजी की कृपा से साध्य-स्त्री अवश्य वशीभूत होती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१२)

मन्त्र—"ॐ ठः ठः ठः ठः अमुकी मे वश मानय स्वाहा ह्रीं क्लीं श्री श्रीं क्लीं स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन-विधि—

यह मन्त्र रविवार के दिन १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

रविवार के दिन जौ का आटा सवा पाव महीन पीस कर उसे गूंध कर एक लोई बनायें तथा उसे बेलकर मन्द-मन्द आग पर पकायें। रोटी को केवल एक ही ओर सेकें, दूसरी ओर न सेकें। वह एक ओर से ही ऐसी सिक जानी चाहिए कि दूसरी ओर भी सिकी हुई सी अनुभव हो। तत्पश्चात् जिस ओर रोटी सिकी न हो, उस ओर सिन्दूर को पानी में घोलकर, अपनी तर्जनी अंगुली द्वारा उसके ऊपर उक्त मन्त्र को लिखें। फिर गंध, पुष्प, सुपारी, पान, दीपक, गोरे बटुकनाथ तथा दक्षिणा सहित उस मन्त्र लिखित रोटी का पूजन करें। फिर उसके ऊपर मिष्ठान्न, दही तथा चीनी-इन वस्तुओं को इतना और इस प्रकार से रखें कि उनसे रोटी ढक जाय। तत्पश्चात् जिसे वश में करना हो, उसका नाम लेते हुए १०८ बार मन्त्र का जप करें। फिर मन्त्र पढ़-पढ़ कर उस रोटी के टुकड़े कर-कर के किसी काले कुत्ते को खिलादें। इस प्रयोग से साध्य-स्त्री अवश्य वशीभूत हो जाती है।

इस मन्त्र के जप तथा प्रयोग काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है।

स्त्री-वशीकरण मंत्र (१३)

मन्त्र—"ऐं भग भुग भगनि भगोदरि भगमाले योनि भगनिपेतिनि सर्व भग संकरी भगरूपे नित्य क्लें भगस्वरूपे सर्व भगानि मम वश मानय वरदे रेते भग क्लिन्ने क्लान द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविधे क्षुभ क्षोभय सर्व सत्वाभगेश्वरि ऐं क्ल ज व्लू भै व्लु मा मलू हे हे क्लिन्ने सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा।

साधन-विधि—

यह मन्त्र ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय जिस स्त्री को वश में करना हो, उसकी ओर देखते हुए इस मन्त्र का जप करने, से वह शीघ्र वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मंत्र (१४)

मन्त्र—"ॐ नमः क्षिप्रकामिनी अमुकीं मे वश मानय स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

ग्रहण पर्व में १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

प्रातःकाल दन्तधावन करके पानी की भरी लुटिया हाथ में लेकर उसे उक्त मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमंत्रित करें फिर उसमें भरे पानी को स्वयं पी जायें। इस क्रिया को निरन्तर ७ दिन तक नित्य करते रहने से साध्य-स्त्री वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण मंत्र (१५)

मन्त्र—"या आमीन या फामीन हमारे दिल से फलानी का दिल मिलादे।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

जुमेरात (बृहस्पति वार) के दिन यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

जिसको वश में करना हो, उसे अपने सामने अग्नि के समीप बैठाये, फिर गुग्गुल, लोबान तथा धूप हाथ में लेकर उसकी (साध्य-स्त्री की) दृष्टि इन वस्तुओं पर डलवायें। जब उसकी दृष्टि लोबान, धूप आदि पर पड़ जाय, तब पूर्वोक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे अग्नि में डाल दें। इस प्रक्रिया को २१ बार दुहरायें तथा इसी प्रकार ७, १४ अथवा २१ दिन तक इस क्रिया की पुनरावृत्ति करते रहे। इस अवधि में साध्य-स्त्री साधक के वशीभूत हो जाती है।

विशेष—

इस मन्त्र का प्रयोग पुरुष-वशीकरण के लिए भी किया जाता है। पुरुष के लिए प्रयोग करने पर मंत्र में 'फलानी' के स्थान पर साध्य-पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए। स्त्रियों पर यह मंत्र अपना प्रभाव शीघ्र प्रकट करता है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१६)

मन्त्र—"ॐ हु स्वाहा।"

साधस-विधि

सिद्ध योग, शुभ-मुहूर्त अथवा ग्रहण पर्व में १००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

काली विष्णु क्रान्ता की जड़ को पान में रखकर, उसे उक्त मन्त्र बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को खिला दिया जायगा, वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१७)

मन्त्र—"ॐ पिशाच रूपिण्यै लिङ्ग परिचुम्बयेत्। नागं विसिंचयेत्"

साधन-विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि

(१) उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रातःकाल २२ बार अपने मुख का प्रक्षालन करें तथा साध्य-स्त्री का नाम ले तो वह वस में हो जाती है।

(२) उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित-जल साध्य-स्त्री को पिला देने से वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१८)

मन्त्र—"मद मद मद मादय खिल ह्रीं अमुक नाम्नी 'अमुकस्व रूपां स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक नाम्नी' शब्द आया है, वहाँ जिस स्त्री को वशीभूत करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए तथा जहाँ, अमुक स्वरूप स्त्री शब्द आया है। वहाँ उसके स्वरूप अर्थात् वर्ण (रंग), आयु आदि का उच्चारण करना चाहिए, जैसे स्त्री का रंग गोरा तथा आयु उन्नीस वर्ष की हो तो "एकोनविंश वत्सरेण वय समन्विता' आदि।

इस मन्त्र का जप करने से पूर्व निम्नानुसार कामदेव का ध्यान करना चाहिए—

ध्यान—"कनक रुचिर मूर्तिः कुन्दपुष्पाकृतिर्वे युवति हृदयमध्ये निश्चतादत्तदृष्टिः। इति मनसि मनोजं ध्याययेद्यो जपस्थो वश-यति च समस्तं भूवलं मन्त्र सिद्धः।,

साधन-विधि—

ध्यानोपरान्त पूर्वोक्त मन्त्र का १००००० की संख्या में जप करके, जप का दशांक अर्थात् १००० की संख्या में लाल फूलों से होम करें। इस प्रयोग में सभी काम बाँये हाथ से करने चाहिये।

SHAIKH ABDUL GAFAR NIALODISHA

प्रयोग-विधि—

मंत्र सिद्ध हो जाने पर साध्य-स्त्री का ध्यान करते हुए १०८ बार मंत्र का जप करने से वह वशीभूत होती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१९)

मन्त्र—"ॐ नमो कामाख्या देवी अमुकीं मे वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा"

विशेष—

उक्त मन्त्र में 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

(१) शनिवार के दिन साध्य-स्त्री के सिर के बाल तथा उसके बाँये पाँव के नीचे की धूलि लेकर एक पुतली का निर्माण करें। फिर उसे नीले वस्त्र में लपेट कर, उसकी योनि में अपना वीर्य भरदें तथा भग में सिन्दूर लगादें। तदुपरांत उस पुतली को उक्त मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर साध्य-स्त्री के घर के दरवाजे के बांई ओर गाढ़ दें तो जैसे ही कभी वह उस स्थान को लांघेगी, वैसे ही साधक के वशीभूत हो जायेगी।

अथवा—

(२) सोमवार को जब मृगशिरा नक्षत्र हो, उस दिन अपने वीर्य में सुपाड़ी मिलाकर पान में रखदें तथा उसे २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साध्य-स्त्री को खिलादें तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (२०)

मन्त्र—"ॐ नमो काला भैरूं काली रात, काला चाला आधी रात, काला रे तू मेरा वीर, परनारी ते राखे सीर, बेगीं जा छाती धरल्याव, सूती होय तो जगाय ल्याव, शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

दिवाली अथवा होली की रात को लाल अरण्ड का पेड़ एक झटके में तोड़ लावें उसे जलाकर काजल पारें तथा उस काजल को उक्त मन्त्र से

२१ बार अभिमंत्रित कर साध्य-स्त्री की आँखों में लगा दें तो वह साधक के वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मंत्र (२१)

मन्त्र—"धूली-धूली विकट चंदनी, पट मांरू धूली फिरे दिवानी, घर तजे, बाहर तजे, ठाडो भरतार तजे, देवी दिवानी एक सठी कलुवा न तू नाहरसिंह वीर अमुकी ने उठाय ल्याव, मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन एवं प्रयोग विधि

शनिवार के दिन जो स्त्री मरी हो, उसके पग तल के अंगारे को लेकर एक कोरी हांडी में रखकर उस पर ७ बार मंत्र पढ़ें। वह हांडी जिस साध्य स्त्री के शरीर से स्पर्श करा दी जायेगी, वह वशीभूत हो जायगी।

विशेष—

उक्त मंत्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

राजा-वशीकरण मंत्र (१)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं रक्ते चामुंडे अमुकस्य मम वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को १००० की संख्या में जपे। फिर कुंकुम, चन्दन, गोरोचन तथा गाय का दूध-इन सब को मिलाकर, मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमंत्रित करें और उसका तिलक लगाकर राजदरबार में जाय तो राजा वशीभूत हो।

राजा-वशीकरण मंत्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो आदेस गुरू को जल बाँधूं, जलहर बाँधूं आणी बांधूं, बार बार बाँधूं, शिवपूत प्रचंड बांधूं, रूठा राजा

कांई करसी, आसण छोड़ मंन्ने बैसण देसी, आसण टीको
SHAKTI PATH
चंदन ललाट, टीको कादि सिंह वर्ण कहाऊं और करूं
सइया तले में बंध्यान, गौरा पार्वती बंध्याने, मैं बध्याया,
गुरू की शक्ति मेरी भक्ति कुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

धूप, दीप, नवेद्य रखकर, पार्वतीजी का ध्यान कर, शनिवार के दिन से मन्त्र का जप आरम्भ करे तथा २१ दिन तक नित्य १२१ बार मन्त्र जप कर सिद्ध कर लें। फिर कुंकुम, चंदन तथा गोरोचन को गाय के दूध में मिलाकर, उसे अभिमंत्रित करे तथा उसी का तिलक अपने मस्तक पर लगाकर राजा के सम्मुख जाय तो वह वशीभूत हो।

राजा वशीकरण मंत्र

मन्त्र—"ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुक महीपते मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ जिस राजा (अथवा राज्याधिकारी) को वश में करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन एवं प्रयोग विधि—

रविवार के दिन ओंगा (अपामार्ग) के पुष्प लाकर, उन्हें इस मन्त्र से २१ बार अभिमंत्रित करके राजा को खिलादें तो वह वशीभूत हो जायगा।

राज-कर्मचारी वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ बिस्मिल्लाह दाना कुलहु अल्लाह यगाना दिल है सख्त
तुम हो दाना, हमारे बीच फलाने को करो दीवाना।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ 'फलाने' शब्द आया है, वहाँ जिस अधिकारी को वश में करना हो; उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

४१ बिनौले लाकर रात्रि के समय प्रत्येक को ४१-४१ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर अग्नि में डालें, तो तीन दिन के भीतर मनोरथ सिद्ध होता अथवा २१ दिनों तक २१ बिनौलों पर २१-२१ बार मन्त्र पढ कर, उन्हें जलायें तो मनोरथ पूर्ण हो जायगा।

शत्रु-वशीकरण प्रयोग

नीचे प्रदर्शित यन्त्र भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से लिखकर गन्ध पुष्पादि चढ़ाकर यथाविधि पूजन करें। फिर उसे किसी शहद भरे पात्र (बर्तन) में डालकर रख दें तो जिस शत्रु को वशीभूत करने के उद्देश्य से यह प्रयोग किया जाय, वह साध्य-व्यक्ति के वशीभूत हो जाता है।

टिप्पणी—

इस मन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-शत्रु का नाम लिखना चाहिए।

(शत्रु-वशीकरण यन्त्र)

वेश्या-वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ द्राविणी स्वाहा [illegible] कामिने स्वाहा।"

SHAKTI PUSTAK BHANDAR PURI, ODISHA

साधन एवं प्रयोग विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर अपामार्ग (ओंगा) की ७ अँगुल लम्बी लकड़ी को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके वेश्या घर में डाल देने से वह वशीभूत हो जाती है।

राजा क्रोध-शमन एवं वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"हथेली तो हनुमन्त बसे भैरू बसे कपार, नाहरसिंह की मोहनी मोहो सब संसार, मोहन रे मोहन्ता वीर, सब वीरन में तेरासीर, सबकी दृष्टि बाँधि दे मोंहि, तेल सिन्दूर चढ़ाऊँ तोहि, तेल सिन्दूर कहाँ से आया, कैलास पर्वत से आया, कौन लाया, अंजनी का हनुमन्त, गौरी का गणेश, काला गोरा तोतला तीनों बसें कपाल, विन्दा तेल से दूर का दुश्मन गया पाताल, दुहाई कामिया सिंदूर की, हमें देख सीतल हो जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेस गुरू का।"

साधन-विधि—

१४ रविवार को नृसिंह का विधि पूर्वक पूजन कर, इस मन्त्र का १२१ बार जप करें। फिर ७ रविवार तक दीपक, तेल, लोबान एवं लड्डू रख कर १२१ बार मन्त्र का जप करें तो सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—

सिन्दूर को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर, उसका टीका अपने मस्तक पर लगा कर राजा के सामने जाये तो उसका क्रोध शान्त हो और वह प्रसन्न तथा वशीभूत हो।

लौंग वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ जल की जोगनी पाताल का नाग, जिस पैं भेजूँ तिसके लाग, सोते सुख न बैठे सुख, फिर फिर देखे मेरा मुख, मेरी बाँधी छूटे तो बाबा नाहरसिंह की जटा टूटे।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

४ लौंग पीस कर बताशे में रखें फिर उन्हें गुगल की धूनी, तत्पश्चात् अपने होंठ के नीचे रख कर पानी में गोता लगायें। गोता में ७ बार मन्त्र को पढ़ें। फिर पानी से निकल कर, मुँह में से बताशा निकाल कर लौंग के चूरे को गुगल की धूनी दें। तदुपरान्त उस लौंग के चूरे को पान में रख कर अथवा अन्य प्रकार से जिसे खिला दिया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगा।

इलायची वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो काला कलुआ काली रात, तिसकी पुतली मांजी रात, काला कलुआ घाट बाट सूती को जगा लाव, बैठी को उठा लाव, खड़ी को चला लाव, बेगी धर या लाव, मोहनी जोहनी चल राजा की ठांव, अमुकी के तन में चटपटी लगाव, जीया ले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची, कभी न छोड़े हमारा साथ, घर को तजे बाहर को तजे, घर के साईं को तजे, हमें तज और कने जाय तो छाती फाट तुरन्त मर जाय, सत्य गुरू आदेस गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, ईश्वर महादेव की वाचा, वाचा से टरे तो कुम्भी नरक में पड़े।"

साधन एव प्रयोग विधि—

शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर, २१ दिन तक नित्य १२१ बार मन्त्र को जपने से यह सिद्ध हो जाता है। फिर इलायची पर ११ बार मन्त्र पढ़ कर जिसे खिला दें, वह साधक से वशीभूत हो।

पान वशीकरण मन्त्र

SHAIKH ABDUL GAFAR,NALI,ODISHA

मन्त्र—"कामरूदेस कामारख्या देवी तहाँ बसे इस्माइल जोगी,
इस्माइल जोगी ने दीन्हा बीड़ा, पहला बीड़ा आतो जाती,
दूजा बीड़ा दिखावे छाती, तीजा बीड़ा अंग लिपटाइ,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा दुहाई गुरू गोरखनाथ की।"

साधन-विधि—

दीपावली की रात्रि में दीपक जलाकर, धूप दे तथा मिठाई रख कर १४४ बार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है अथवा किसी रविवार से आरम्भ करके प्रतिदिन २१ की संख्या में २१ दिन तक जप करने से सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

बिना तराशे (काटे हुए) ३ पानों का मसालेदार बीड़ा बना कर उसे ७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, जिस व्यक्ति को खिला दिया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगा।

मन्त्र—"हाथ पसारूँ मुख मलूँ काची मछली खाऊँ।
आठ पहर चौंसठ घड़ी जगमोह घर जाऊँ॥

साधन-विधि—

(१) दीपावली की रात को १०१ बार कागज के टुकड़ों पर एक ओर इस मन्त्र को लिखें तथा उन प्रत्येक कागज के टुकड़ों के दूसरी ओर प्रेमी तथा प्रेमिका और उनकी माता का नाम लिखें यथा—"अमुकी की बेटी अमुकी अमुकी, के बेटा अमुक के पास आये।" तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

अथवा

(२) सात शनिवार और इतवार को प्रतिदिन १०१ बार इस मन्त्र को पढ़ें तथा दीपक जलाकर गुगल की धूनी दे और मिठाई तथा फूल दीपक के आगे रखें तो मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि –

(१) पान के बीड़ा को सिद्ध मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर जिसे खिलादें वह वशीभूत हो।

अथवा

(२) हाथ की हथेलियों पर उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़ कर, दोनों हाथों को मुँह पर फेर कर साध्य स्त्री के पास जाय तो वह वशीभूत हो और सभा में जाय तो सब लोग वश में हों।

फूल वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"कामरू देस कामाख्या देवी, तहाँ बसे इस्माइल जोगी
इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी, फूल बीने लोना चमारी, जो इस फूल को सूँघे बास, तिसका जीव हमारे पास, घर छोड़े घर आँगन छोड़े, लोक कुटम की लज्या छोड़े, दुहाई लोना चमारी की दुहाई बनन्तर की छू।"

साधन-विधि –

शनिवार से आरम्भ कर २१ दिनों तक नित्य १४४ बार मन्त्र का जप करें, दीपक जलायें, लोबान की धूप दें एवं शराब का भोग दें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि –

फूल को ७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, जिसे सुँघा दिया जाय वह वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण का शैतानी अमल

मन्त्र—(१) "इस्रा आत्वेन शैताना, मेरी शिकल बन अमुकी के पास जाना, उसे मेरे पास लाना, न लावे तो तेरी बहन भानजो पर तीन सौ तीन तलाक।"

प्रयोग-विधि—

खाट के पांइते में नंगा होकर, इस मन्त्र को १०१ बार गुड़ के ऊपर पढ़ें। फिर गुड़ को खाट के नीचे रख कर सो जाय। प्रातः काल वह गुड़ बालकों को बांट दें तो साध्य-स्त्री ७ दिन के भीतर सामने आकर खड़ी हो जाती है।

SHAIKH ABDUL GAFAR,NALI,ODISHA

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहां 'अमुकी' शब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

मन्त्र—(२) "अलफ गुरू गुफ्तार रहमान, आग लग रे अलहा-दीन शैतान, सात बार अमुकी को जा रान, जो न राने तो तेरी माँ की तलाक, बहन की तीन तलाक।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

बेसन का चौमुखा दीपक बना कर उसके चारों कोनों पर चिड़े का रक्त (खून) तथा अपने बांये हाथ की अनामिका अंगुली का खून लगा कर ४ बत्ती रख कर जलायें। फिर स्वयं नंगा होकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठें तथा दीपक जला कर लोबान की धूनी दें, फिर भुने हुए चने तथा भुने हुए जौ भोग में रख कर १०८ बार मन्त्र जपे। फिर दीपक को जलता हुआ छोड़ कर, स्वयं नंगा ही सो जाय।

यह प्रयोग जिसके नाम से किया जाता है, शैतान उसके साथ रात भर में ७ बार भोग करता है, फलस्वरूप वह स्त्री व्याकुल होकर साधक के पांवों पर आ गिरती है तथा उसके वश में हो जाती है।

विशेष—

इस मन्त्र में जहां 'अमुकी' शब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

मन्त्र—(३) "अलफ अलीफ एक रहमान, सुन शैतान, मेरी शकल बन फलानी को जा रान, जो न राने तो तेरी माँ बहन को तीन सौ तीन् तलाक तलाक।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहां 'फलानी' शब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

मन्त्र संख्या २ के अनुसार।

सर्व वशीकरण पुतली मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं क्लीं जं हिये जं हि ये अमुकीं आकर्षय आकर्षय मम वशयं कुरु कुरु मोहं कुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहां 'अमुकी' शब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री अथवा साध्य-पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन विधि—

सर्व प्रथम आगे प्रदर्शित चित्र के अनुसार एक पुतली की आकृति का निर्माण करें। इस चित्र को केसर, कुंकुम तथा गोरोचन द्वारा भोज पत्र के ऊपर शुभ घड़ी में लिखित करना चाहिए। फिर उस चित्र का पूजन करके, इससे अपनी कार्य की सिद्धि के लिए प्रार्थना करें। फिर चित्र को अरंड की लकड़ी से रख कर, खैर के अंगारों पर तपायें तथा १०८ बार मन्त्र का जप करें। गूगल की गोली तथा लाल कनेर के फूलों को घी में सान कर अग्नि में १०८ बार होम करें। होम करते समय मन्त्र का उच्चारण करते जाय। इस प्रयोग के करने से ७ दिन के भीतर मनोकामना पूर्ण होती है।

SHAIKH ABDUL GAFAR,NIALI,ODISHA

(सर्व वशीकरण पुतली)

४ | उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण प्रयोग

उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण के विषय में

'उच्चाटन' का अर्थ है—किसी व्यक्ति को अपने स्थान से हटने के लिए, उसके मन को उच्चाटित कर देना। अर्थात् उच्चाटन मन्त्र का प्रयोग करने पर साध्य-व्यक्ति अपने निवास-स्थान से स्वयं ही हट कर कहीं अन्यत्र चला जाता है। ऐसे प्रयोग प्रायः अपने किसी शत्रु को, उसके आवास-स्थान से हटा देने के लिए किये जाते हैं और आवश्यक होने पर इनका प्रयोग अनुचित भी नहीं माना जाता, क्योंकि इन प्रयोगों में शत्रु अथवा विरोधी केवल अपना स्थान ही छोड़ता है, उसे अन्य कोई कष्ट नहीं होता।

'विद्वेषण' का अर्थ है—किन्हीं दो मित्रों अथवा प्रेमियों में परस्पर विरोध उत्पन्न करा देना। जब कभी यह अनुभव हो कि कोई दो व्यक्ति गुप्त रूप से हानि पहुँचाने के इच्छुक हैं, उस समय उन दोनों में परस्पर विरोध करा देने से प्रयोगकर्त्ता का हित-साधन होता है। अतः आवश्यकता के समय 'विद्वेषण' का प्रयोग भी अनुचित नहीं माना जाता।

'मारण' का अर्थ है—किसी व्यक्ति की मृत्यु के लिए मन्त्र-प्रयोग करना। यह प्रयोग अत्यन्त गर्हित माना गया है, क्योंकि इससे एक प्राणी की हत्या हो जाती है, अतः मारण-मन्त्र का प्रयोग खूब सोच-समझ कर तथा नितान्त आवश्यक होने पर ही करना चाहिए। स्मरणीय है कि किसी की हत्या के पाप का फल साधक को भी किसी-न-किसी रूप से अवश्य भोगना पड़ता है, अतः यदि अनिवार्य विवशता न हो तो मारण-प्रयोग का साधन हर्गिज नहीं करना चाहिए।

SHAIKH ABDUL GAFAR JALALI ODISHA

उच्चाटन मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते महाबल वेष्टाकरालाय अमुकं सायुत्र उच्चाटय उच्चाटय हुं हुं दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः।"

साधन-विधि—

दीपावली, होली अथवा ग्रहण के दिन १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

विशेष—

प्रयोग के समय इस मन्त्र में जहाँ "अमुक" शब्द आया है, वहाँ जिस व्यक्ति का उच्चाटन करना अभीष्ट हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग विधि—

(१) जिस स्थान पर गधा लोटा हो, वहाँ की धूलि को बायें पाँव से बायें तथा दाहिने हाथ की दोहरगी से उसे उक्त-मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में डाल दें तो उसका उच्चाटन होता है, अर्थात् वह अपना घर छोड़ कर कहीं अन्यत्र चला जाता है।

अथवा—

(२) अरण्डी तथा शिव-निर्माल्य (शिव-पिण्डी पर चढ़ाई गई वस्तुओं-वस्त्र-फूल मिठाई आदि को 'शिव-निर्माल्य' कहते हैं) को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ देने से उसका उच्चाटन होता है।

अथवा—

(३) कील के एक को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ देने से उसका उच्चाटन होता है।

अथवा—

(४) उल्लू की विष्ठा तथा सरसों का चूर्ण करके, उसे इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, जिस व्यक्ति के सिर पर डाला जाता है, उसका उच्चाटन होता है।

अथवा—

(५) गूलर की लकड़ी की ४ अंगुल लम्बी कील उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के घर गाड़ दी जायगी, उसका उच्चाटन होगा।

अथवा—

(६) उल्लू के पंख को मंगलवार के दिन उक्त मन्त्र से अभिमंत्रित करके बेरी के घर में गाड़ दिया जाय तो उसका उच्चाटन हो।

अथवा—

(७) कौआ तथा उल्लू—दोनों के पंखों को घी में सानकर, साध्य-शत्रु के नाम का उच्चारण करते हुए उन्हें १०८ बार मन्त्र द्वारा अभिमंत्रित करके होम करें तो उसका उच्चाटन होगा।

अथवा—

(८) मनुष्य की हड्डी की ४ अंगुल लंबी कील को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके शत्रु के दरवाजे पर गाड़ देने से उसका उच्चाटन होता है।

उच्चाटन मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो भीमास्याय अमुकं मूढे उच्चाटन बुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आता है, वहाँ जिसका उच्चाटन करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

दोपहर के समय जहाँ गधा लोटा हो, उस स्थान की धूलि को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर मुँह करके बाँये हाथ से उठा लायें। फिर उस

धूलि को उक्त सिद्ध मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, सात दिनों तक नित्य शत्रु के घर में फेंकते रहने से गृह-स्वामी का उच्चाटन होता है।

विद्वेषण मन्त्र (१)

मन्त्र—(१) "ॐ नमो नारायणाय अमुके अमुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि—

यह मन्त्र ग्रहण के दिन या दीवाली की रात में १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

विशेष—

प्रयोग के समय इस मन्त्र में जहाँ 'अमुके अमुकेन सह' शब्द आया है, वहाँ उन दोनों मित्रों के नाम का उच्चारण करना चाहिए, जिनमें परस्पर विद्वेषण (शत्रुता) कराना अभीष्ट हो। जैसे रामलाल का द्वारकादास के साथ विद्वेष कराना हो तो 'रामलालस्य द्वारकादासेन सह" आदि।

प्रयोग-विधि

(१) एक हाथ में कौए के पंख तथा दूसरे हाथ में घुग्घू पक्षी के पंख लेकर दोनों को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, परस्पर मिलाकर, काले सूत में लपेटें। फिर उन्हें हाथ में लेकर पानी (नदी, तालाब आदि) के किनारे पहुँचकर, उक्त मन्त्र का जप करते हुए १०८ बार तर्पण करें तो दोनों मित्रों में परस्पर विद्वेष हो जाएगा।

अथवा—

(२) सिंह तथा हाथी के बाल लेकर, दोनों मित्रों के पाँव के नीचे की मिट्टी लें फिर तीनों वस्तुओं को एक पोटली में बाँधकर उसे पृथ्वी में गाड़ दें तथा उस स्थान के ऊपर अग्नि जलाकर उसमें चमेली के फूलों की १०८ आहुतियां मन्त्र पढ़ते हुए दें।

अथवा—

(३) बिल्ली और चूहा—दोनों की बीष्ठा लें तथा दोनों मित्रों के पाँव के नीचे की धूलि में उसे सानकर एक पुतला बनायें, फिर उसे नीले रंग के वस्त्र में लपेट कर उसके ऊपर उक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़कर फूंक मारें तदुपरांत उस पुतले को श्मशान में ले जाकर गाड़ दें।

उक्त चारों विधियों में से किसी भी एक का प्रयोग करने से दोनों मित्रों में परस्पर विद्वेष (बैर) हो जाता है।

विद्वेषण-मन्त्र (२)

मन्त्र—"बारा सरस्यों तेरा राई पाट की मांटी समान की छाई, पढ़कर मारूं करद तलवार, अमुका कढ़े न देख अमुकी का द्वार, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सतनाम आदेस गुरु का।"

साधन-विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुका' शब्द आया है, वहाँ एक मित्र का तथा जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ दूसरे मित्र के नाम का उच्चारण करना चाहिए। यदि दोनों में एक पुरुष तथा दूसरी स्त्री हो तो 'अमुका' की जगह पुरुष के नाम तथा 'अमुकी' की जगह स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। मुख्यतः यह मन्त्र दो प्रेमी स्त्री-पुरुषों के बीच विद्वेष कराने के लिए ही प्रयुक्त होता है।

प्रयोग-विधि

सरसों, राई और राख इन सबको समान मात्रा में एकत्र करें। आक-ढाक की लकड़ी में उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए इनकी १०८ आहुतियां दें। यह काम मंगलवार को करना चाहिए। अन्त में, होम की थोड़ी सी राख लेकर जहाँ दोनों स्त्री-पुरुष मित्र रहते या बैठते हों, उस स्थान पर या घर के दरवाजे के सामने डाल देने से दोनों में विद्वेष हो जाता है।

पूर्वोक्त ऋण विलेख में ₹५०० ब्याज अभिलिखित करना, यदि किसी तथ्य विशेष को ध्यान में रखते हुए न्यायालय ऐसा करना उचित समझे।

दृष्टांत

(1) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

(2) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

(3) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

(4) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

(5) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

(6) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

(7) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

(8) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

(9) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

(10) 'क' ने 'ख' को ₹१,००० ऋण दिया और 'ख' ने 'क' को ₹१,००० ऋण दिया। 'क' और 'ख' में से प्रत्येक को दूसरे के विरुद्ध ₹१,००० की डिक्री प्राप्त है।

विधायी-आशय (1)

आशय—(1) [illegible] हुए स्वतंत्र।"

साधक-विधि—

यह धारा वहाँ के सिवा जो दीवानी की दशा में ₹५०००/- की संख्या के ऊपर के सिवा ही जाता है।

विशेष—

अंग्रेजी के अक्षर इस धारा में जहाँ 'अधूरे अधूरेपन वाद' लगाए जाता है, वहाँ उन दोनों सिवों के बाद का उच्चारण करना चाहिए, जिसमें उपरान्त विधेयक (अधूरा) बनाया जाएगा है। बीच 'न्यायालय का द्वारकाधीश के साथ विधेय बनाया हो तो 'न्यायालयक द्वारकाधीशक वाद' करें।

उपयोग विधि

(1) एक मुकदमे के दौरान के संबंध उनका दूसरे दावा में मुकदमे पक्षों के एक समान दोनों की दावा करना में अधिकारिक कर, दावाकार विधायक, कहीं मुख में लगेंगे। फिर उन्हें मुकदमे में लेकर दावी 'अधूरे', दावाकार आदि। के विचार बढ़ाकर, इस धारा का अर्थ करते हुए ₹५० धारा तारीख करें तो दोनों सिवों में परस्पर विधेय ही जाएगा।

धारा—

(1) सिद्ध दावा दावी के आधार लेकर, दोनों सिवों के पक्षों के बीच की सिद्धांत में फिर दी गई अधूरों को एक दीवानी में इकट्ठा कर उसी मुकदमे के साथ दावा उस स्थान के द्वारा अंकित करवाकर उसमें अंकेक्षी के मुकदमे की ₹५० अनुसिद्धां धारा पढ़ते हुए दें।

धारा—

(1) किसी और दावा—दोनों की दीवानी में तथा दोनों सिवों के पक्षों के बीच की दूसरे से ले जाकर एक मुकदमा चलाई, फिर उसे तीन रख के अलग से जाएं कर उसके ऊपर एक अलग की ₹५० धारा पढ़कर पहले मामले मुकदमा एक दूसरे की स्थानांतर में ले जाकर लाए दें।

उक्त चारों विधियों में से किसी भी एक का उपयोग करते हुए दोनों सिवों में परस्पर विधेय (बैर) की जाएगा है।

विधायी-आशय (2)

धारा—"जहाँ साधारणी तेरह उसी पार्ट की सारी अलाउ की गई, उसकर धारा वाद तारदार, अधूरा पड़े न ऐसे अधूरी का द्वार, मेरी अंकित पुस्त की क्रोक पूरी धारा देखरेख वाला तसदीस आदेश पुस्त का।"

साधक-विधि—

धारा धारा 1 के अनुसार।

विशेष—

उक्त धारा में जहाँ 'अधूरा' शब्द आया है, वहाँ एक सिद्ध दा तथा उसी 'अधूरी' शब्द आया है, वहाँ दूसरे सिद्ध से नाम का उच्चारण करना चाहिए। यदि दोनों में एक पुराना तथा दूसरी नयी हो तो 'अधूरा' की जगह पुराने के नाम तथा 'अधूरी' की जगह नयी के नाम का उच्चारण करना चाहिए। सुगमता यह धारा दो ऐसी नयी-पुरानी के बीच विधेय बनाने के लिए ही उपयुक्त होता है।

उपयोग विधि

धारणी, राई और धारा [illegible] के संबंधों में एक मुकदमा चलाने के लिए दो अलग-अलग दो दीवानी में उक्त धारा का उच्चारण करते हुए, इसकी ₹५० अनुसिद्धां दें। यह धारा अनुप्रयुक्त की करना चाहिए। धारा में, होता की कोर्ट की धारा ₹५० नहीं दी गयी पुराना सिद्ध रहते का बैठते हो, उस स्थान पर वहा घर के दरवाजे के आधार हाल [illegible] दोनों में विधेय हो जाएगा है।

विधिमान्य-कथन (3)

कथन—अपराध संहिता अधिनियम, [illegible] अपराध संहिता अपराध संहिता [illegible] अधिनियम [illegible] अपराध संहिता [illegible]।

अपराध विवरण—

कथन संख्या 2 के अनुसार।

प्रकीर्ण विवरण—

अधिनियम से अपराध संहिता संशोधन [illegible] अपराध संहिता [illegible] अपराध संहिता [illegible] अपराध संहिता [illegible] अधिनियम से अपराध संहिता [illegible]।

विधिमान्य-कथन (4)

कथन—"[illegible] अपराध संहिता [illegible] अपराध संहिता [illegible] [illegible] [illegible]

१०८ बार उड़द मारें, फिर दुबारा १२ बार मारें। तत्पश्चात् काले कुत्ते के खून को उड़दों पर लगाकर उन्हें राख में मिलाकर रखे तथा उनमें ३ उड़दों पर मंत्र पढ़कर, उन्हें बैरी के शरीर पर मारे तो मनोभिलाषा की पूर्ति होती है।

मारण-मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ नमो काल रूपाय अमुकं भस्मी कुरु-कुरु स्वाहा।"

विशेष एवं साधन विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

प्रयोग-विधि—

(२) मनुष्य की हड्डी को पान में रखकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर, जिसे खिलादें, वह मर जाएगा।

अथवा—

(२) मंगलवार के दिन पन्द्रह का यन्त्र विलोम करके चिता की भस्म से लिखें। फिर उसके ऊपर १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़ते हुए श्मशान की भस्म को डालें तो शत्रु मर जाता है।

पन्द्रह के यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

६	१	८
७	५	३
२	९	४

७

(१५ का यन्त्र)

अथवा—

(३) जिस मंगलवार को भरणी नक्षत्र हो, उस दिन चिता की लकड़ी को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके, जिस व्यक्ति के दरवाजे पर गाढ़ा जाय, उसकी मृत्यु हो जाती है।

मारण-मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरूं हुक्म हाजिर रहै, मेरा भेजा काल करै, मेरा, भेजा रक्षा करे, आन बांधूँ, बान बांधू, दशों सुर बांधू, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बांधूँ, फूल में भेजूँ फल में जाइ कोठे जी पड़े थर-हर कंपे लहलहले मेरा भेजा सवा घड़ी सवा पहर कूँ वाउला न करे तो माता काली की सज्या पर पग धरे, पे वाचा चूके तो ऊवा सूके वाचा छोड़ि कुवाचा करे तो धोवी नांद चमार के कूँड में पड़े मेरा भेजा वाउला न करे तो महादेव की लटा टूट भूम में पड़े, माता पार्वती के चीर पै चोट करै, बिना हुकुम नहीं मारना हो काली के पुत्र कंकाल भैरूं फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच।"

साधन विधि—

मंत्र संख्या १ के अनुसार।

प्रयोग विधि—

लौंगें जोड़ा, बताशे, पान सुपारी. कलावा, लोवान, धूप, कपूर तथा एक ठीकरा में रखें सिंदूर के ७ बेदा—इन सबकी त्रिशूल बनाकर, अभि-मन्त्रित कर, २२ बार मंत्र पढ़कर अग्नि में होम करदे। इस प्रयोग से साध्य-व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

मारण-मन्त्र (५)

मन्त्र—"ॐ नमो नरसिंहाय कपिल जटाय अमोघ वीचा सत्त वृत्ताय महोग्रचडरूपाय ॐ ह्रीं ह्रीं क्षां क्षां क्षीं क्षीं फट् स्वाहा।"

साधन-विधि

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि -

(१) मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर, एक हजार की संख्या में लाल रंग के पुष्प, कोविदार तथा घृत मिलाकर होम करने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

अथवा

(२) कौए के पंख तथा पंजे को लाकर उसके साथ ही कुश हाथ में लेकर उक्त मन्त्र का जप करते हुए नदी में २१ अंजुलि तर्पण करने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

---

५ शत्रु-पीड़न प्रयोग

शत्रु, पीड़न के विषय में

शत्रु यदि बलवान हो और समझाने-बुझाने, अनुनय-विनय अथवा किसी अन्य शान्ति पूर्ण उपायों के द्वारा भी हठधर्मी पर आमादा होकर हानि पहुँचाने का इच्छुक हो, उस स्थिति में शत्रु-पीड़न विषयक प्रयोगों का साधन करना चाहिए।

इस करण में शत्रु-पीड़न के अनेक प्रयोगों को प्रस्तुत किया गया है। इनका प्रयोग करते समय विवेक-बुद्धि से काम लेना आवश्यक है। उदाहरणार्थ यदि शत्रु केवल बदनामी ही करता फिरता हो तो उसके प्रति मुख-स्तम्भ प्रयोगों का साधन करना चाहिए। इससे उसका मुह बन्द हो जायेगा। न्यायालयों में मुकदमे आदि के समय शत्रु पक्ष कोई हानिकारक बयान न दे सके, इस हेतु भी मुख-स्तम्भन प्रयोगों का साधन उचित रहता है।

यदि केवल मुख-स्तम्भन से काम न चलते तो शत्रु को कष्ट देने, उसे अपमानित करने अथवा अन्य प्रकार से पीड़ित करने के प्रयोगों का साधन करना चाहिए।

किसी छोटे से अपराध के लिए बड़े दण्ड देने वाले मन्त्रादि का प्रयोग करना उचित नहीं रहता। शत्रु का व्यवहार जैसा हो, उसी के अनुरूप उसे सामान्य अथवा कठोर दण्ड देने वाले मन्त्र का प्रयोग करना ही ठीक है।

शत्रु-नाशक यन्त्र-मन्त्र

आगे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर हल्दी तथा हरताल से लिखें। प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा हुआ है, वहाँ साध्य-शत्रु का नाम लिखें।

लेखनोपरान्त यन्त्र को किसी एकान्त स्थान पर रख दें तो उसे बहुत हानि पहुँचती है।

(वशु भवाहन-चक्र)

इस चक्र को किसी उपयोग स्थान में स्थापित करना इसके प्रयोग
स्थान बताना निम्नलिखित मन्त्र का जप करने तथा वशु मुद्रा दिखा
देना इतना करने पर वशु की पूजा हो जाती है। मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—"हुं एक हुं एक वशुकं यं।"

टिप्पणी—

इस मन्त्र के 'यहां वशुकं' शब्द आया है, यहां वशु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

वशु को वश करने का मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को शुभ किसी शुभ पर्व में १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध करना। फिर वशु वश हेतु उसका कहीं रात्रि में समय १००० की संख्या में लिख जप करते रहने से कुछ ही दिनों में वशु वश हो जाता है।

मन्त्र—"त्रिपुरा सहुरिता जी तीर्हि पुरुषे मानि वाह पूज रारे
वैरी रक्त महाउ अजवामी वाल वामी आपत्तिकावा खुद

पृथिवी पाली त्रिपुरासाम्राज्ञी त्रिपुरेश्वरी
श्री मन्त्र जी वशुका के लिए इतना करो करि पड़ा।"

टिप्पणी—

इस मन्त्र में यहां 'वशुका' के वश आया है, यहां वशु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

वशु के ऊपर बैठाल (बैठ) बढ़ाने का मन्त्र

वशु के ऊपर बैठ (बैठाल) बढ़ाने के लिए निम्नलिखित मन्त्र का साधक करना चाहिए—

मन्त्र—"अन्य मुख अन्य रहमान। उसकी छाती चढ़ बैठाल।
उसको छाती न चढ़ें तो मा बहिन की सेज पै सर धरें।
इसी की दुहाई।"

टिप्पणी—

इस मन्त्र में जहां-जहां 'उसकी' शब्द आया है, वहां-वहां वशु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन विधि—

किसी भी शुक्रवार की रात्रि से इस मन्त्र का जप आरम्भ करना चाहिए। सर्व प्रथम पहले वे द्वार मिट्टी से पोंछा लगाएं। फिर उसके ऊपर उत्तर की ओर सिर तथा पैर का दक्षिण करें, तत्पश्चात स्वयं पश्चिम की ओर मुंह करके बैठें तथा सामने फूल एवं रेवड़ी सजाकर रखकर, लोबान को सुलगा देते हुए १०००० की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करें। जप पूरा हो जाने पर रेवड़ियां किसी कन्याओं को देवें। इस विधि से पूर्ण हो जाने पर साधक की रात्रि में सोते समय वश प्राप्त होता है तथा मन्त्र सिद्ध हो जाता है। परन्तु मन्त्र की सिद्धि बनाये रखने के लिए इसका नित्य १०८ की संख्या में जप करते रहना चाहिए।

प्रयोग विधि—

मन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद आवश्यकता के समय, रात्रि में इस मन्त्र का १००० की संख्या में जप करें तथा जप की समाप्ति पर तीन बार उसी की दुहाई दें अर्थात् 'या अली, या अली, या अली' का जोर से उच्चारण करें। **जप-काल** में समय वशु का ध्यान करना तथा मन्त्र में 'उसकी' के स्थान पर वशु के नाम का उच्चारण करते रहना आवश्यक है।

उक्त प्रक्रिया के सम्पूर्ण हो जाने पर शत्रु के ऊपर शैतान चढ़ जाता है।

यदि शत्रु पर चढ़े हुए शैतान को कभी उतारना अभीष्ट हो तो एक गेहूँ की रोटी बनाकर उसे एक ओर घी से चुपड़े तथा उसके ऊपर एक गुड़ की भेली रखकर दरिया (नदी) में बहा दें तो शत्रु के ऊपर चढ़ा हुआ शैतान उतर जायेगा।

शत्रु को परास्त करने का यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर हरताल द्वारा चाहे जिस वस्तु की कलम से लिखकर पूजन करें। यन्त्र के मध्य भाग में जहां 'देवदत्तः' लिखा है, वहां शत्रु का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र का पूजन करें फिर उसे किसी क्वारी कन्या के हाथ से काते गए सूत में लपेट कर पृथ्वी में गाड़ दें तथा उस स्थान के ऊपर बैठकर नित्य प्रातः कुल्ला-दांतौन करने के बाद, उस जगह पर ७ बार लात मारें। जब तक शत्रु परास्त अथवा शरणागत न हो, तब तक इस क्रिया को नित्य करते रहना चाहिए।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

९

(शत्रु को परास्त करने का यन्त्र)

शत्रु की छाती फटने का यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को बकरे के रक्त द्वारा किसी कपड़े पर लिखकर, उसे धोबी के पटले के नीचे गाढ़ दे। जब-जब धोबी उस पटले पर अपने कपड़े पछीटेगा, तब-तब शत्रु की छाती फटा करेगी अर्थात् उसकी छाती में भयंकर दर्द उठा करेगा।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

२०	२७	२	८
७	३	२४	२३
२६	२१	९	१
४	६	२२	२५

१०

(शत्रु की छाती फटने का यन्त्र)

शत्रु ज्वर-कारक यन्त्र

आगे प्रदर्शित यन्त्र को एक कोरे ठीकरे पर लिखें। प्रदर्शित चित्र जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहां शत्रु का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्रलिखनोपरान्त ठीकरे को अग्नि में डाल दें तो शत्रु को ज्वर आ जायेगा। यदि ठीकरे को अग्नि से बाहर निकाल लिया जायेगा तो उसका ज्वर उतर जायेगा।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

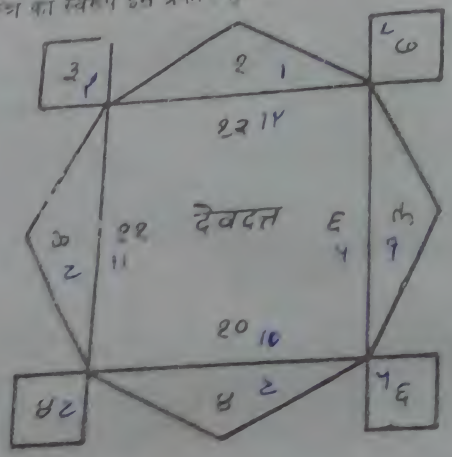

(शत्रु ज्वर-कारक यन्त्र)

शत्रु को कष्ट देने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ काल भैरू कंकाल का वीर मार तोड़ दुश्मन की छाती घोट हाथ काल जो काढ़ बत्तीस दाँत तोड़ यह शब्द ना चले तो खरी जोगिनी का तीर छूटे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्यनाम आदेश गुरु का।"

साधन-विधि—

प्रदोष, होली अथवा दीपावली के रात में १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

कनेर के २१ फूल तथा गुग्गल की २१ गोली लेकर सबको उक्त मन्त्र से अलग अलग अभिमन्त्रित करें फिर उन्हें बराबर के तेल में बनाकर प्रत्येक

फूल तथा गोली को २१-२१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करते हुए अग्नि में होम करें। इस प्रयोग को लगातार २१ दिनों तक करने से बैरी को अत्यधिक कष्ट मिलता है।

अन्यायी-पुरुष को कष्ट देने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को लाल पलंग नौरंगी छाया काढि काढ कलेजा तूही चण्ड।"

साधन-विधि—

चौका लगाकर उस पर दीपक रखकर जलाये तथा तीन बार "आओ महावीर बलवान हनुमान जी"—कहे। फिर तीन बार "आओ कलुआ वीर रणधीर" कहे। फिर गुग्गल को घूनी देकर भोग रक्खे। इस क्रिया को नित्य करते हुए ११ दिनों तक प्रतिदिन १००० की संख्या में उक्त मंत्र का जप करे तथा जप के अन्त में घृत में लौंग, सुपारी, जायफल गुग्गल तथा मिश्री का चूर्ण मिलाकर १२५ बार मंत्र पढ़ कर अग्नि में १२५ आहुति दे। ग्यारह दिनों के बाद दो ब्राह्मणों को भोजन करायें। इस विधि से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय पूर्व कथित नियमानुसार पूजन करके, ११ दिनों तक नित्य १ माला मंत्र का जप करते रहने से, जिस अन्यायी पुरुष के उद्देश्य से प्रयोग किया गया हो, उसे कष्ट प्राप्त होता है।

शत्रु को अपमानित करने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो हनमंत बलवंत माता अंजनी पुत्र हल हलंत आओ चलंत आओ गढ़ किल्ला तोड़ंत आओ लंका जाल बाल भस्मि करि आओ ले लंका लंगूरते लपिटाय सुमेर ले पटिकाओ चन्द्रा चन्द्रावली भवानी मिलि गावें मंगलचार जीते राम लक्ष्मण हनुमानजी आओजी तुम आओ पान का बीड़ा चवंत मस्तक सिन्दूर चढ़ाओ आओ संदोड़ी के सिंहासन डुलंता आओ यहाँ आओ हनुमान मोया

जगाते नृसिंह योगा आगे भैरू किल्किलाय ऊपर हनुमन्त राजे दुर्जन को वार दुष्ट को मार सिहारए जा हमारे मन्त्र गुरू हम तन्त्र गुरू के बालक मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन विधि—

होली, दीवाली, ग्रहण अथवा किसी शुभ मुहूर्त से मन्त्र को जपना आरम्भ करें। 1,25000 की संख्या में जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। २१ दिन या ४० दिन में जप पूरा कर लेना चाहिए। जप की अवधि में मंगल-वार के दिन ७ पान के बीड़ा तथा ७ लड्डू का भोग रखना चाहिए तथा अन्य वारों के लिए १ बीड़ा पान, बताशे रखने चाहिए तथा प्रतिदिन धूप, दीप, नैवेद्य से हनुमान जी का पूजन करना चाहिए एवं इत्र में सिन्दूर मिलाकर तथा सुगन्धित पुष्प चढ़ाने चाहिए। इस विधि से साधना करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

(१) पृथ्वी पर शत्रु की मूर्ति बनाकर उसके आगे प्रदर्शित चित्र के अनुसार यहां-वहां 'हूं' बीज लिखकर मूर्ति की छाती में शत्रु का नाम लिखें। फिर मन्त्र पढ़ कर उसके सिर पर मूठ मारे तो वैरी का सिर घूमता है और वह गिरता है तथा उसकी दृष्टि नष्ट हो जाती है।

अथवा

(२) आगे प्रदर्शित चित्र के अनुसार एक चौक का पुतला बनाकर, उस पर यहां-वहां 'हूं' बीज लिखें। बीज-मन्त्र लिखते समय पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठना चाहिए। पुतले की छाती पर शत्रु का नाम लिखें। फिर पूजे की हल्दी की एक बीज एक पुतले की छाती से बांध कर, पुतले को सम्भाल पूजे में बांध कर, पूजे के हाथ की मालों से उसे ढंक दें तो वैरी बावला होकर दर्शी मारेगा। दर्शी खाने से रक्त उगलेगा और दीवार रहेगा।

जब तक पुतले को पृथ्वी के अन्दर नहीं निकाला जायेगा, तब तक हनुमान के फिर वह हमारी सिफारिशें बढ़ाती रहेंगी। पुतले को उखाड़ कर उसके एक कांटेदार, कपड़ा बांध कर जलाना।

(पुतले को अभिमन्त्रित करने के मन्त्र की विधि का चित्र)

इस प्रयोग को करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जो मुख की ओर, वह मन्त्र पढ़ते हुए ही करें। कोई को ४ कोणों को वैरी के घर की चारों दिशाओं में गाड़ देना चाहिए। इससे सम्मान होता है।

जिस समय पुतले का चित्र पृथ्वी पर बनाये अथवा कोयला का पुतला बनाये अथवा स्मशान की कीलों को गाड़े, उस समय हनुमान जी को चौरा का भोग लगाना चाहिए।

शत्रु-मुख-बंधन मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं श्री केवल वीर चौंपट चौंसठो प्रतिहार मम शत्रून् अमुकस्य मुख बन्धन कुरु-कुरु स्वाहा।"

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहां 'अमुकस्य' शब्द आया है वहां शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

उक्त मन्त्र ग्रहण, होली अथवा दिवाली की रात्रि में १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

घृत तथा शहद की अग्नि में १००० आहुतियां दें। प्रत्येक आहुति देते समय उक्त मन्त्र का उच्चारण करें। फिर लोहे की ४ अँगुल की एक कील को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर श्मशान में गाड दे तथा उसे गाड़ते समय भी मन्त्रोच्चारण करें। इस प्रयोग से शत्रु का मुँह बन्द हो जाता है।

शत्रु-बुद्धि स्तम्भ मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धि स्तम्भनं कुरु-कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि—

पूर्वोक्त मन्त्र के अनुसार।

प्रयोग-विधि—

ऊँट की लीद को छाया में सुखाकर उसमें से १ रत्तीभर पान में रक्खे तथा उस पर १०८ बार मन्त्र पढ़ कर शत्रु को वह पान खिला दें तो वह बावला हो जाता है।

शत्रु-मुख-स्तम्भन मन्त्र (१)

मन्त्र—(१) "अलफ अलफ दुश्मन के मुँह में कुलफ मेरे हाथ कुन्जी रूपा रेत कर, दुश्मन को जेर कर।"

साधन-विधि—

किसी शनिवार से आरम्भ कर ७ दिन-रात्रि में घृत का दीपक जला कर तथा फूल-बताशे चढ़ाकर, नित्य कपूर के १००० टुकड़ों को मन्त्र पढ़-पढ़ कर, अग्नि में डालें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

न्यायालय (अदालत) में मुकद्दमा चलते समय इस मन्त्र को मन-ही-मन १०८ बार पढ़कर शत्रु से बात करें तथा उसकी ओर फूँक मारें तो उसका मुँह बन्द हो जाय और कुछ बोल न सकें।

इसी मन्त्र को १०८ बार पढ़ कर अर्जी (आवेदन पत्र) पर फूँक मारें तथा उसे लोबान की धूनी देकर, हाकिम के हाथ में दें तो मनोरथ सिद्ध होगा अर्थात् हाकिम उस अर्जी को मजूर कर लेगा।

शत्रु-मुख-स्तम्भन मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो या वली या वली उसका चश्मा कुलफ उसका बाजू कुलफ दुश्मन को जेर कर हमको सेर।"

साधन-विधि—

हनुमानजी का विधि पूर्वक पूजन करके गुग्गुल की १००० डली, प्रत्येक को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करते हुए अग्नि में डालें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय इस मन्त्र को ७ या ११ बार पढ़ कर दुश्मन की ओर फूँक मार देने से उसका मुँह बन्द हो जाता है और वह अदालत में बकवास नहीं कर पाता।

शत्रु-मुख-स्तम्भन मन्त्र (३)

मन्त्र—"शाह आलम कुतुब आलम जेर कर दुश्मन दफे करो जालिम।"

साधन-विधि—

किसी शुभ महीने के शुक्ल पक्ष की पहली जुमेरात से आरम्भ करके ८ दिनों तक नित्य ४० बार मन्त्र का जप करें तथा रात्रि के समय दीपक जलाकर फूल-बताशे चढ़ा कर लोबान की धूनी दें तथा रेवड़ी चढ़ावें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

साधन-विधि—

आवश्यकता के समय शत्रु का नाम लेकर [illegible]

शत्रु के घुसा मारने का मन्त्र

मन्त्र—"घुसुघुसायेम घसाक माखिए।"

साधन-विधि—

पूरा मन्त्र का जिस दिन [illegible] को पूरा हो जाय, उस दिन [illegible]

प्रयोग विधि—

घुसा, लोहांग, अंकुश, कीलों का तेल, लालमिर्च, अरण्डा और धतूरा आदि-इन सबको [illegible] कूट कर ले। फिर इनकी घुसा बनाने के लिये दे दें और ७० दिन तक [illegible] का एक मुख मनुष्य पुतला बनाकर सुखा लें, फिर उसे अपने सामने रखकर बीच तथा शत्रु का ध्यान करके [illegible] के १०८ दाने वाली माला पर उक्त लिखे मन्त्र का जप करें। एक माला का जप पूरा हो जाने पर, उस पुतले को घसे एक घुसा मारें। इसी प्रकार १०० माला का जप करें तथा पुतले को १०० घुसे लगायें साथ में शत्रु को देते जायें।

इस प्रयोग को ७ दिन तक लगातार करते रहने से शत्रु पर कहीं घुसे पड़ते हैं। यदि इस मन्त्र का जप तथा प्रयोग लगातार ४० दिन तक किया जाय तो शत्रु का अवश्य मरण हो जाता है।

शत्रु को आवद्ध करने का मन्त्र

मन्त्र—"जाग जागरे मसान मेरे सुरति करि करि फलाने का बेटा फलाने के घर ब्याय जो न जाय तो तेरी मां बहिन की तीन तलाक।"

टिप्पणी—

इस मन्त्र में जहां 'फलाने का बेटा फलाने' शब्द आया है, वहां शत्रु के पिता का नाम तथा शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। जैसे—"रामलाल का बेटा देवकीनन्दन के घर जाय" इत्यादि।

साधन-विधि—

इस मन्त्र को सिद्धि-योग में १०८ बार जप का सिद्ध कर लें।

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय किसी कक्ष में एक सूकर का बांस गाड़ दें तथा २१ दिनों तक उसी कक्ष के पास खड़े होकर उक्त मन्त्र का रात्रि के समय जप करें तो शत्रु का अपने घर से निकलना बन्द हो जाता है। यदि शत्रु को घर से बाहर निकलने देना हो तो कक्ष में गाड़े गये सूकर के बांस को बाहर निकाल लेना चाहिए।

शत्रु पीड़ा-कारक एवं मारण प्रयोग

मन्त्र—"बार बाडौ बार निकाले जाकाट धारली सूआंपे लग बहरला चौहाथ से तो काट दोत से दुहाई मासा हुवा को।"

साधन-विधि—

पहले कक्ष पर पीला मिट्टी से चौका लगावें। फिर उसके ऊपर सफेद चादर बिछाकर, उसके ऊपर पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके बैठ जांय तथा एक घी का दीपक जलाकर अपने सामने रख लें। साथ में घोड़ा का हलुआ, दो पूड़ी, इक्, मेवा तथा गांजे की चिलम—इन सब पदार्थों को रखें। दीपक के आगे लौंग के दो जोड़े तथा एक नीबू को रख कर, लोबान को धूप दें तथा मन्त्र को जपें। तत्पश्चात् सम्पूर्ण वस्तुओं को किसी नदी के पानी में फेंक दें। परन्तु नीबू और दीपक को वहीं रखा रहने दें।

अन्त में पूर्वोक्त मन्त्र से नीबू को १०१ बार अभिमन्त्रित करके उसे छेदें अर्थात् नीबू में किसी लोहे की कील आदि से छेद करें।

उक्त प्रक्रिया को ४० दिन तक नित्य दुहराते रहने से शत्रु के उदर (पेट) में पीड़ा होने लगेगी और अन्तिम दिन जब नीबू को छेदा जावेगा, तब उसकी मृत्यु हो जावेगी।

शत्रु-मारण मन्त्र

मन्त्र—"ऐं दूं ऐं श्री मम शत्रु न् हानय हानय घातय घातय मारय मारय हुँ फट् स्वाहा।"

SHAIKH ABDUL GAFAR,RMU,COIMB

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय शत्रु पर यह मन्त्र पढ़कर फूंक मारने से उसका बोलना बन्द हो जाता है।

शत्रु के जूता लगाने का मन्त्र

मन्त्र—"इसूनामोन सलास सातिन्।"

साधन-विधि—

एक माला का नित्य जप करें। जब १०००० की संख्या में जप पूरा हो जाय, तब अमल करना चाहिए।

प्रयोग विधि—

फूल, लोबान, सन्दल, चमेली का तेल, कस्तूरी, अरगजा और दशांग अगर-इन सबको समभाग (बराबर-बराबर) लेकर चूर्ण कर लें। फिर इनको घृत चमेली के तेल में दें और ४० दिन तक अमल करें। तदुपरान्त मिट्टी का एक खूब मजबूत पुतला बनाकर सुखा लें, फिर उसे अपने सामने रखकर बैठें तथा शत्रु का ध्यान करके जौपापोता के १०८ दाने वाली माला पर ऊपर लिखे मन्त्र का जप करें। एक माला का जप पूरा हो जाने पर, उस पुतले की पीठ पर एक जूता मारें। इसी प्रकार १०० माला का जप करें तथा पुतले को १०० जूते लगायें साथ में धूप भी देते जायें।

इस प्रयोग को ७ दिन तक लगातार करते रहने से शत्रु पर कहीं जूते पड़ते हैं। यदि इस मन्त्र का जप तथा प्रयोग लगातार ४० दिन तक किया जाय तो शत्रु का उपाद कट जाता है।

शत्रु को आबद्ध करने का मन्त्र

मन्त्र—"जाग जागरे मसान मेरे सुरति करि करि फलाने का बेटा फलाने के घर जाय जो न जाय तो तेरी मां बहिन की तीन तलाक।"

टिप्पणी—

इस मन्त्र में जहाँ 'फलाने का बेटा फलाने' शब्द आया है, वहाँ शत्रु के पिता का नाम तथा शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। जैसे—"रामलाल का बेटा देवकीनन्दन के घर जाय" इत्यादि।

साधन-विधि—

इस मन्त्र को सिद्धि-दीप से १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें।

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय किसी कक्ष में एक सूकर का दाँत गाड़ दें तथा २१ दिनों तक उसी कक्ष के पास खड़े होकर उक्त मन्त्र का रात्रि के समय जप करें तो शत्रु का अपने घर से निकलना बन्द हो जाता है। यदि शत्रु को घर से बाहर निकलने देना हो तो कक्ष में गाड़े गये सूकर के दाँत को बाहर निकाल लेना चाहिए।

शत्रु पीड़ा-कारक एवं मारक प्रयोग

मन्त्र—"बार बांधौ बार निकाले जाकाट धारनी मूजाँदि लय बहरना चौहाथ से तौ काट दाँत से दुहाई मामा हवा को।"

साधन-विधि—

पहले फर्श पर पीला-मिट्टी से चौका लगादें। फिर उसके ऊपर सफेद चादर बिछाकर, उसके ऊपर पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके बैठ जाँय तथा एक घी का दीपक जलाकर अपने सामने रख लें। साथ में घोड़ा का हत्थुआ, दो पूड़ी, इत्र, मेवा तथा गाँजे की चिलम—इन सब पदार्थों को रखें। दीपक के आगे लौंग के दो जोड़े तथा एक नीबू को रख कर, लोबान की धूप दें तथा मन्त्र को जपें। तत्पश्चात् सम्पूर्ण वस्तुओं को किसी नदी के पानी में फेंक दें। परन्तु नीबू और दीपक को वहीं रखा रहने दें।

अन्त में पूर्वोक्त मन्त्र से नीबू को १०१ बार अभिमन्त्रित करके उसे छेदें अर्थात् नीबू में किसी लोहे की कील आदि से छेद करें।

उक्त प्रक्रिया को ४० दिन तक नित्य दुहराते रहने से शत्रु के उदर (पेट) में पीड़ा होने लगेगी और अन्तिम दिन जब नीबू को छेदा जायेगा, तब उसकी मृत्यु हो जायेगी।

शत्रु-मारण मन्त्र

मन्त्र—"ऐं ह्रूं ऐं श्री मम शत्रु न् हानय हानय घातय घातय मारय मारय हुँ फट् स्वाहा।"

[illegible]

[illegible] अब [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

अथकरांगन्यास—"ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः
"ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।
"ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ।
"ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां वौषट् ।
"ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां हुं ।
"ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥

अथहृदयादिन्यास—"ॐ ह्रां हृदयाय नमः ।
"ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ।
"ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ।
"ॐ ह्रैं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
"ॐ ह्रौं कवचाय हुं ।
"ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ।"

अथ ध्यानं—"वादीमूकतिरस्कृतिक्षितिपति
वैरस्यानरः जीवति ।
क्रोधी गच्छति दुर्जनः सुजनति
क्षिप्रानुगः खंजति ॥
गर्वीखर्वति सर्वविच्च जडति
त्वन्मंत्रणा यंत्रतः ।
श्रीविश्वं वगलामुखि प्रतिदिनं
कल्याणि तुभ्यं नमः ॥"

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का जप कर।

अथ मन्त्र—ॐ ह्रीं बगुलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय
जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ।"

साधन विधि—

किसी शुभ मुहूर्त में मन्त्र की साधना आरम्भ करें। इस जिस के साथ की साधना में अपने में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर इसे साधना का प्रयोग न कर सके तो इस जिस में [illegible] जप कर, हवन का दशांश होम करें। होम का उपयुक्त साधन कर पहले साधना का पूर्णांश साधना पीठन कराये, तो भी यह मन्त्र अवश्यकारी फल प्रदर्शित करता है, परन्तु पूर्ण रोग तथा आरोग्य का ही है। इसका जप मन्त्र उच्चारण, जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश अभिषेक करवाना चाहिए।

मन्त्र पूजन—

इस मन्त्र का जप करने समय नीचे प्रदर्शित चित्र के अनुसार यंत्र बीज यंत्र बनाकर उसका विधिवत् पूजन करना भी आवश्यक होता है। यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार होता—

(षट्कोण यन्त्र)

इस यन्त्र को निर्दोष तथा पूजन करते समय साधक को पीले वस्त्र पहिन कर पीले रंग के आसन पर बैठना चाहिए। पीले या सोने या केशर मिलाकर उसे पीले रंग का कर लें तथा उस पुते की पीपल से बने कलम से या पीला रंगकर, उसको बची स्याही से यन्त्र बना लें। तत्पश्चात् एक ताँबे की थाली में किसी हुई हल्दी से अष्टकोण यन्त्र का निर्माण करें। यन्त्र के बाहरी कोणों में 'ऊँ' तथा मध्य चक्र में केशर से 'ह्रीं' लिखें।

तैलाभ्यक्त हल्दी से जोता बना कर, उस पर यन्त्र को स्थापित कर, पूजन आचमन आदि से षोडशोपचार पूजन कर, पीले रंग के पुष्प चढ़ाने तथा केशर से पूजन कर, पीले अक्षत चढ़ाकर, पीले नैवेद्य का भोग लगें। तदुपरान्त मन्त्र का जप आरम्भ करें।

प्रयोग विधि—

आवश्यकता के समय इस यन्त्र को पढ़ कर दुश्मन के मुँह की ओर फूँक मार दें तो उसका मुँह बन्द हो जाता है। यदि हाकिम या अफसर से नौकरी लेकर बात करना हो तो उसके मुँह की ओर मन्त्र पढ़कर फूँक मारने से भी ऐसा ही प्रभाव होता है अर्थात् हाकिम या अफसर का दुर्व्यवहार बदल जाता है और वह साधक से सन्तुष्ट हो जाता है।

६ | बन्दी-मोक्षण प्रयोग

बन्दी-मोक्षण के सम्बन्ध में

'बन्दी मोक्षण' का अर्थ है बन्धन में पड़े हुए किसी व्यक्ति को बन्धन मुक्त कराना।

वर्तमान समय में बन्दी व्यक्तियों की दो श्रेणियाँ हैं—(१) जिन्हें न्यायालय द्वारा दण्डित किया गया हो और जो कारागार में कैदी के रूप में बन्दी-जीवन बिता रहे हों तथा (२) जिन्हें किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह ने अवैध रूप से अपने घर में ले रखा हो और उसे अपने घर न जाने दे रहे हों। दूसरी प्रकार के बन्दी प्रायः डकैतों द्वारा अपहरण किये गये लोग होते हैं।

बन्दी-मोक्षण के प्रयोग उक्त दूसरी प्रकार के लोगों को बन्धन मुक्त कराने में विशेष प्रभावकारी सिद्ध होते हैं। साथ ही, कारागार में बन्द 'बन्दी' को भी राहत पहुँचाने वाले सिद्ध होते हैं अर्थात् इन प्रयोगों के साधन से यदि कोई व्यक्ति कारागार में बन्द है, तो उसे शीघ्र छोड़ देने के विषय में न्यायालय द्वारा पुनर्विचार किया जा सकता है तथा इस दिशा में किये गए प्रयत्न सफल सिद्ध हो सकते हैं।

कारागार की सजा प्राप्त बन्दियों के अतिरिक्त, अपहरण करके बन्दी बनाये गए लोगों के प्रति इन साधनों का यह लाभ होता है कि अपहरण-कर्ताओं की मनःस्थिति बदल जाती है और वे स्वयं के द्वारा बन्दी बनाये गये व्यक्ति को छोड़ देते हैं अथवा बन्दी व्यक्ति को कोई ऐसा सुअवसर उपलब्ध हो जाता है, जिसका लाभ उठाकर वह स्वतः ही घर लौट आता है।

इस प्रकरण में बन्दी-मोक्षण विषयक कुछ मन्त्र-साधनों का उल्लेख किया गया है।

वन्दी-मोक्ष मन्त्र (१)

निम्नलिखित मे से किसी भी एक मन्त्र का प्रयोग किसी बन्धन में पड़े हुए मनुष्य (बंदी) को छुड़ाने के लिये किया जाता है—

मन्त्र—"ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख गदा प्रहारिणी अमुकस्य बंदी खलास ।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहां 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहां जिस बंदी व्यक्ति को बधन से छुड़ाना अभीष्ट हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

साधन विधि—

सूर्य ग्रहण अथवा दीवाली की रात्रि में यह मत्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है ।

प्रयोग विधि—

इस मन्त्र को २१ बार पढने से बन्दी व्यक्ति बंधन से छूट जाता है ।

वन्दी-मोक्ष मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ गज गतेऽम कुरते दाम डंडंस्त फेफेफेत्कार फारै विशिप ज्वाला माला करालं हो हो होनि हांतं हसि हसि मनिसभा सपाटा रहा सेहं कारणा नोदोस्ति खन कुरुते सर्वतु मुखं जति ।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार ।

वन्दी मोक्ष मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ छोटि मोटि वेटुकी कानो कटुकइ इताहसा एक विदुजइ ममीजइ सविदु जाइ अमुका का विबंधि पवधि दोषो कामाक्षा देवी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ।

टिप्पणी—

इस मन्त्र में जहां 'अमुका' शब्द आया है वहां वन्दी-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार ।

वन्दी-मोक्ष मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ नमोस्तुते भगवते पार्श्वचन्द्राधरेन्द्र पद्मावती सहिताय मेऽभीष्ट सिद्धि दुष्टग्रहं भस्म भक्ष्य स्वाहा स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा हिलि हिलि मातंगिनि स्वाहा स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा ।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार ।

वन्दी-मोक्ष मन्त्र (५)

मन्त्र—"बाघ वाहिनि सिंहेया काली काली कालाम्बी आजा देवी मैं तोरी शरणे बने नाही विशस तोहि देवी त्रिभुवन रे माप चौषष्टि बन्धन काटार भांगी अपिला बाघ बाघ थापा एनी अल चाषीष्ट बंधन होइत्र वीरल काली काया छोड़े हंकार चौषष्टि बन्धन काटार भागिभल छार थार कालिकार आज्ञा ।"

साधन विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार ।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को १०८-१०८ बार करके दो बार अर्थात् कुल २१६ बार पढ़ने से बन्दीगृह में अनेक प्रकार के छिद्र खुल जाते हैं, ताकि उनमें से बन्दी सरलता पूर्वक बाहर निकल सके । फिर इसी मन्त्र को २१ बार पढ़ कर हाथ की अंगुली द्वारा प्रहार करने मात्र से ही बन्दीगृह का द्वार खुल जाता है । तत्पश्चात्

"ॐ दं हूं ॐ आये आये चिविठि होलो वभनंदिका कालिका"—

इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित सफेद सरसो तथा सफेद पुष्पों को बन्दीगृह के पहले द्वार पर डाल देने से शेष सभी दरवाजे खुल जाते हैं ।

७ गर्भ, प्रसव एवं रजोधर्म संबंधी प्रयोग

गर्भ, प्रसव एवं रजोधर्म के विषय में

इस प्रकरण में वंध्यत्व-दोष-नाशक, गर्भ-स्थिति कारक, गर्भ-रक्षक, सुख पूर्वक प्रसव कराने में समर्थ तथा असमय प्रारम्भ होने वाले रजः-स्राव को, जिसके कारण गर्भ के गिर जाने का खतरा हो, रोकने वाले मन्त्र-साधनों का उल्लेख किया जा रहा है।

नियोग-विधि से गर्भ-धारण की प्रथा प्राचीन काल से भारत में भी प्रचलित थी, जिसका उल्लेख पुराणादि ग्रन्थों में पाया जाता है। नियोग-विधि अपनाये जाने पर भी यदि गर्भ-स्थिति न हो तो सारा प्रयत्न ही निष्फल हो जाता है। ऐसे अवसर पर मन्त्र-प्रयोग सहित किये गये प्रयत्न सफलता दायक सिद्ध हो सकते हैं।

इसी प्रकार गर्भस्थ-शिशु की रक्षा एवं गर्भ-स्राव अथवा गर्भपात को रोकने में भी मन्त्र-प्रयोग अपना चमत्कारी प्रभाव दिखाते हैं। आकस्मिक रूप से होने वाला रजः-स्राव गर्भच्युति का कारण तो बनता ही है, स्त्री के स्वास्थ्य के लिए भी विशेष हानिप्रद सिद्ध होता है। इन संकटों पर भी मन्त्र-साधन द्वारा नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है।

प्रसव के समय अभूतपूर्व वेदना होती है, उसे कम करने में 'सुख-प्रसव' के मन्त्र-प्रयोग हितकर सिद्ध होते हैं। अस्तु, इनका समयानुसार उचित प्रयोग करना आवश्यक है।

नियोग-विधि से गर्भ-धारण का मन्त्र

जो स्त्रियाँ बाँझ हों और जिनके पति सन्तानोत्पादन करने में असमर्थ (नपुंसक) हों, वे यदि नियोग-विधि (पर-पुरुष के साथ सहवास के गर्भ-स्थिति) को अपनाना चाहें तो निम्नलिखित मन्त्रों के प्रयोग से उन्हें एक बार पुत्र का लाभ हो सकता है। इन मन्त्रों के प्रयोग के साथ शर्त

यही है कि गर्भ-स्थिति के लिए पर-पुरुष के वीर्य का ही उपयोग करना चाहिए।

मन्त्र—"विष्णुर्योनि कलपयतुत्वष्टारूपाणि पिंशतु आसि ब्रजेतु प्रजापतिर्धाता गर्भ विदधातु गर्भधेहि सिनीवाली गर्भं धेहि सरस्वती गर्भते अश्विनौ देवा अधत्तांपुष्कर स्रजौ।"

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को ३, ७ अथवा २१ बार पढ़कर वीर्य धारण करना चाहिए।

नियोग-विधि से गर्भ-धारण का मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमो आदेश गुरु को वांझिन पुत्रिनि एक वांझ मराक्ष जाति चौथी गर्भ पालिनी चारि उन्हि एकमत भय चली चली कामरू गई कामरू देश कामाक्षा रानी ते इस्माइल योगी बषानी तुम जाहु योगि के पास पूरहि तो हरि मन के आस इस्माइल के संग उन्ह रतिकइ आंतर भेंटनो नावमा इनी से भइ नोने कहा तहु चारिहु छिनारी कोषित निति कीन्हन देहगारी कोषि निति कुन्ती पाँच संगषेली एक द्रोपदी पाँच के सहेली सूरज देवता साषी होहु मोरे जिवमे भा सन्ताप मोहि तजि लागे पर पुरुष के पाप एक बूँद निति अकरम कीन्ह तेहिते है वंश कर चीन्ह शिववाचा ब्रह्मवाचा लेहु जमाउ ठोना टमाना भूत प्रेत दोष रोग जो लाख होइ तेहि जग चण्डी जाउ हरिजंबीर।"

प्रयोग विधि—

इस मन्त्र को १ या ३ बार पढ़ कर वीर्य धारण करना चाहिए।

गर्भ-रक्षा मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ [illegible] गोरख बेटा [illegible] ईश्वर की माया।"

प्रयोग-विधि—

[illegible] कुमारी कन्या के हाथ से कातते हुए सूत का लच्छा बनवाकर उसे इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर गर्भवती-स्त्री की कमर में बांधे। इससे गर्भ की रक्षा होती है।

गर्भ-रक्षा मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरू को ॐ बाबा अजूं तें बांधि राख नृसिंह जती सीस तें बांधि राख श्री गोरखनाथ कालतें बांधि राख हयूली का राजा मूंदी तें बांधि राख दुर्वासन देवी यह मन पवन काया का राख बांधे गर्भ और बांधे घाव थांभे माता पारवती गंडो डोडे ईश्वर-जती जब लग गंडो कट पर रहै तब लग गर्भ काया में रहे गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

प्रयोग-विधि—

कुवारी-कन्या के हाथ से कातते हुए सूत द्वारा गर्भवती-स्त्री के शरीर की एड़ी से चोटी तक ७ बार नाप कर उसकी ७ लड़ बनायें फिर ७ बार मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसमें ७ गांठें लगायें. तदुपरान्त उसे गर्भवती स्त्री की कमर में बांध दें। जब ९ महीने पूरे हो जाँय, तब उसे खोल दें। कमर में बाँधने से पूर्व गण्डे की गूगल की धूनी देनी चाहिए तथा फूल चढ़ाने चाहिए। साथ ही सवा पाव मिठाई बच्चों को खिलायें। जब तक यह गण्डा बँधा रहेगा, तब तक गर्भ स्थिर रहेगा। प्रसव का समय समीप आने पर ही इसे खोलना चाहिए।

गर्भ-रक्षा मन्त्र (५)

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरू को हनुमंत वीर गंभीर बूजे धरती धंधावे धीर बांध बांध हनुमंता वीर मास एक बांधूं, मास दोइ बांधूं, मास तीन बांधूं, मास चार बांधूं, मास पांच बांधूं, मास छः बांधूं, मास सात बांधूं, मास आठ बांधूं, मास नौ बांधूं, अमुकी को गर्भ थिरे नहीं ठांह को ठांह रहे, ठांह को ठांह न रहे मेरा बांधा बंध छूटे तो ईश्वर

महादेव गुरू गोरखनाथ जती हनुमन्त वीर लाजें मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ गर्भवती-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

प्रयोग विधि—

मन्त्र संख्या ४ के अनुसार अथवा एक ही डोरे में दोनों मन्त्रों को पढ़कर गर्भवती की कमर में बाँधे ।

गर्भ-रक्षा मन्त्र (६)

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरू को जभीर वीर परधान हर अठोतर से गर्भ ही ताणों तणे पाचे न फूटे न पीड़ा करे तो जभीर वीर की आज्ञा फुरो गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।"

प्रयोग-विधि—

६ क्वारी कन्याओं से रविवार के दिन सूत कतवा कर ६ तार का डोरा गर्भवती-स्त्री की एड़ी से चोटी तक नाप के, उसमें मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ६ गाँठ बांधें तथा उसे गूगल की धूनी देकर गर्भवती स्त्री की कमर से बांध दें । इसके प्रभाव से ३ दिन के भीतर ही गर्भस्राव, पैर कटना आदि अलक्षण दूर हो जाते हैं तथा गर्भ स्थिर बना रहता है । प्रसव के समय डोरा खोल देना चाहिए ।

सुख-प्रसव का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ श्रावणो बंचगर्भां च सुखमेव प्रसूयते ।"

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र द्वारा पानी को ७ बार अभिमन्त्रित कर, वह पानी प्रसूतिका को पिला देने से प्रसव शीघ्र तथा सुखपूर्वक होता है ।

सुख-प्रसव का मन्त्र

नीचे प्रदर्शित यंत्र को काँसे की थाली में लिखकर गर्भिणी प्रसवा सन्ना-स्त्री को दिखाते रहने से सुख पूर्वक सन्तान उत्पन्न होती है तथा प्रसव के समय कोई विशेष कष्ट नहीं होता ।

६	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

(सुख-प्रसव यन्त्र)

गर्भ-स्राव स्तंभन मन्त्र

मन्त्र—"ॐह्रां ह्रीं चल चलेहुः चल मलेहुँः ठः ठः ठः स्वाहा ।"

प्रयोग-विधि—

उक्त मन्त्र से अभिमंत्रित २१ गांठों वाला कच्चे सूत का डोरा गर्भवती की कमर से बाँध देने से गर्भस्राव नहीं होता ।

स्त्री के पैर थामने का मन्त्र

मन्त्र—"ठिम ठिम अमुकी श्रोणितं एषि एषि धूतं ह्रीं स्वाहा ।"

टिप्पणी—

इस मंत्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

मन्त्र—"गुरु सत्य बिस्मिल्लाह का पूज्योमा आवनकार आदि गुरु सृष्टि करतार वेद बहर तारांहि एकी आद युग चारि तीन लोक वेद चारि पाँचों पांडव छव मारग सात समुद्र आठ वसु नव ग्रह दश रावण ग्यारह रुद्र बारह राशि तेरह मोल चौदह शोक पन्द्रह तिथि चारि खानि चारि वानि पाँच भूत चौरासी आत्मा लाषित अयानि अष्ट कुली नाग तेंतीस कोटि देवता आकाश पाताल मृत्यु लोक रात दिन पहर घरी दण्ड पल विपल महारथ साधिधरमेहौं अब जो कछु फनाने के पीरा देव दानव भूत प्रेत राखी सुजानु बिनानु किताकरणादिनाद्या आगाठिमुठिरषणी सुखणी बिलनी फोटीरीगद्दहीनी नाईक पोलाद अद्धोषीकरण मूलवायु मूलुण सुरु ननहरू बागद्दरू बाजगरू कर रक्षपीत मूत्र कुछ डाढारहू प्रमेह गोला प्लीहा यहरुआ अहोगा सोगा अर्धशीशी कुटी कुनी बुवारी मिरगी कमलवाई हंडी आनुवावुहयेलगटक्र, आयु खोटघट रितारिकारा पालमायापर पितोरंगा उलंघा डाटघाट बाहर निसार पसार सौंज सवार कीनहू प्रकार होद हाडउदवार चामराटी अर्द्ध अंग यहारखी दोहाई अलिमार पैगम्बर की तुरन्त बिसाही पीन आही नाहर बला लाख पैगम्बर की ब्रह्मचार नवनाथ चौरासी सिद्धि के करण उपकरणूरी आंह आसीर मनेरी की शक्ति बाढा आदम की शक्ति अरिजस्म होद आय आंह सिद्धिसिद्ध आंह आद सिद्ध बुलल दोष सिट् सिट् स्वाहा।"

भूत-डायन गलनाल झाड़ने का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए झाड़ा देने से भूत, डायन तथा गलनाल की बाधा दूर होती है।

मन्त्र—"जैसे कौलोमाकार्य सक्ते करि करिबो न करो वर्षी तते राम लक्ष्मण सीतेया कार कोटि कोटि आज्ञा।"

भूत नाशक मंत्र

निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार उच्चारण करते हुए भूत-ग्रस्त रोगी के शरीर में तेल लगाने से भूत पुकारने लगता है तथा स्वग्रस्त व्यक्ति को छोड़कर भाग जाता है।

मन्त्र—"ॐ नमो कालो कपाली दही दही स्वाहा।"

राक्षस-नाशक मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा देने से राक्षस का उन्माद दूर हो जाता है।

मन्त्र—"ॐ ह्रीं ठं ठीं हूं हूं हैं हौं ठौं ठ ठ अमुक हूं।"

टिप्पणी—

इस मंत्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ राक्षस-ग्रस्त रोगी व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

भूतादि नाशक मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमः रत्नप्रभावासिने भूताधीनां रक्षाधन कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

रविवार के दिन शिरस से पत्ते तथा फूल लाकर, उन्हें सुखा कर और किसी की विष्टा, ईंट के कोयले, राख, नमक, कोयले को बराबर मात्रा

कड़ुआ (सरसों का) तेल डालकर, उक्त मंत्र को १०८ बार जपकर धूप देने से भूत, प्रेत, राक्षस, बैताल, देव, दानव, खेचर, डाकिनी, प्रेतिनी, भूतिनी आदि हर प्रकार की बाधायें दूर होती हैं।

मसान-बाधा नाशक मन्त्र

मंत्र—"सपेदा मसान गुरु गोरख की आन, यमदण्ड मसान काल भैरों की आन, सुकिया मसान नुनिया चमारी की आन, फुलिया मसान गोरे भैरों की आन, हलदिया मसान ककौडा भैरों की आन, पीलिया मसान दिल्ली की जोगिनी की आन, कमेदिया मसान कालका की आन, कीकडिया मसान दामचन्द्रजो की आन, मिचमिचिया मसान शिवशंकर की आन, सिसिलिया मसान बीर मौहम्मदा पीर की आन।"

सर्व बाधा-नाशक मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को पहले ग्रहण के समय १०८ बार जपकर सिद्ध करलें। फिर सिद्ध मन्त्र द्वारा झाड़ा देने से सब प्रकार की बाधा दूर होती है।

मंत्र—"सतनाम आदेस गुरु की आदेश पवन पानी का नाद अनाहद दुन्दुभी बाजै जहां बैंठी जोगमाया साजे चौंसठ जोगनी बावन बीर बालक की हरें सब पीर आणे जात शीतला जानिये बन्ध बन्ध बारे जात मसान भूत बन्ध प्रेत बन्ध छल बन्ध छिद्र बन्ध सबको मारकर भसमन्त सतनाम आदेश गुरु की।"

प्रेत बरावे (भगाने) का मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर प्रेत-ग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा देने से प्रेत भाग जाता है—

मन्त्र—"बांधो भूत जहाँ तु उपजो छाड़ो गिरे पर्वत बहाड मर्ग दुहेली पृथिवी तुजभि छिलिमिलाहि हैंकारे हनुवन्त पचारइ भीमा जारि जारि जारि भस्म करे जो चांपेसींउ।"

डाइन-चुड़ैल आदि भगाने का देवी मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर झाड़ा देने से डाइन-चुड़ैल आदि की व्याधा दूर हो जाती है—

मन्त्र—"ॐ रुनुं झुनुं इमृत मारातं देवी आरम्पर तारा वीर-मान्यो वीर तोन्यो हांक-डांक महिमथन करणजोग भोग जोग धर छतीस नक्षत्र धर सर्प पति वासुकी धर सात ब्रह्माडे पति ब्रह्मो के छायाधो देवीधो देवताधो डाइ-निधो गुरुराणाधो भूतधो प्रेतधो धरधर माँ चण्डी बीज करुवालपण्डी धौर्यवागुटिनां य दाददलीं इमानको चलन्ते केके जाते आर रे वीर भैरवी कामरूप काम-चण्डी धर-धर वाकी महा काव्य करे मडरुमारी कुकी धर वारण धौरवलीते ते कामरू कामचण्डी इटमाया प्रसरणि कोटि-कोटि आज्ञादेवी रामचण्डो बीजे चलि-पण्डो चौदिगे ऐरलदेवी वसिलाकिमाँडि चण्डिचन्द्र चमेकिले सूर्यटरिल ऐरलदेवी हराहरांपरि मुखिला कोटरे जीवो परांद्रिवाहन्ते खप्पर दाहिने हाथे छुरि ऐरलादेवी अवरतारि डाइनि बाँधो चुरइलि बाँधु गुनो बाँधु मीरा बाँधु मसानी बाँधु गुनिया नासुनी आवे गरणि आंबु लावे राण्डे माला डांडे जीवतडांडे हमै खेलै भारिवन झारोवलिते ते ते कामरू कामचण्डि कोटिश आज्ञा।"

[illegible] चित्र-विचित्रांक आलेख

[illegible] चित्र-विचित्रांक आलेख को आलेखन के लिए आलेख लेखकों ने विभिन्न [illegible] किए [illegible] करते हैं, जो कि निम्नांकित हैं :

[illegible] चित्र-विचित्रांक आलेख

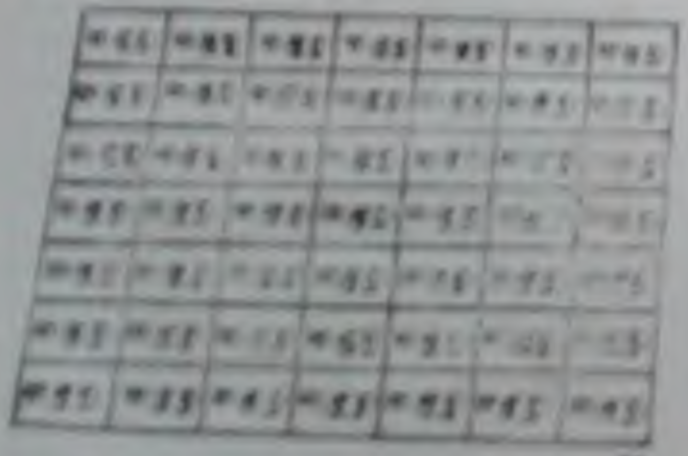

[illegible] चित्र-विचित्रांक आलेख

[illegible] की अवधारणा का आलेख (1)

आलेख (1)—"[illegible] की [illegible] [illegible] विभिन्न विभाग [illegible] आलेख, [illegible] [illegible] [illegible]

पीवे, बारा बकरा खाय न धाये, तो नाहरसिंह तू दौड़ मसाणा जाय सात पांच ने मार खाय सात पांच ने चख खाइ देखूं नाहरसिंह वीर तेरे मंत्र की शक्ति हाड़ा हाड़ में सूं, चाम चाम में सूं, नख नख में सूं, रोम रोम सूं, बार बार में सूं अमुकी के नौ नारी बहत्तर कोठा में सो खेद को पकड़ आणि हाजिर ना करे तो माता नाहरी का चूंखा दूध हराम करे, राजा रामचन्द्र की पौड़ी फाट भै पड़े शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ।।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

पहले मन्त्र संख्या १ के अनुसार जप करके इस मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर काली मिर्चों को ७ बार अभिमन्त्रित करके भूत-ग्रस्त रोगी को खिलायें तो भूत बकरता है अर्थात् अपने विषय में बताता है।

विशेष—

इस मन्त्र में 'जहां अमुकी' शब्द आया है, वहां भूत-ग्रस्त रोगी के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

भूतादिक को उतारने का मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ नमो ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं, नमो भूतनायक समस्त भुवन भूतानि साधय साधे हू हू हू।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

शनिवार के दिन से आरम्भ करके नित्य ७ दिनों तक १४८ बार मन्त्र का जप करें। दीपक जला कर उसके आगे गूगल की धूनी दें तथा फूल बताशे चढ़ावें। इस विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब मोर के पंख से भूत-ग्रस्त रोगी को मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ा देने से भूत उतर जाता है।

भूतादि को उतारने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपु वक्ष विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूतप्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी कीलोन्मूलनाय

स्यंपाद भव समस्त दोषान् हन हन सर सर चल चल कम्प कम्प मथ मथ हुँ फट् हुँ फट् ठः ठः महारुद्र जापियत स्वाहाः।"

साधन एवं प्रयोग विधि

पूर्वोक्त मंत्र संख्या १ की भाँति इस मन्त्र को भी विधि पूर्वक सिद्ध करलें तथा नृसिंह भगवान का पूजन करें। फिर आवश्यकता के समय भूत-ग्रस्त रोगी को मोर के पंख से मन्त्रोच्चारण करते हुए झाड़ा देने से भूत उतर जाता है।

भूतादि को मारने का मंत्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरूको हनुमंत वीर बजरंगी वज्रधार डाकिनी शाकिनो भूत प्रेत जिंद खईस को ठोक ठोक मार मार नहीं मारे तो निरंजन निराकार की दुहाई।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

शनिवार के दिन से आरम्भ करके २१ दिनों तक हनुमान्जी का विधिपूर्वक पूजन करें तथा नित्य १२१ की संख्या में मन्त्र का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर, चौराहे की कंकड़ी अथवा उड़द को इस मन्त्र से अभिमंत्रित करके भूत-ग्रस्त रोगी के शरीर पर मारें तो भूत मर जाता है।

भूतादि को कैद करने का मन्त्र

मन्त्र—" बंध बंध शिव बंध शिव बंध।"

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र से अभिमंत्रित उड़द भूत-ग्रस्त रोगी के ऊपर मारे तो भूत कैद हो जाता है।

भूतादि को छोड़ने का मंत्र

मन्त्र—"या खालिसा या मुखलिस या खल्लास खुब्बाजे खिजर मेहतरलयास।"

झाड़ा देने की विभिन्न विधियाँ

झाड़ा देने

विभिन्न प्रकार की चिकित्सा में विभिन्नताएँ अथवा अलग-अलग प्रकार होते हैं। उसी प्रकार झाड़ा देने में भी अलग-अलग प्रकार के व्यवहार प्रचलित होते हैं। जिस प्रकार से आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों में अलग-अलग प्रकार की दवाएँ होती हैं, उसी प्रकार तांत्रिकों की चिकित्सा में भी अलग-अलग विधियाँ प्रचलित होती हैं। उनमें से कुछ मुख्य विधियों का उल्लेख किया जाता है। इसके अतिरिक्त तांत्रिकों द्वारा और भी अनेक प्रकार की चिकित्सा-विधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं।

झाड़ा देने वाले तांत्रिकों को ओझा, ओझा, जानकार, जानकी के नाम से जाना जाता है। स्थानीय भाषाओं में इसके अलग-अलग नाम भी हैं। 'ओझा' शब्द का प्रयोग सम्भवतः 'ओझा' (झाड़ा) शब्द के उच्चारण के आधार पर ही सम्बोधन स्वरूप प्रचलित हुआ होगा। 'जानकी' का अर्थ तो जानने वाला अर्थात् होशियार है ही। जो लोग विभिन्न रोगों का उपचार झाड़ा से करते थे, उन्हें 'बयासा' कहा जाने लगा होगा, जो कि बाद में उस प्रकार के व्यक्ति के लिए 'बद्द' बन गया।

झाड़ा देने में अधिकतर मोर पंख का प्रयोग किया जाता है। अनेक दस-बीस मोर पंखों को इकट्ठा बाँध कर उन्हें अभिमंत्रित करके रोगी के सिर से पैर तक झाया जाता है। मोर पंख के उपलब्ध न होने पर झाड़ा (झाड़) से भी झाड़ा दिया जाता है। कई जगहों में नीम पत्तों का प्रयोग भी किया जाता है।

प्रस्तुत प्रकरण में विभिन्न रोगों में सम्बन्धित झाड़ा देने के अनेक मंत्र प्रस्तुत किये गये हैं।

कर्णशूल झाड़ने का मंत्र

मंत्र—"बनाइ गाडि बनरी तो राजे हनुमान् कहा बिचारो बाबी

थनैली कर्णमूल सभ जाइ रामचन्द्र की बचन पानी पथ होइ जाइ।"

साधन विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को पढ़कर राख से झाड़ा देने पर कर्णमूल नहीं रहते।

टिप्पणी—

कंठ की बिलारी, बाघी तथा थनैली रोग में भी इसी मन्त्र का झाड़ा दिया जा सकता है।

थनैली झाड़ने का मन्त्र

मंत्र—"कंठ बिलारी बघ थनैला पांचवान मोहि भैरों दैल कंप बिलारी बघ थनैला डावा पलटि जाहुँ घर अपने राजा मनेरी की दुहाई जोडावार है गुरु की दोहाई।"

साधन विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

२१ बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारें।

खांगा नाशक मन्त्र

मंत्र—"अर्ज्जुनः फाल्गुण जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः। बीभत्सु विजयः कृष्णः सव्यसाची धनंजयः।"

प्रयोग विधि—

रविवार के दिन इस मन्त्र को कागज पर लिखकर पशु के गले में बांध देने से 'खांग' ठीक हो जाता है।

ममरषा झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—"राजा अजयपाल सागर खतवारा वट बाधा घाट उतई ममरषी पानि पिउ सात राति मोहि पीपरपात गुंगी बोरी डोमिनी चंडालिनी तू है नीको ममरषी तिल एक रथ ठाढि कण्ठ झारि ममरषी क्रोध करु।"

साधन विधि—

ग्रहण पर्व में १००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को २१ बार पढ़-पढ़ कर फूंक मारनी चाहिए।

हूक झाड़ने का मंत्र (१)

मन्त्र (१)—"ॐ सुमेरु पर्वत पर नोना चमारी सोने की रापी सोने की सुतारी हूक चूक वाह बिलारी धरणी नालि काटि कूटि समुद्र खारी बहावो नोना चमारी की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच।"

साधन-विधि—

ग्रहण के समय अथवा दीवाली की रात में १००० की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को २१ बार पढ़ कर फूंक मारने से शरीर हूक नहीं रहती।

हूक-झाड़ने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"मेघडंबर पोतरहड़ी तातो शरीर गरीमें जातो दोहाई अजेपालके जोन जाय बांधि।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

रस्सा झाड़ने (भूख प्यास बढ़ाने) का मंत्र

मन्त्र—"ॐ अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः मयामयत्यंवलमीक्ष्यमाणः उभौवणावृष्टिरुग्रपुयोषसप्तादेवेष्वाशिषो जगाम ॥ भ्रातापि भक्षितो येन वातापि च महाबलः । समुद्रः शोषितो येन समे ऽगस्त्यः प्रसीदतु ।। अगस्त्यं कुंभकर्णं च वडवानलम् । आहार परिपाकार्थं संस्मरेच्च वृकोदरम् ।"

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमंत्रित जल पिलाने से कब्ज दूर होकर, भूख-प्यास की वृद्धि होती है।

हूक झाड़ने का मंत्र

मन्त्र—"ॐ सुमेरु पर्वत पर नोना चमारी सोने की रांपी सोने की सुतारी हूक चूक वह बिलारी धरणी नालि काटि कूटि समुद्र खारी बहावौ नौना चमारी की दुहाइ फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ।"

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

इस मन्त्र को २१ बार पढ़ कर झाड़ा देने से हूक, बिलारी, धरणी, नाल चढ़ना आदि की शिकायतें दूर होती हैं।

सर्व-विष झाड़ने का मन्त्र (१)

मन्त्र—(१) "उत्तर दिशि कारो बादरि तेहि मध्य ठाढ़ काल पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ गदा चक्र मारा शत-खंड जाइ गदा मारे सातों पाताल जाइ ॐ हर-हर निर्विष शिवाज्ञा ।"

साधन विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

जिस व्यक्ति को सर्प ने काटा हो, उसको इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए मोर पंख द्वारा झारा देने से सर्प का विष उतर जाता है।

सर्प-विष झाड़ने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"थिरुपवन जेहि विष नाशे तेहि देखि विषधरहू काये सत्पर्जा आष विषमो संदीन्पैष्ठयै तहि विषइ मंत्रे कुशल बालुगाले झाविल्काल निर्विश होइ ।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

सर्प-विष झाड़ने का मंत्र (३)

मन्त्र—"नृसिंह भरो के वचनः वं जो हो नीरंजर नार ।"

साधन-विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

प्रयोग विधि—

तीन चुल्लू पानी उक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर सर्प दंशित व्यक्ति को पिलाये तथा उसके माथे में तीन टोना मारे तो सर्प का विष उतर जाता है।

बिच्छू-विष झाड़ने का मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को क्यों रे बोलू ते को काट्यो गोद सिरी मुख चाख्या में काटाले पानी प्याऊ का क्यों उतर जाय उतरे तो उतारू कहे तो उतारू कहे तो माफ नादर गरुड़ मोर हकारू नका सा काट समुद्र सो खाई उतर रे बीछू जती हनुमत की दुहाई शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन विधि—

पढ़ने के समय १०००० की संख्या में जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

इस मन्त्र द्वारा पानी को ७ बार अभिमन्त्रित करके उसे पृथ्वी पर गिरा देने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

बिच्छू-विष झाड़ने का मन्त्र (४)

मन्त्र—"पुरबी काशी बाट घाट की चमरी पुरी से करी आकर बिछी बिलाद बीछी सांपे कद काटि गोरखनाथ आदेश आदेश गोरखनाथ गुरुजीका मन मन्त्रे ॐ ठ ठ ठ ठ ठ हूं हूं हूं हूं हूं हूं जानि उतर बीछी डाव डाव पांव पांव न उसमारे गोरखनाथ गुरुजी महादेव की दुहाई सोरह सांपनी की दुहाई अनील देवी नवनाग बन खाय उतारि बीछी हनुमन्त की आज्ञा दुहाई हनुमन्त की।"

साधन-विधि—

पढ़ने के समय १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को पढ़ते हुए झाड़ा देने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

बिच्छू-विष झाड़ने का मन्त्र (५)

मन्त्र—"परबत ऊपर सुरही गाइ ते करे गोबरे बीछी बिआइ ठः कारी ठः गोरी ठः का जोता उतारिके विद्या विछिया बहिआ बाठ गांठि नव पार बीछी करे अजोर बलि चलू चलाइ करवाऊ ईश्वर महादेव की दुहाई नहीं गुरु के पाव सरके तहंहि गुरु के कुश कजुरी तहंहि विष्णुपुरी निर्मो-जाइके दुहाई महादेव गुरु के ठावहिं ठाव बीछी सांपेसी।"

साधन विधि—

पढ़ने के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

मन्त्र संख्या ३ के अनुसार।

बिच्छू-विष झाड़ने का मन्त्र (५)

मन्त्र—"बीछी तोरै के जाति छः पायरी छः परवारी बोधा पषाना पसस्वपाउ तोरी विषितइ मे नाहि ठाउ ऊपर जा गिगर्धे षाउ (खाउ) शिव वचन शिव नारि हनुमान के आन महादेव के आन गौरा पार्वती के आन नोना चमारिन के अन्न उतारि आउ।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

मन्त्र-संख्या ३ के अनुसार।

बिच्छू-विष झाड़ने का मन्त्र (६)

मन्त्र—"अब हट मुठि बेगन भावि उतरू बीछी मति करवागि।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

मन्त्र संख्या ३ के अनुसार।

बिच्छू-विष झाड़ने का मन्त्र (७)

मन्त्र—"कायो पाये शिर मानिकरा मुख मोड़ो मरिजासि अनखांधनो पानी पावै बांधि उतरि जासि।"

साधन-विधि—

मन्त्र संख्या ३ के अनुसार।

प्रयोग विधि—

जो व्यक्ति किसी बिच्छू काटे आदमी का समाचार लेकर आये, उसे उक्त मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित पानी पिला देने से बिच्छू काटे हुए आदमी का विष उतर जाता है। यही प्रयोग जिस व्यक्ति को बिच्छू ने डंक मारा हो, उस पर भी किया जा सकता है।

बिच्छू-विष झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—"टूटे खाट पुराने बान, चढ़ जा बीछू शिर के तान।"

साधन विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

जिस जगह बिच्छू ने काटा हो, वहां इस मन्त्र को पढ़-पढ़ कर ७ बार फूंक मारने से बिच्छू का विष और अधिक चढ़ जाता है।

कुत्ता काटे का झाड़ा देने का मन्त्र (१)

मन्त्र—"कारी कुत्ती विधिलारी धोला कुत्ता कलीर फलाना काटा कूकुर वार धयल्यायु।"

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहां 'फलाना' शब्द आया है, वहां जिस व्यक्ति को कुत्ते ने काटा हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि

कुम्हार के चाक की मिट्टी लेकर उसे कुत्ता-काटे मनुष्य के शरीर के जिस स्थान पर कुत्ते ने काटा हो, वहां फेरते हुए तथा मन्त्रोच्चारण करते झाड़ा देने से दंशित स्थान से रोंवे निकलते हैं तथा कुत्ते का विष दूर होकर रोगी ठीक हो जाता है।

कुत्ता काटे का झाड़ा देने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ कुलकु स्वाहा।"

साधन विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

[illegible] अध्याय

प्रयोग विधि—

जिस व्यक्ति को कुत्ते ने काटा हो, उसे एक कमरे में अन्धेरे में रख दें और ५ मिनट बाद उसे कुत्ते का विष दूर हो जाता है।

कुत्ता काटे का झाड़ा देने का मन्त्र (१)

मन्त्र—"पहला कुत्ता जिसने खाया जिसने खाया, खाकर मरा। कौरों बनजारा, कल मरेगा कौरा। इसके हिलाने लहाने कुत्ता की विष उतरा आया कुत्तों कहलाया दोनों की कुत्ते मन्त्र हिलाओ।"

सावधान रहिये—

यहाँ के मन्त्र [illegible] की संख्या से अधिक से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोग विधि—

कुत्ता के काटा की जिसकी सावधान, उसके ७ कौरों बनाये। उस व्यक्ति को एक कमरे में बराबर बन्द व्यक्तियों पर। फिर उसके ७ कौरों को ले और ७ कौरों अपने पास रखें। फिर एक कौरों के टुकड़े करके खिलाए दें। फिर बाकी बचता कौरा सबेरे को तुलसी पत्ती खायें। फिर जो हो पर कुत्ता खाता का कुत्ता, कुत्ता काटे उसे स्थान का कौरा है की सावधान तुलसी के कौरों का जिस प्रकार खाता है।

कुत्ता काटे का झाड़ा देने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"ओ गरुड़ वाहनम् ऐसा कमलासन देवी कहाँ कौरे एकमहादन कौरों एकमहादन कौरों से बाजी कुत्ती एक बाजी एक बाजरी एक कौरों एक नाम एकबारी जिस हुएमहा हरे रहता करे पुरुष कौरकमहान सकल तत्क्षिा जिसका कुत्ती खाया हिलाओ।"

सावधान विधि—

यहाँ के मन्त्र [illegible] की संख्या से अधिक से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोग विधि—

एक मन्त्र से व्यक्तियों जिसको काटे, उसे बिलकुल ठीक से यह मन्त्र जिस में दिन ही जाता है।

कौड़ा झाड़ने का मन्त्र (१)

मन्त्र—"बजारी बजारे कौरा जिलाई। कौरों गाये पत्थर खाई। तुमें हैकता नाम्बो। तो आज रजाराई माओ।"

सावधान विधि—

यहाँ के मन्त्र [illegible] की संख्या से अधिक से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोग विधि—

दोपहरी के समय, एक मन्त्र द्वारा ७ कंकड़ियों पर अभिमन्त्रित करके मारने से यही यह जाते हैं।

कौड़ा झाड़ने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"धरना पार बजूर के माती। झरे कौरा झरे रजाई। हिलकर महादेव कौरा पार्वती के दुहाई।"

सावधान तथा प्रयोग विधि—

मन्त्र प्रयोग १ के अनुसार।

कौड़ा झाड़ने का मन्त्र (३)

मन्त्र—"बहुते पहरारी अरावलाली पत्थर जिसके पानी की झा मत्था।"

सावधान विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

प्रयोग विधि—

कौरों की ७ कंकड़ियों को एक मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति का झाड़ना हो, उसका नाम लेकर, उसके ऊपर की कंकड़ी

देते हुए कहे कि कोड़ा खबा'; फिर मालिक अपने आवास के पास पहुंच कर उसी कपड़ों मार के कहे—'कोड़ा खबा'। इस प्रयोग से आवास के कोड़ा खा जाते हैं।

विशेष—
यह प्रयोग अधिकार अथवा रविवार को करना चाहिए।

कोड़ा झाड़ने का मन्त्र (४)

मन्त्र—"ऊँ नमो कोड़ा रे तू कुल का कुलीला लाल पूछे तेरा मुंह काला, ये तोहि दुखो कहां ते आवा। तोड़ मास ले सब खो खावा। अब तू बाद भस्म हो जाय। गुरू गोरख-नाथ के लागूं पाय। शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—
शब्द संख्या १ के अनुसार।

प्रयोग विधि—
उक्त मन्त्र को ७ बार जपते हुए रोगी-व्यक्ति को झाड़ा देने से कोड़ा नष्ट हो जाते हैं।

१० रोग नाशक मन्त्र

मन्त्र—"परवत ऊपर परवत परवत ऊपर फाटक शिला फाटक शिला पर अंजनी जिन जाया हनुमन्त ने हजारे हला काल को कताई पीछे को अदोस काल की कनफेड़ रात की बद कष्ट को कष्ट माता, कुदरते का गहरू दाद को दहशूल पेट की ताप तिल्ली या इतने को दूर करे भरमंत बातर तुझे अंजनी माता का दूध पीया हुआ हराम खेरी शक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्त नाथ आदेश गुरू का।"

साधन विधि—
शनिवार के दिन से आरम्भ करके २१ दिनों तक विधि पूर्वक हनुमान जी की पूजा करते हुए नित्य १०८ बार मन्त्र का जप करें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर हर ग्रहण के समय तथा दिवाली की रात्रि में मन्त्र का जप करते रहना चाहिए।

प्रयोग-विधि—
गुरू की आक से, सिल्ली की छुरी से, सिलवाई, अदीक, कलाड़, भंग, कण्ठ माला की राख से तथा बड़ फूल की नीम की डाली से ७ बार झाड़ा दें। झाड़ा देते समय मन्त्रोच्चारण करता जाय तो ये सब कष्ट इस एक मन्त्र से ही दूर हो जाते हैं।

दांत-दर्द झाड़ने का मन्त्र (४)

मन्त्र—"अग्नि बांधो अग्निश्वर बांधो सो खान विकराल बांधो सो लोहा लोहार बांधो वज्रक लिहाग वज्रधल दांत पिराग महादेव की आन।"

प्रयोग-विधि—
पहले ग्रहण के समय मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। आवश्यकता के समय इस मन्त्र को ७ बार पढ़ कर दर्द वाले स्थान पर ७ बार फूंक मारने से दांत का दर्द दूर हो जाता है।

दांत दर्द का मन्त्र

मन्त्र—"हे दन्ता तुम क्यों कुलता हमें तुम्हें संजादवा हम एक सर तुम हो बत्तीस हमरी तुम्हरी कौन सी रीति। हम कमाई तुम बैठे पाउ। मृत्यु की बिरियां संग ही जाउ।"

प्रयोग-विधि—
सर्व प्रथम किसी ग्रहण के समय इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय, प्रातः काल मुंह धोते समय हाथ में जल लेकर, उसे उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके कुल्ला करें तो दांतों की पीड़ा दूर हो जायेगी तथा हिलते हुए दांत भी जम जायेंगे। जब तक पूर्ण लाभ न हो, तब तक इस क्रिया को नित्य करते रहना चाहिए।

आँख झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—"शर्माति च मुकुर्यां च स्यवर्न शक्रमन्त्रिणी।
एतेषां स्मरणान्नृणां नेत्र रोगो प्रणश्यति।"

प्रयोग-विधि—

पहले किसी ग्रहण पर्व में इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय रोगी की आँखों पर इसी मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित जल के ७ छींटे मारे तो नेत्र रोग दूर होते हैं।

उठी (दुखती हुई) आँख झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ बने बिआई बानरी जहाँ जहाँ हनिवन्त आँखि पीड़ा कसावरी गिहिया धनैलाइ चारिउ जाइ भस्मन्त। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग-विधि—

पहले इस मन्त्र को किसी ग्रहण पर्व में १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय रोगी की आँख पर हाथ फेरते हुए इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर फूँक मारें तो पीड़ा तथा व्यथा दूर हो।

विशेष—

इस मन्त्र का प्रयोग कखावरी (कांख में उठने वाली गिल्टी), गिल्हिणा तथा धनैला की पीड़ा दूर करने के लिए भी किया जाता है।

रतौंधी झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—"भाट भाटिनि सरि चली कहां जाइब जावेउ समुद्र पार। भाटिनि कहा में बिआवेऊ कुश की छालो बिआबेउ उपसमा छीकर मुडा अण्डा घोसों हिलतारा सोहिल तारा राजा अजैपाल ऊनर तर है राजा अजैपाल करकंदार पाना भरत रहै उन्हें देखें पावा बालाउ गोडिया मला उजाल तैंके में अधोखी ईश्वर महादेव को दोहाई मेरी धरी उतरि जाइ।"

प्रयोग-विधि—

पहले इस मन्त्र को किसी ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय इस मन्त्र को पढ़-पढ़ कर रोगी की आँखों पर २१ बार फूँक मारें तो रतौंधी की पीड़ा दूर होती है।

नेत्र-रोग नाशक मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो श्रीराम की धनी लक्ष्मण का बान। आंख दर्द करे तो लक्ष्मण फुँवर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्यनाम आदेश गुरु का।"

प्रयोग-विधि—

दीपावली की रात्रि में इस मन्त्र को १४४ बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर इस मन्त्र से पानी को अभिमन्त्रित कर, उससे आँखों को धोये तो नेत्र-रोग दूर हो।

बाल रक्षा कर झगड़े का मन्त्र (१)

छोटे बालक के रोग-दोष, नजर लगना, भूत-प्रेत ग्रहादि के कोप से रक्षा करने के लिए निम्नलिखित मन्त्र में से किसी भी एक के द्वारा झाड़ा देने से लाभ होता है।

झाड़ा देना आरम्भ करने से पूर्व मन्त्र को सिद्ध कर लेना आवश्यक है। ग्रहण के समय में प्रत्येक मन्त्र १०००० की सख्या में जप करने से सिद्ध हो जाते हैं।

मन्त्र—"उलदेव विहरतषे भगरज श्री नारसिंह देवं ये उरे फलाना का भेउ ताहि षोडनारसिंह षं षं षं षं षं।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'फलाना' शब्द आया है, वहाँ बालक के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

बाल रक्षा कर झाड़े का मन्त्र (२)

मन्त्र—"आदिनाथ भय हरण कहइ [illegible]

सावर हेत हवा वडिल भूत व्याधि डीठि मुठि सब बाँधि के आनो मह गाहकन सुरवायु साजि पडमनै बांध विज्ञत के भैरव होनहि लेइ आउ भैरवानन्द काशी का कोतवाल बनारसि के बंध बालु के कोजे हार तोहि लगि बात है।"

विधि—

पूर्व मन्त्र के अनुसार।

बाल रक्षाकर झाड़े का मन्त्र (३)

मन्त्र—"शुक्र शनिश्चर भीम अवारी कहवा चलेउ डाइनि मारी हंकिनी डंकिनी चढ़ी पुरुब देशाकै वैसी पीपर के डार सात लै योगिनी जागे मशान डीठि मूठि बांधिके आ तगरह गाहकन मुखाश सन्तावे मलैवाद पर भैरव होनहि लै आउ।"

विधि—

पूर्व मन्त्र के अनुसार।

बाल रक्षा का झाड़े का मन्त्र (४)

मन्त्र—"सिल लोराई सिललौलीन सिलोसोपनु सजांकालां भीडीठि अग्नि परोसे जेवे गरुड़ पाथरखाई भस्मत भैजाई पत्थर शिलज पत्थणि सिलावंरंडसिलसिलंग परबत हाथ चढ़ा वशकरों धौक लोहे को चना चण्डी डीठि मूठि भस्मत होइ जाइ अपनी डीठि पर डीठि पर पीठि पाछे बालु बालवीर हनुवन्त तेरी शक्ति।"

बाल रक्षा का गण्डा (ताबीज)

क्वारी कन्या के हाथ से कते हुए सूत के तेरह धागे में कच्चा धोंधा डालकर, उसमें ११ बासमती चावलों को रंधि कर भर दें तथा उसका

मुंह बालक को पिला दें। फिर सूत से गण्डे को लपेट कर उसे बालक के गले में बांध दें।

धोंधा को सूत में लपटते समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

मन्त्र—"धोंधा धोंधा समुद्र धोंधा समुद्र के कितजानि जानहु धोंधा जनि जरु सूत जरै तो पारवती केश आचर जरै तो महादेव के जटा जरै।"

गण्डा भरते समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

मन्त्र—"ॐ आसन योगी कपूत जंबीरी के पास न कोई चवरी गैकरीर कतमासुको मानी बिआरी जेहिंगे बांधो बांधि के जडाव धपधीक जाइ कावरू के विद्या कामाक्षा जल विधि नाथ गुरु गोरखनाथ रक्षपाल।"

बालक को अभिमन्त्रित पानी पिलाने का मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—"पानी तीनि पानी ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर जानी शिव शक्ति कुमारी अब छार भार सब तोही को ताइ कहहु कतहूं का होउ धैले आउ बालक के तोके मोके पुण्य जब होय महादेव के जटा परे पारवती के आँचर जो यह बालक दुःख पावै।"

बालक को झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—"शंकर गणसागी केशरि ललित केशरि पंचमि वाहणि भूकटेन कुटीकार दंत विकारी तीतस कोटि भूत भीमदेव संघारी भीम बालक के छरू अहकह बालक के ससुखना चोटो खाजो मोरा कोयें गरुड़ कण्ठे समुद्रतीर गिंधिगिउ आवधरोष भस्मत होई जाइ ठौर भक्षिनी स्वाहा।"

साधना-विधि—

ग्रहण के समय १०८ बार संकल्प के साथ जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

बालक की रक्षा हेतु इस मन्त्र को पढ़ते हुए ११ बार झाड़ा देना चाहिए। यदि किसी स्त्री के बालक होते-होते बच जाते हों तो इस मन्त्र को संकल्प के साथ इस मन्त्र द्वारा ११ बार अभिमंत्रित जल पिलाने से वह सुन्दर, स्वस्थ तथा दीर्घजीवी बालक को जन्म देती है।

बालक का रोना बन्द करने का मन्त्र

जो बालक अकारण रोता हो, उसका रोना बन्द करने के लिए नीचे प्रदर्शित यन्त्र को काली स्याही अथवा अनार कलम से बालक या आप पास भोज पत्र पर लिख कर बांध देना चाहिए।

१	३२	१५	१८
२०	१०	२	२१
६	१५	३४	३
२३	११	१०	१८

१८

(बालक रक्षक अनुष्ठित यन्त्र)

ज्वर का झाड़ा देने का मन्त्र (१)

निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक को पढ़कर ज्वर-ग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा देने से तत्काल ज्वर दूर हो जाता है।

मन्त्र—"टट नदी अर्जुनाय की दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फूटो मन्त्र ईश्वरवाचा।"

प्रयोग विधि—

पहले इस मन्त्र को ग्रहण के दिन १,२५००० की संख्या में जपकर सिद्ध कर लें, फिर आवश्यकतानुसार ७ बार मन्त्र पढ़ कर रोगी को झाड़ा देना चाहिए।

ज्वर का झाड़ा देने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"समुद्रमोलर कूरे कूमुटी नाल डालर। तत्त तत्तमय आलोम ज्वरो नाशिन दिवो दाम।"

प्रयोग विधि—

पहले इस मन्त्र को ग्रहण के दिन १,२५००० की संख्या में जपकर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय इस मन्त्र को पढ़कर फूंक से झाड़ा दें तो ज्वर उतर जाता है।

ज्वर का झाड़ा देने का मन्त्र (३)

मन्त्र—"खारी कूकरी साख निमरा आई साटो पुत्र निकाई पिंडाई बाप पर दुलाकालकालाके ज्वर सीनी जाए।"

प्रयोग-विधि—

नीचे बताये हुए यंत्र को भोजपत्र पर अनार की कलम से लाल चंदन घिस कर ही स्याही बना कर इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर ज्वर-ग्रस्त व्यक्ति के गले में बांध देने से ज्वर दूर हो जाता है।

ज्वर का झाड़ा देने का मन्त्र (४)

मन्त्र—"बड़ा ज्वार बड़ाजारे एक लाख, बिनाश दिन की बाजा दुलाकार बीर, नरसिंह आवरे वीर, सवा लाख बिन बिनाश नई आवन दीजे, दो लख बिन बिनाशा।

प्रयोग विधि—

पहले इस मन्त्र को ग्रहण पर्व में १०००० की संख्या में जपकर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा देने से ज्वर दूर हो जाता है और यदि ज्वर के आने की सम्भावना हो तो वह नहीं आता।

ज्वर का झाड़ा देने का मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं सुधीनाथ महाबल पराक्रमाय सूर्य पुत्राय अमित तेजसे एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक महाज्वर, भूतज्वर, प्रेत ज्वर, महावीर वानर ज्वराणां बन्ध ह्रां ह्रीं फट् स्वाहा।"

प्रयोग विधि—

पहले इस मन्त्र को ग्रहण पर्व में १०००० की संख्या में जपकर सिद्ध कर लें। आवश्यकता के समय इस मन्त्र को २१ बार पढ़कर, ज्वर रोगी को झाड़ा दें। इसके प्रभाव से सामान्य ज्वर, इकतरा, तिजारी, चौथैया, महाज्वर, प्रेत ज्वर आदि सब प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं।

जादू टोना झाड़ने का मन्त्र (१)

निम्नलिखित मन्त्र में से किसी भी एक मन्त्र को ७ बार पढ़कर झाड़ा देने से किसी के द्वारा किया गया जादू-टोना दूर हो जाता है—

मन्त्र—"लोना सलोना योगिनि बाँधे टोना आबहु सखि मिलि जादू कवन कवनु देश कवनु फिरि आदि अफूल फुलवाई ज्यों ज्यों आवै बास त्यों त्यों फलानी आवै हमरे पास कवरू देवी की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मोहिनी ईश्वरो-वाचा।"

जादू-टोना झाड़ने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"सोम शनिश्चर भौम अगारी। कहा चललि देई अधारी। चारि जटा वज्र केवार। दोनहि बाँधो सोम दुवार। उत्तर बाँधो कोइला दानव दक्षिण बाँधो खेत पाल चारि विद्या बाँधिके वेद विशेष गवर गवर विद्यित भवर गए चनु उत्तराषाढ योगिनी चनु पाताल से वासु की चनु रामचन्द्र के सायक अंजनी के चीर लागे ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की दुहाई जो टोना रहै एही पिण्ड मन्त्र पढ़ि फूँके टोना कहल न रहे।"

टोना झाड़ने को प्रत्यक्ष करने का मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्र को ७ बार पढ़ कर झाड़ा देने से किसी के द्वारा किया गया जादू-टोना प्रत्यक्ष हो जाता है अर्थात् उसका पता चल जाता है।

मन्त्र—"लोहे के कोठिला वज्र के केवार। तेहि पर नावो बार-म्बार। तेते नहि पहनहि कहुए बार एक। पण्डा अनण्डा। बाँधो पाताले बासुकी नाग बाँधो सैयद के पाँव शरण पोदकी भक्ति नारसिंह आदिकार खेलु खेलु शंकिनी डंकिनी। सात सेतर के संकरी बारह मन के पहार तेहि ऊपर बैठु अब देवी चौतराकय आन जंभाइ जंभाइ। गोरख की दुहाई नोना चमारी की दुहाई तेंतीस कोटि देवताओं की दुहाई हनुमान की दुहाई काशी कोतवाल भैरो की दुहाई अपने गुरुहि कटारी मारू देवता खेल सभ आप लेइ काशी कादि कादि काशी कर पाप तेहि देवता के कन्ध चढ़ाइ काट जो मन महं क्षोभ राखै।"

स्त्री को चुड़ैल का टोना झाड़ने का मन्त्र

एकान्त में पर्दा करवा कर जादू-टोना ग्रस्त स्त्री को नमक-पानी से जाड़ा देते हुए निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें तो टोना आदि उतर जाता है।

मन्त्र—"ओं पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारिका सर्ग पाताल आगन द्वार मंझार खाट बिछौना गडई सोवनार सागलन औ जेवनार बिरा सोंघावे फुलेल लवंग सोपारी जे मुँह तेल अबटन उबटन औ अवनहान पहिरणलहँगा सारी जात डोरा चोलिया चादरि झीनसोट रुइ ओढ़न झीन शंकर गौरा क्षेत्रपाला पहिले आरो बारम्बार काजर तिलक लिलार आँखि नाक कान कपार मुँह चोटी कण्ठ अवकंप काँध बाँह हाथ गोड अंगुरी नख धुकधुकी अस्थल नाभी पेट नीचे जोनि चरणि कत भेटी पीठि करि दाव जांघ पेडुरी घुटी पावतर ऊपर अंगुरा चाम रक्त माँस हाँड गुदो धातु जो नहीं छाडु अन्तरी कोठरी करेज पित्त ही पित्त जिय प्राण सब बित बात अंक मने जागु बड़े नरसिंह कि आनु कबहुन लागु फाँस पित्तर राँग काँच लोह रूप सोन साच पार पट बशन रोग जोग कारण दोशन डीठि मूठि टोना थापक नवनाथ चौरासी सिद्ध के सराप डाइनि योगिनी चुरइलि भूत व्याधि परिअर जेजुत भनै गोरख बैन साच प्रगट रे बिलउकाली और भैरव की हाँक फुरो ईश्वरोवाच।"

डाकिनी की नजर दुर करने का मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को १०८ बार पढ़-पढ़कर झाड़ा देने से डाकिनी की नजर का दोष दुर होता है। डाकिनी की नजर प्रायः छोटे बच्चो को लगा करती है।

मन्त्र—"ॐ नमो नारसिंह पाडेहार भस्मना योगनो बंध डाकनी बध चौरासी दोष बंध अष्टोत्तरशत व्याधी बंध खेदी खेदी भेदी भेदी मारे मारे सोखे सोखे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल नारसिंह वीर की शक्ति फुरो।"

नजर झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ सत्यनाथ आदेश गुरु को ॐ नमो नजर जहाँ पर पीर न जानी, बोले फलसों अमृतबानी, कहो नजर कहाँ ते आई यहाँ ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरे कहाँ ठाम, किसकी बेटी कहा तेरो नाम, कहाँ से उही कहाँ को जाय, अब ही बस करले तेरी माया, मेरी बात सुनो चितलाय, जैसी होइ सुनाऊँ आय, तेलन, तमोलन चूहड़ी चमारी कायथनी खतरानी कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी जाको दोष ताही के सिर पड़े जाहरपीर नजर की रक्षा करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विधि—

यह मन्त्र १००८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र को पढ़ते हुए मोर पंख से झाड़ा देने पर नजर उतर जाती है।

———

१०

विविध रोग-नाशक मन्त्र

विभिन्न रोगों के विषयों में

रोग अनेक प्रकार के होते है। उनमे से अधिकांश तो केवल औषधोपचार से ही ठीक हो सकते है, परन्तु कुछ को मन्त्रों द्वारा भी ठीक किया जा सकता है। मन्त्रोपचार द्वारा ठीक किये जाने वाले रोगो मे मृगी, नेहरूआ भिनही, अण्डवृद्धि, दाढ़ का दर्द, सिर-दर्द, आँख-दुखना, पेट-दर्द, पीलिया, बवासीर, बच्चो के रोग, कृमि, दाद, कलंलाई आदि मुख्य हैं।

प्रस्तुत प्रकरण मे मन्त्रोपचार द्वारा ठीक होने वाले रोगो से सम्बन्धित मन्त्रो का उल्लेख किया गया है। इन मन्त्रों का प्रयोग करने से पूर्व उन्हे विधिवत संख्या मे जप कर सिद्ध कर लेना आवश्यक है।

जिन मन्त्रों के साथ जप संख्या दी गई हो तथा साधन के मुहूर्त का उल्लेख किया गया हो, उन्हें तदनुसार ही सिद्ध करना चाहिए, परन्तु जिनके साथ इस विषय का उल्लेख न हो, उन्हे होली अथवा दीवाली की रात्रि में अथवा ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। तदुपरान्त आवश्यकता के समय उल्लिखित संख्या में अथवा १०८ बार जपकर रोगी पर प्रयुक्त करना चाहिए। जिन मन्त्रों के प्रयोग में अन्य विधियों का उल्लेख हो, उनका तदनुसार ही प्रयोग करना चाहिए।

स्मरणीय है कि यदि मन्त्रोपचार द्वारा सफलता प्राप्त न हो तो रोग को मन्त्र के प्रभाव से परे जान कर, किसी सुयोग्य चिकित्सक द्वारा औषधोपचार कराना चाहिए।

मृगी का मन्त्र

मन्त्र—"हाल हल सरगत मंडिका पुड़िया श्रीराम फुकै मृगीवायु सूख ॐ ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

ग्रहण अथवा सिद्ध योग में १०००० की संख्या मे जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

जब रोगी को मृगी का दौरा हो, तब इस मन्त्र को कागज पर लिखकर उसके गले मे बाँध देने से दौरा समाप्त होकर, रोगी होश मे आ जाता है।

नेहरुवा का मन्त्र (१)

मन्त्र—"बने बिजाई अंजनि जायो सुत हनुवन्त नेहरुवा देहरुवा जरि होइ भरमत गुरू की शक्ति।"

साधन-विधि—

यह मन्त्र ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

एक, तीन अथवा सात सींकें हाथ में लेकरे ७ बार मन्त्र पढ़ कर झाड़ा देने से नेहरुवा रोग दूर होता है।

नेहरुवा का मन्त्र (२)

मन्त्र—"भांमनसेति योगी भया जने उतोरि नेहरु आकिया न पाकै न फूटै व्यथा करे विरूपाक्ष की आज्ञा भीतरहि सरै।"

साधन-विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

प्रयोग-विधि—

हर बार २१-२१ बार मन्त्र पढ़कर, ७ बार पानी के छींटा मारने से नेहरुवा नहीं रहता।

धीनही का मन्त्र

मन्त्र—"एहर चालो मेहर चालो लंका छोड़ि विभीषण चालो। वेगि चलि मन्त्र सहि।"

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

२१ बार मन्त्र पढ़ कर झाड़ा दें।

अण्ड-वृद्धि का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को जैसे कै लेहु रामचन्द्र कबूल ओसइ करहु राध विनि कबूत पवनपूत हनुमन्त धाउ हर हर रावन कूट मिरावन श्रवड अण्ड खेतहि श्रवड अण्ड अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवड बाजंगभंहि श्रवड स्त्री सीलहि श्रवड शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर।"

साधन विधि—

ग्रहण, दीपावली की रात्रि अथवा सिद्धि योग में १०००० की संख्या में जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयग-विधि—

इस मन्त्र को पढ़-पढ़ कर अण्ड कोषों पर फूंकमारें तथा उन्हें मले तो अण्ड वृद्धि से छुटकारा मिलता है।

विशेष—

यह मन्त्र चार वस्तुओं पर चलता है—

(१) इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित जल पुरुष को पिलाया जाय तो उसे अण्ड वृद्धि से छुटकारा मिले।

(२) इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल यदि दो-तीन मास की गर्भवती स्त्री को पिलाया जाय तो उसका गर्भ गिर जाता है।

(३) इस मन्त्र को एक ढेले पर पढ़कर उसे सर्प की बांबी पर रख दिया जाय तो सर्प वहां से भाग जाता है।

(४) तीन-चार दिन के बांधे हुए बैल पर यदि इस मन्त्र से अभिमन्त्रित तीन ढेलों को पढ़कर उसके तीन कौनों पे डाल दिया जाय तो बैल भूख जाता है।

दाढ़ की पीड़ा का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को जी साख कोवर एक बार बहीं बैठे ग्वाल बाल। गंगा जमुना सरस्वती बहीं बैठे गोरख-जती। गौतम ऋषि सुरवर परवत से आई कामधेन छत्तीस रोग टले आधो दीनों पृथ्वी आधी राखो बाप भौंरा पा ही रणटिया सिगत पासु दटियाम दौड़ रखा करे श्री रामचन्द्र हनुमन्त वीर डाल भाद रोग दोष जाय पराई सौंव गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग-विधि—

सर्वप्रथम किसी ग्रहण के समय इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जपकर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय अस्त-यानी को २१ बार इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गांव के निकास-मार्ग पर जा लेटें। वहीं डाढ़ को निकालता जाय और पानी के छींटा देता जाय तो डाढ़ की पीड़ा दूर होगी।

दाढ़ के पीड़ा का मन्त्र (१)

मन्त्र—"सवारा में सीसी सीसी, में माची माची, में कीड़ा कीड़ा में पीड़ा, कीड़ा मरे पीड़ा टरे। शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग-विधि—

पहले ग्रहण पर्व में मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर ले। प्रयोग के समय मन्त्र पढ़ते हुए दो लोहे की कीलों से चारों। फिर

जलने से एक को दूसरा से बचाने में बचा दुखती को बीच में पाई है तो साथ का कीड़ा मरे तो निकल जाता है।

बाद के कीड़ा का मन्त्र (२)

मन्त्र —"कामख देश कामख्याडेवी, जहां बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी ने पानी मारा, लिख दृष्टि करका बन में जाय। सूर की सगूर को मार तोड़कर किसी जाओ सिरके कीड़ा पात मूत पुराना 'क' पुड़ाना घर पिजर बाहु पुड़ानाल में मुखी करे तो मुख गोरखनाथ की दुहाई फिर। मानर सोका लिख काका पूरो मन्त्र ईश्वरो-वाचा।"

प्रयोग-विधि—

पहले ग्रहण पर्व में इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें, फिर आवश्यकता के समय इस मन्त्र द्वारा चाहे को ३ कीड़ा बो। अब अभिमन्त्रित करके, किसी घाट में ठोक दें तो दाढ़ का कीड़ा मर या निकल जाता है।

बाद के दर्द का मन्त्र

मन्त्र —"ॐ नमो आदेश गुरु को बन में ब्याई अंजनी जिन जाया हनुमन्त कीड़ा बहुदा थाकदा ये तीनों मरमत गुरु की शक्ति मेरी अचित पूरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

प्रयोग-विधि—

पहले इस मन्त्र को दिवाली की रात्रि में अथवा ग्रहण के दिन १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए नीचे से ऊपर को दाढ़ की पीड़ा दूर होती है।

दाढ़ की दुःखी का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को बन में ब्याई अंजनी जिन जाया हनुमन्त पूरी पुरुषी दुखती ये तीनों मरमत।"

प्रयोग विधि—

सर्वप्रथम इस मन्त्र को किसी ग्रहण के दिन अथवा दिवाली की रात्रि में १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय दाढ़ की दुखती पर हाथ फेरते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करते जाएं तो दाढ़ की दुखती, सूजन आदि शीघ्रातिशीघ्र दूर होती है।

विशेष—

इस मन्त्र का प्रयोग अन्य व्यक्तियों की दुखती, सूजती आदि पर भी किया जाता है।

दाढ़ के कष्ट का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरुजी ब्याहा।"

प्रयोग विधि

सर्व प्रथम इस मन्त्र को ग्रहण के दिन १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता के समय इस मन्त्र को कागज पर लिख कर, पुरुष चाहे की बीमार की मन्त्र से दक्षिणावर्त 'ब' बार उतार कर बांध दें। आश्चर्यजनक लिख मनुष्य की दाढ़ दुखती हो तो उसे कहें कि वह दुखती दाढ़ और की दाढ़ दुखती हो तो उसे कहें कि हाथ की कनिष्ठा और अंगूठे से पकड़ ले और यदि कोई दाढ़ दुखती हो तो दांये हाथ की कनिष्ठा और अंगूठे से पकड़ ले। जब वह ऐसा कर चुके, तब इस मन्त्र को ७ बार पढ़ कर उस रोगी की बीमार की किसी घाट में ठोक दें। इसका रोगी से कहें कि वह अपने घर चला है। इस क्रिया को ६ बार दुहराने से दाढ़ का कष्ट दूर हो जाता है।

दुखती आँख का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश आदर करी नमाई जहां बैठा हनुमन्ता आई फूटे न पाये न करे न पीड़ा जती हनुमन्त राखे वीरा।"

प्रयोग-विधि—

पहले इस मन्त्र को किसी ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप

CC-0. BHAGWAN MAHAVIR OPEN UNIVERSITY, KOTA. Digitized by eGangotri

कर सिद्ध कर ले। फिर आवश्यकता के समय इस मन्त्र को पढ़ते हुए
विभूति से चाकू को छुलाने से आँखों की पीड़ा दूर होती।

आँख की फूली काटने का मन्त्र

मन्त्र— "उत्तर कुल काठ सुन जोगी की बाठ इस्माइल जोगी के
दो बेटी एक पाये चूल्हा एक काटे फूली का काठ फूली
का काठ फूली का काठ।"

प्रयोग-विधि—

पहले इस मन्त्र को किसी ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप
कर सिद्ध कर ले, फिर आवश्यकता के समय मन्त्रोच्चारण करते हुए फूली
के ऊपरी पर २१ बार काटने के चिह्न बनावे। ऐसा ७ दिनों तक करते रहने
से आँख की फूली कट जाती है।

नेत्र-ज्योति रक्षक मन्त्र

मन्त्र— "ब्रह्मादत्त सूकनाथ चन्दन अक्षासपाठ। मोरमाथे
सहारेन एतत तस्य नेत्र न नश्यति।"

प्रयोग-विधि—

जिस औजार/हथियार इस मन्त्र को पानी के पात्र पर पढ़ कर, उस
पानी द्वारा रक्षा का घेरा रहने से नेत्र-ज्योति नष्ट नहीं होती।

निरोग्यया (सिर-दर्द) का मन्त्र (१)

मन्त्र— "निसुनहिरे गोरखनाथ मेघ गरजहि निसुनहि कहतू कर
हतू सिंहेरी फान दसक न वर्ने निसुनहि कहल जिन पहू
साचलई।"

प्रयोग-विधि—

पहले ग्रहण के दिन इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर
सिद्ध कर ले। आवश्यकता के समय २१ बार मन्त्र पढ़ कर रोगी के मस्तक
पर फूंक मारने से सिर-दर्द दूर होता है।

सिर-दर्द का मंत्र (२)

मन्त्र— "सुरसाव के गर्भे से उपजा बच्चा बच्चे के पेट से बच्चा
बच्चे के पेट में उपजा बावजा बावजा करे जेती जोगिन
मुए की अकिल पूरो मन्त्र ईश्वरोवाचा महादेव की आज्ञा
फुरो।"

प्रयोग विधि—

पहले ग्रहण के दिन इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर
सिद्ध कर ले। फिर आवश्यकता के समय इस मन्त्र को ११ बार पढ़ कर
रोगी के सिर में लगाने से सिर-दर्द दूर हो जाता है।

आधा शीशी का मन्त्र (१)

मन्त्र— "दस पे जाई दरशे जो आधा फल खाद। खाई मुहम्मद
होके दे आधा शीशी जाद।"

साधन-विधि—

पहले ग्रहण के दिन इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध
कर ले। शुक्ल पक्ष के पहले रविवार को सवेरे १०१ बार जप करने
से भी यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जिस रोगी के आधे सिर में दर्द होता हो, उसके सिर पर ७ बार यह
मन्त्र पढ़ कर फूंक मारने से दर्द दूर हो जाता है।

आधा शीशी का मन्त्र (२)

मन्त्र— "काली चिड़िया किलकिली दाखे दस फल खाद। खाई
मुहम्मदशाह ओके दे आधा शीशी जाय।"

साधन-विधि—

किसी ग्रहण के दिन १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र
सिद्ध हो जाता है।

विशेष—

यह पूर्वोक्त मन्त्र का ही कुछ भिन्न स्वरूप है।

प्रयोग-विधि—

जिस रोगी के आधे सिर में (आधा शीशी का) दर्द होता हो, उसे दोपहर १२ बजे के समय किसी खुली जगह में खड़ा करके सूर्य की ओर टकटकी बाँध कर देखने को कहे तथा स्वयं ३५ बार मन्त्र का उच्चारण कर। प्रत्येक बार मन्त्र का उच्चारण करने के बाद लकड़ी के कोयले से एक एक लकीर पृथ्वी पर खींचता जाय। ३६वीं बार मन्त्र जप करके, उन ३५ लकीरों को एक बड़ी आड़ी लकीर द्वारा काट दे तथा रोगी को एक मिनट के लिए अपनी आँखें पृथ्वी की ओर कर लेने को कहे। सप्ताह भर यही क्रिया करें। इस प्रकार इस प्रक्रिया को ३ बार दुहराना चाहिए। तीन बार दुहराने से मन्त्र-जप की संख्या १०८ हो जाती है। इससे ये ही रोगी की पीड़ा दूर हो जाती है। इस प्रयोग को गुरुवार एवं शुक्रवार को करना विशेष हितकर रहता है।

सिर दर्द का मन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को २ कागजों अथवा भोजपत्र के टुकड़ों पर अलग-अलग लिखें। फिर उन्हें तावीज में भरकर एक तावीज को खेत की धरती में गाड़ दें तथा दूसरे को रोगी के सिर में बाँध दें तो सिर का दर्द दूर हो जाता है।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

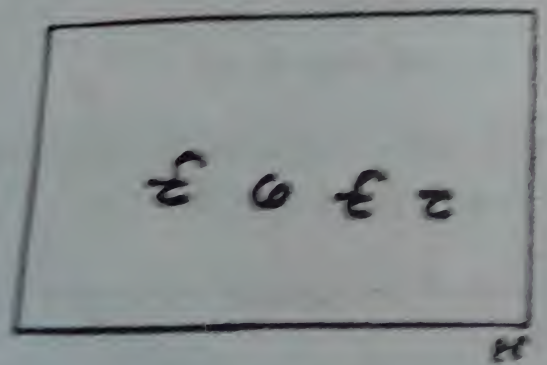

(सिर दर्द नाशक यन्त्र)

सब प्रकार की पीड़ (दर्द) का मन्त्र

मन्त्र—"सकल परदल दर पीरदीय सर्व भूद।"

साधन-विधि—

यह मन्त्र केवल १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

जहाँ कहीं दर्द हो, वहाँ पीली मिट्टी द्वारा इस मन्त्र को ३ बार लिखें। फिर मिट्टी के बराबर गुड़ पीस कर उसी छोटे कांचों की गोली दे तो सब प्रकार की पीड़ा दूर हो जाती है।

पेट दर्द का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को सलाम गुरु परदल सलाम गुरु परदल में बड़, बड़ से हुवा, हुवा में तीन कुवा, तीन कुवा बोटम बाद हुए कुवा पीठ कुवा बाद बाद देवाए आपवा जती हुनुमन्त बार करेवा सहमन्त पूरो मन्त टैटवरी दाखा।"

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र द्वारा ३ बार पानी को अभिमन्त्रित कर, वह पानी पेट दर्द के रोगी को पिला देने से दर्द दूर हो जाता है।

पीलिया का मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को रामचन्द्र कर माथा लक्ष्मण माथा दाण काला पीला राता पीला धोला पीला पीला पीला सारो झाड़ को रामचन्द्र की थां पे माय मेरो अंकि गुरु को शंकि पूरो मन्त टैटवरोदाखा।"

साधन-विधि—

यह मन्त्र किसी शुभ मुहूर्त में १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

[illegible] को [illegible] का [illegible] [illegible] हुआ मन्त्र पढ़ते हुए [illegible] बार फूंके। [illegible] [illegible] [illegible]

दवाओं का मन्त्र

मन्त्र—"[illegible] के [illegible] [illegible] के [illegible] से [illegible], [illegible] के [illegible] से [illegible], [illegible] के [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

लाभ—[illegible]

प्रयोग एवं प्रयोग विधि—

[illegible]

[illegible]

लाभ—"[illegible]

प्रयोग एवं प्रयोग विधि—

किसी दुष्ट ग्रहों से [illegible] बार लगने से यह योग सिद्ध हो जाता है। सिद्ध हो जाने पर ८ बीसुए लवंग और का चोटा लेकर उसमें रात में चोट मारें तो इका का रोग दूर हो।

कौंच का दुकड़ा गड़ जाने के कारण 'चमरा' लगाना

कीड़ा पड़ जाने पर उन्हें नष्ट करने का मन्त्र

लाभ—"जा दिन तिसरी चलती रात्री सहस्र कोटि जल ऊपर, कौंच काली कामणी बसै एक रुखाल। कलिंदर गाड़ी पार कर उका ने बहुत सताये। दुहाई हनुमन्त वली की जो हमारी पैज से जाये। पंखा की कीड़ा मजबूत की खाई, जे कीड़ी नगरी रहे तो आणी हनुमन्त वीर की दुहाई। शब्द साँचा, सिद्ध वाँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच। गाम गाम आदेश गुरु का।"

प्रयोग विधि—

काले तिलों को दाल काल में ७ बार अभिमन्त्रित कर खेतों कीड़ों पर डाल देने से ३ दिन में कीड़ा नष्ट हो जाते हैं।

गाय-भैंस के कीड़ा नष्ट करने का मन्त्र

लाभ—"बहाने पटवारी अरजमाली बड़ा किसके दाढ़ी कीड़ा बड़ा।"

प्रयोग विधि—

चौराहे की ७ भकड़िहारों बेसर, उन्हें इस मन्त्र द्वारा ३ बार अभिमन्त्रित करके, जिस जानवर के कीड़ा हो उसका नाम लेकर, उसके दाहिने ओर के भकड़िहारों लेकर कहे कि 'कीड़ा मरा'। फिर दाहिने अपने जानवर की उन भकड़िहारों को मारते हुए कहे कि 'कीड़ा गया' तो एक प्रयोग में जानवर के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

विशेष—

यह प्रयोग अमावस्या अथवा रविवार को ही करना चाहिए।

नकसीर रोकने का मन्त्र

लाभ—"ॐ नमो आदेश गुरु को बार बार पहाड़वार पार कीजूँ बात बार, नमो कीजूँ तीन बार कोहो की चोट कीजूँ

...

...

साधन-विधि—

...

प्रयोग-विधि—

...

दाद मिटाने का मन्त्र

मन्त्र—"...

साधन-विधि—

...

प्रयोग-विधि—

...

पीड़ा कारक मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रपुर वहन्ति त्रपुर वीर मम शत्रु अमुकस्य पीड़ा कुरु कुरु स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ अपने शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

पूर्वोक्त मन्त्र के अनुसार।

प्रयोग-विधि—

शत्रु के घर के मार्ग में पीपे की सिरकी गाड़कर, उसे शत्रु अपने घर का मार्ग जानकर, उसी मार्ग से निरंतर आता-जाता रहेगा। उसके पैर में दाद की बीमारी हो जाती है।

दाद का मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ गुरुजी नमः दस दैन पूरी दिशा मेरावाद दक्षणवाले विक्रमजीती राजा बैरीघन आज्ञा राज वासूकी के बान हाथ वेगे चलाव।"

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित जल रोगी को पिलाने से दाद की बीमारी दूर हो जाती है।

दाद का मन्त्र (२)

मन्त्र—"हाथ वेगे चलाइ अदिनाथ पवनपुत्र हनिवन्त कर वीर कतमेरुचाल मन्दिर चाल नवग्रह चाल दीप चाल सिंगार-चाल डोरी चाल इन्द्रहि चाल चामर चाल हुलन दिवा सहकाल उठि विधिसरस्वरचाल हम हनुमन्ते सुमरे सिंगा-परोरी वर्धछले तमपरिधान परिहि अब अष्टोत्तरशत व्याधि लावरे विशालाव अहरोविल आहे।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

दाद का मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ ककराके नासयकोन अब अमलित अमुका के हुवे न

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हाथ का मन्त्र (४)

मन्त्र—"खिल की लकरि खिल की काँनि। खिलै करिए काहिरु जानि। एकला जाइ दाहुकरि ज अमुका अंगेज पकड़ दानु खिलाइ के लेइ करि खिल पुत्र को जाक प्रसन्न।"

टिप्पणी—

इस मन्त्र में यहाँ 'अमुका' शब्द आता है, वहाँ रोगी के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन तथा प्रयोग-विधि—

[illegible] के अनुसार।

कठभेदुकी का मन्त्र

मन्त्र—"कोके के सिहोरा करे लालबान एकमास के मुखविवे पुरोडासाहि जिसकठवरुआके काल खरकरुआ मन्त्र सुहि उतार्वे लोका पोलिनि श्री पार्वती आगु आगु उपरबैसे होउक।"

साधन-विधि—

यहाँ के समय [illegible] की संख्या में जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कौरी गड़ाली के सिर का मन्त्र

मन्त्र—"कौरी कौरी मेखलाली माटि माटे दुनियाली सिंका लालाए ता जोकरा सौरा पैरि गड़ाहि महादेव गहि दुःखहि सिर निसिर होइ जाइ।"

साधन-विधि—

यहाँ के समय [illegible] की संख्या में जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित जल सिर में देने से कौरी गड़ाली का सिर उतर जाता है।

शुल-नाशक मन्त्र

मन्त्र—"कालि कालि महाकालि नमोस्तुते हन हन दह दह शूल विशूलेन हे फट् स्वाहा।"

साधन विधि—

यहाँ के समय [illegible] की संख्या में जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

इस मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित जल को पिलाने से सब प्रकार के शूल शान्त हो जाते हैं।

घरन हिकाने आने का मंत्र (१)

मंत्र—"ऊँची नीची धरणी श्री महादेव की घरनी टली घरन आवूँ ठौर सत सत भाखै श्री गोरखनाथ।"

विधि—

उक्त मन्त्र से झाड़ा देकर, सवा तीन माशे चाँदी की अंगूठे पाव के अंगूठे से पहना देने से धरन ठिकाने पर आ जाती है।

धरन ठिकाने आने का मंत्र (१)

मन्त्र—"ॐ नमो नाडी नाडी नौ सै बहत्तर सौ कोस चलै अनाडी डिगे न कोण चले न नाड़ी रक्षा करे जती हनुमन्त की आन मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विधि—

कच्चे सूत के धागे में ९ गांठें लगा कर उसे छल्ले की भाँति बना लें। फिर उसे रोगी की नाभि पर रखकर उक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़ते हुए नाभि के ऊपर फूंक मारने से धरन ठिकाने पर आ जाती है।

कखलाई का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहाँ बैठा हनुमन्त आई पसे न फूटै चले न पोड़ा रक्षा करे हनुमन्त वीर दुहाई गुरु गोरखनाथ का शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।"

धि—

२१ बार मन्त्र पढ़कर नीम की डाली से झाड़ा देने तथा कखलाई स्थान पर पृथ्वी की मिट्टी लगा देने से वह दो-तीन दिन में बैठ है।

---

११ विविध कार्य-साधक मन्त्र

विविध कार्यों के विषय मे

सभी कार्य मन्त्र-प्रयोग द्वारा निष्पादित नहीं होते, तथापि कुछ अवसरों पर मन्त्र-प्रयोग विविध कार्यों की सम्पन्नता में साधक सिद्ध होते है।

प्राचीन काल में धनुष-बाण, तीर, तोप, ढाल-तलवार आदि से लड़ाइयाँ हुआ करती थी, उस समय इन शस्त्रास्त्रों के प्रहार से बचने तथा इनका निशाना चुका देने अथवा धार को कुण्ठित करने हेतु मन्त्र प्रयोग का प्रचलन था। परन्तु वर्तमान काल में युद्ध का स्वरूप ही बदल गया है। अब युद्ध में मशीनगन, टैंक और बमों का प्रयोग होता है, अतः धनुष तलवार आदि के अवरोधन-मन्त्र अनुपयोगी कहे जा सकते है, तथापि व्यक्तिगत झगड़ों के समय यदि तीर-तलवारादि का उपयोग किया जा रहा हो तो इन मन्त्रों का प्रयोग प्रभावकारी सिद्ध हो सकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रकरण में शस्त्रास्त्र-स्तम्भन सम्बन्धी प्रयोगों का उल्लेख किया गया है।

शूकर, मूषक, टिड्डी आदि को भगाने, कुश्ती जीतने, बाघ, सर्पादि हिंसक जीवों को मार्ग से हटाने आदि की आवश्यकता किसी समय भी पड़ सकती है, अतः इनसे सम्बन्धित प्रयोग तथा विभिन्न प्रकार के चेटक दिखाने सम्बन्धी प्रयोग भी इस प्रकरण में संकलित किये गये हैं। समुचित सिद्धि के पश्चात् इन मन्त्रों का प्रयोग हितकर सिद्ध हो सकता है।

शस्त्र की धार बाँधने का मंत्र (१)

निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी भी एक मन्त्र द्वारा ७ बार मिट्टी को अभिमन्त्रित कर शरीर पर लगाने से शस्त्र की धार बंध जाती है अर्थात् किसी शस्त्र की धार शरीर पर चोट नहीं कर पाती।

मन्त्र—"जहिआ लोह तोर शिर जाका घाव मासकर जानि हिया आनन्त सोचर करहु मैं बांधौं धार-धार मूठि धनि दूनौ तारि ठडीही मोहिन अडाफाटिहि चण्डी दीन्हि वर मोहिं धार जेठठै तोरिरइ ईश्वर महादेव की दुहाई मोरे पथ न आउ धार धार बांधौं लेहु उठे धार फुटै मुनै फुटै मोरि सिद्धि गुरू के पांव शरण।"

शस्त्र की धार बाँधने का मंत्र (२)

मन्त्र—"माता-पिता गुरू बांधौ धार बांधौ अस्त्री वश्ये कटै मुनै बांधा हनुमन्तनमुर नवलाख शूद्रनपा के पांउ रक्षा कर श्री गोरखराउ ऐता देउन वाचा नरसिंह के दुहाइ हमारी सवति आ।"

शस्त्र की धार बांधने का मन्त्र (३)

मन्त्र—"धार धार खण्ड धार धार बांधू तीन बार उड़े लोह ना लागे घाव सीर राखे श्री गोरखराय लोह का कड़ा मूँज का वाण हनुमत मेल्ही लाल यह पिण्ड लागे न पैनी धार शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

सूची बन्धन मन्त्र

सुई हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र को ७ बार पढ़ें, फिर जहाँ बांधोगे, वहीं छेदेगी।

मन्त्र—"धार धार बाँधौ सात बार न लागै न फूटै न आवै घाव रक्षा करै श्री गोरखराव मेरी भक्ति गुरु की शक्ति हनुमन्त वीर रक्षा करै फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

शस्त्रास्त्र-स्तम्भन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को ७ बार पढ़कर सर्वांग को धूलि स्पर्श कराने

अर्थात् पृथ्वी की धूलि में लोट जाने से शस्त्रास्त्र का स्तम्भन होता है अर्थात् शस्त्रास्त्र की चोट नहीं लगती।

मन्त्र—"बांधो तूपक अवनि वार न धरै चोट न परै घाउ करै श्री गोरखराउ।"

तोप बाँधने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरू को जल बांधूं जलवाई बांधूं बाँधूं ताखी ताई, सवा लाख अहेडी बांधूं गोली चले तो हनुमन्त जती की दुहाई, शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग विधि—

एक बड़ा गाय के दूध को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके तोप के मुँह पर मारें तो उससे गोला न निकले।

तलवार बाँधने का मंत्र

मन्त्र—"ॐ धार धार अधर धार धार, बाँधू सात बार कटे न रोम ना भीजे चीर, खांड़ा की धार ले गयो हनुमन्त वीर, शब्द सांचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग विधि—

उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित मिट्टी को अपने शरीर पर लगा कर युद्ध करें तो दुश्मन की तलवार की धार से चोट न लगे।

ढाल रोपने का मन्त्र (१)

निम्नलिखित में से पहले मन्त्र को कलाई पर तथा दूसरे को ताँबे के पैसे पर ७ बार पढ़कर, उसे ढाल पर मारने से ढाल का स्तम्भन हो जाता है—

मन्त्र—"ॐ चौंसठ जोगनी बावन वीर छप्पन भैरूँ सत्तर वीर आय बैठा ढाल के तीर हालीहले न चाली चले वादी वाद शत्रु सों मेले या ढाल ले चले तो जाहर पीर की दुहाई फिरे, शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

ढाल रोपने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ काली देवी किलकिला भैरूँ चौंसठ जोगनी बावन वीर, तांबा का पैसा वज्र की लाठी मेरा कीला चले न साथी ऊपर हनुमन्त वीर गाजे मेरा कीला पैसा चले तो गुरु गोरखनाथ लाजे शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

पहुँचा छेदने का मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर बकरे को मारें तो उसे घाव नहीं लगेगा—

मन्त्र—"काले तील कवेला तील गुजरी बैठी वीर पसारै सुई न बेधे माधाइ पीर न आवें काली करुइमती भारी दुष्य तिवुकीलार अवनी बांधौ सुई अषपांडे की धार आवै न लोहू न फुटै घाव रक्षा करै श्री गोरखराउ।"

गागर छेदने का मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ने से गागर में छेद नहीं होता।

मन्त्र—"नीरा धार बांधौ लक्षवार न वहै घाउ न फूटै धार रक्षा करै श्री गोरखराउ।"

धनुर्बन्धन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ने से धनुष बँध जाता है अर्थात उससे तीर नहीं छूटता।

मन्त्र—"ॐ सार सार माहासारसो बांधौ तीनि धार न धरै चोट न परै घाव रक्षा करे श्री गोरखराउ।"

बन्धन का मिश्रित मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ने से अनेक वस्तुओं का बन्धन होता है—

मन्त्र—"गोरख चले विदेश कहैं सातो देहे बांधि से पाँचों चोर-विग यथा गोरखनाथ की दुहाई जौं काहु सतावै।"

सुई छेदने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो चण्डप चूर्न लोहासार लोहा का पत्र बड़े लुहार मोढ़ि माड़ि कर की या पानी जारे लोहा भस्म हुलारी रामवीर तोलावे मांटी लछमन वीर मूँदो घाव पाच फूटे पीड़ा करे, तो महावीर रक्षा करे शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग-विधि—

विभूति (भस्म) को इस मन्त्र से ७ वार अभिमन्त्रित करके सुई को अभिमन्त्रित करे, फिर उसे गाल में छेदे तो पीड़ा न हो।

सुई छेदने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"धार-धार महाधार धार बांधूं सात बार अणी बाँधू तीन बार मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो-हवाचा दुई गुरु गोरखनाथ की छू।"

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र से सुई को ७ बार अभिमन्त्रित करके गाल में छेदे तो पीड़ा न हो।

अणी-बंध का मन्त्र

मन्त्र—"ह्रं ह्रं दर ॐ रक्त वंग सर होइ निर्विष जागन्त भो नाथ होइ यह निर्विष।"

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को ३ बार पढ़कर लोहे पर फूँकें तो अणी न फूटे और ३ बार मिट्टी पर फूँक कर, उसे अपने शरीर पर लगाये तो अणी न लगे।

लाय-स्तम्भन मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो कोरा करवा जल सूँ भरिया, ले गोरा के सिर पर धरिया, ईश्वर ढोले गोरजा न्हाइ, जलती आग सोतल हो जाइ, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग-विधि—

कोरा करवा (कुल्हड़) लेकर उसमें पानी भरे और उसे उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करे। फिर उस पानी के छींटा जितनी दूर तक लगा सके लगाये, उतनी दूर में लाय नहीं लगेगी।

पाषाण-स्तम्भन मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ने से पाषाण (पत्थर) का स्तम्भन होता है। अर्थात् गिरता हुआ पत्थर रुक जाता है अथवा पत्थर के कारण स्वयं को चोट नहीं लगती—

मन्त्र—"समुद्र समुद्र में दीप दीप में कूप कूप में कुइ जहाँ ते चले हरिहर परे चारों तरफ बरावत चला हनुमत बरावत चला भीम ईश्वर गौरी चला, भोला ईश्वर भांजि

मठ में जाइ गौरा बैठी द्वारे न्हाय ठण्ढे नउट परे न बोला राजा इन्द्र की दुहाई मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

कढ़ाई स्तम्भन मन्त्र (१)

निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक की ठीकरी या नमक की डेली पर ७ बार पढ़ कर चूल्हे में डाल देने से कढ़ाही का स्तम्भन होता है अर्थात् गर्म कढ़ाही ठण्डी पड़ जाती है। अथवा कढ़ाही गर्म करने से जो गर्म नहीं होती।

मन्त्र—"मट्टि थांभो मट्टि अरथांभो थांभो माटी सार, थांभनो आपनो बैसन्दर तेलहि करो तुषार।"

कढ़ाही स्तम्भन मन्त्र (२)

मन्त्र—"वन बाँधो वन में दिनि बाँधो बाँधो कण्ठाधार, तहाँ थांभो तेल तेलाई औ थांभो बैसन्दर छार। वन में त्रिणीतलताते लावे जय पार ब्रह्मा विष्णु महेश तीनि अचलकेदार देवी देवी कामाक्षा की दुहाई पानी पन्थ होई जाइ।"

विधि—

पहले मन्त्र के अनुसार।

तैल-स्तम्भन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को ७ बार पढ़ने से कोल्हू से तैल निकलना बन्द हो जाता है—

मन्त्र—"तेल थांभो तेलाई थांभो अग्नि बैसन्दर थांभो पांच पुत्र कुन्ती के पांचों चले केदार अग्नि चलन्ते हुम चले अगिया परा तुषार।"

अग्नि- स्तम्भन मन्त्र (१)

निम्नलिखित में से किसी एक मन्त्र को ७ बार पढ़ने से अग्नि-स्तम्भित हो जाती है अर्थात् जलाने से भी अग्नि नहीं जलती अथवा जलती हुई अग्नि ठण्डी पड़ जाती है।

मन्त्र—"अजान बांधो विजान बांधो बांधो घोराघाट, आठ कोटि बैसन्दर बांधो अस्त हमारा भाई। आनहि देखें झझके मोहि देखि बुझाइ। हनुवत बांधो पानी होइ जाइ अग्नि भवेते के भवे जसमत्तो हाथी होइ बैसन्दर बांधो नारायण साखि मोरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

अग्नि-स्तम्भन मन्त्र (२)

मन्त्र—"अग्नि बांधों वाहन बांधों कुंत्याहा बांधो बांधो बीच की वायु, चारिहु खुटं वैसंदर बांधों आतस मेरा भाव। अवर देखे उमगे हमहि देखे शीतल होइ जाइ, अग्नि गलिगण्डे लकड़ी बांधों बहिनि बांधो शाल। हाथ जरे न जिह्वा जरे हनुवन्त वीर की आज्ञा फुरे देखि वायु वीर हनुमन्त तेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

अग्नि-स्तम्भन मन्त्र (३)

मन्त्र—"काची हाँडो काचौ पाली, ऊपर वज्र की थाली, नीचे भैरूं किल किलाय ऊपर नृसिंह गाजे, जो इस हांडी को आँच लगे तो अंजनी पुत्र लाजे दुहाई हनुमन्त जती की दुहाई अंजनी के पुत्र की शब्द साँचा पिण्ड साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ नमो जल बाँधूं जलवाई बाँधूं बाँधूं तूवा ताई, नौसं गाँव का वीर बुलाऊं रहो रहो रे कड़ाही। जती हनुमन्त की दुहाई।"

विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

अग्नि बुझाने का मन्त्र

मन्त्र—"हिमाचलस्योत्तरे पार्श्वे मारीचो नाम राक्षसाः। तस्य मूत्र पुरोषाभ्यां हुताशं स्तम्भयानि स्वाहा।"

विधि—

इस मन्त्र द्वारा जल को ७ बार अभिमन्त्रित करके उसे अग्नि में डालें तो अग्नि बुझ जाती है।

अग्नि-मुक्तारन मन्त्र

मन्त्र—"अग्नि भवते के भवे जशमदमती परंपिण्ड दुःख पावै दोहाई नरसिंह जग दुःख पावे।"

विधि—

इस मन्त्र को ७ बार पढ़ने से बांधी गई अग्नि का बन्धन छूट जाता जाता है और वह पुनः जलने लगती है।

पूंगी (तुरही) बांधने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ वादी आया वादन करता बैठा बड़ पीपर की छाया, रह रे वादी वाद न कीजे बांधूं तेरा कण्ठ अरु काया,

बोलूं दुःखी और बाद बोलूं धोती और साधना बाबू कंठ की दुःखी बाजे और प्रभात की बानी अब तेरी २ पुंगी को बाजे लोक बोले नाहरसिंह, ऊपर हनुमन्त गाजे, गरी बोली दुःखी बाजे तो गुरु गोरखनाथ लाजे।"

प्रयोग-विधि—

इसको उक्त मन्त्र से ३ बार अभिमन्त्रित करके पुंगी (तुरही) पर बजाने से उसका बजना बन्द हो जाता है।

पुंगी (तुरही) खोलने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ गुरु को शब्द आनन्द नाद खुल गई पुंगी भयो अकाश शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो-वाचा।"

प्रयोग-विधि—

उक्त मन्त्र से धूलि को ३ बार अभिमन्त्रित करके पूंगी (तुरही) पर डालने से बंधी हुई तुरही खुल जाती है अर्थात् वह बजने लगती है।

कुश्ती जीतने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को अंगा पहरूं भुजंगा पहरूं पहरूं लोहासार, आते के हाथ तोड़ूं पैर तोड़ूं तोड़ूं सकल शरीर, पीठी साथ मुठी तोड़ूं ते हनुमन्त वीर उठ उठ नाहरसिंह वीर तू जा उठ सोलासौ सिंगार मेरी पीठ लागे, माटी हनुमन्त वीर बुलावे तोहि पान सुपारी नारियल अपनी पूजा देहु अपना सा बल मोहि पर देहु मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा गुरु का शब्द साँचा।"

साधन-विधि—

किसी भी मंगल अथवा शनिवार को रात्रि में या प्रातः के समय [illegible] हनुमानजी का पूजन करें। तत्पश्चात् वे आसन पर बैठ कर [illegible] १२५ बार मन्त्र जपें। मन्त्रजप की समाप्ति पर उसी आसन पर बैठे-बैठे अपने दाहिने हाथ के ऊपर [illegible] अपने दाहिने के लिए तरह-तरह की अच्छी चीजें [illegible]

प्रयोग-विधि—

कुश्ती लड़ते समय हनुमानजी की तस्वीर अपने [illegible] अपने अंदर फूंक कर, कुश्ती लड़ने से पहले [illegible]

फेंका उठाने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ हनुमंत वीर हनुमंता बल दे सिंह, बल का दीपक तेरा दादा, सबका दृष्टि बांधि दे मोहि अपना मुख लोक सब कोई, बाट बटोरा बांधी लोके जाने मोहि विगोदे साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग-विधि—

उक्त मन्त्र से धूलि को ७ बार अभिमन्त्रित करके [illegible] तो वह उड़ जाय।

पत्थर बरसाने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो उच्छिष्ट चाण्डालिनी देवी मह सिद्धकिनी क्लीं ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

दीपावली अथवा होली की रात्रि में या ग्रहण के समय [illegible] की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

शनिवार के दिन जहाँ पुदीना जमा हो, उसको चिता [illegible] करके उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके रख आवें, फिर ३ घड़ी बाद दुबारा जाकर उन

कंकड़ियों को निकाल लायें। ये कंकड़ियाँ जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दी जायेंगी, वहां पत्थर बरसने आरम्भ हो जायेंगे। जब उन कंकड़ियों को बाहर निकाला जायेगा, तभी पत्थरों का बरसना बन्द हो सकेगा।

हाँडी बांधने का मन्त्र

मन्त्र—"खनाह की माटी चरी का पानी गध चढि भीख यलानी काची पाली ऊपर जड़ी वज्र की ताली तुले भैरों किल-किलै ऊपर नरसिंह गाजे मेरी बांधें हाँडी उकल तो गुरु गोरखनाथ की लाज। शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।"

प्रयोग-विधि—

रास्ते की ७ कंकड़ी लेकर, एक-एक कंकड़ी पर सात-सात बार मन्त्र पढ़कर हाँडी में मारने से चाहे जितनी आग जलाई जाय, फिर भी हांडी गरम नहीं होगी।

बाघ बराने (भगाने) का मंत्र (१)

निम्नलिखित मन्त्र को तीन बार पढ़कर चार कंकड़ चारों दिशाओं में डालकर, उसके बीच में बैठ जाने से बाघ (व्याघ्र) समीप नहीं आता। यदि कभी जंगल आदि में बाघ से घिर जाने और प्राण जाने का भय उपस्थित हो तो इस प्रयोग को करना चाहिए।

मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—"बैठी बठा कहां चल्यौ पूर्व देश चल्यौ आँख बांध्यौ तीनों कान बांध्यौ तीनों मुँह बांध्यौ मूँह केत जिह्वा बांधौ अधौ डांड बांधौ चारिउ गोड बांधौ तेरी पोछि बांधौ न बांधौ तो मेरी आन गुरु की आन वज्र डांड बांधौ दोहाई महादेव पार्वती के।"

बाघ (भगाने) का मन्त्र (२)

निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक की १० बार पढ़ कर अपने

सर्वाङ्ग (सम्पूर्ण शरीर) का रेणु पृथ्वी की मूर्ति से स्पर्श कराने से अर्थात् पृथ्वी की धूलि में लोट जाने से बाघ से रक्षा होती है।

मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—"महादेव का कुक्कर लुटै लुटै कान मोरे निकट आवहु सुनि आवै लोहनपह पाउ रक्षा कर श्री गोरखराउ।"

बाघ बराने का मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ सत्य माता शंकर पिता शंकर किलइ चारिउ दिशा जहाँ जहाँ मै शंकर जाइ, तहां तहां मेरी किंकर जाइ जहाँ जहां मेरी दीठि तहां-तहां मेरी मूठि, जहां जहां मेरी नाद को शब्द सुनि आवे हो नरसिंह वीर माता बाघेश्वरी को दूध हराम कर कहौ कवन कवन किलोवानपुवां न पुंगलो और शार्दूल केशरि तेंदुवा सोनहार अधिआगाधिआ अटिआर दूदि आर हरिआर काठिपठि पराधिना चलि घेरिये तो नहि आरे अवनि किलौ नारसिंह वीर किलै कछु कवन कवन किलोगाइका जाया भद्र सिंह जाया भेड़ी का जाया घोड़ी का जाया छेरी का जाया दुइयावचौ पावक घाउ लागइ शिव महादेव को जटा के घाव लागे पार्वती के वीर चक्रे हाँके हनुमन्त बरावे भीमसेनि मन्त्रो बाँधे जो वाये सीम।"

विधि—

मन्त्र सख्या २ के अनुसार।

बाघ बराने का मन्त्र (४)

मन्त्र—"आरापुरवारा परवत पर बारी जहाँ बोइक पसारी जाको तेगौरानी रानी ताकी बनाई जा रीति के बांधौ बाघ बोलाई एही वन छाँड़ि दूसरे वन देखि परीक्षा होइ तौ

महादेव गौरा पार्वती के दोहाइ हनुमन्त जती की नोना चमारि की आज्ञा का बातें कुवाचा चूकै तो ठाढ़े सूखै गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ।"

विधि—

मन्त्र सख्या २ के अनुसार ।

बाघ बराने का मन्त्र (५)

मन्त्र—"डांडल कालकमुहविकराल विरराक्षदेकरे अहार नामदेव मेल जटाजाऊ बाघ जोजन सब आठ ।"

साधन-विधि—

उक्त सभी मन्त्र किसी ग्रहण के समय अथवा दीपावली की रात में १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाते हैं । मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय इनका प्रयोग आरम्भ में वर्णित रीति के अनुसार करना चाहिए ।

बाघ बराने का मन्त्र (६)

मन्त्र—"बघ बाँधूँ बघायन बाँधूँ बघ के सातों बच्चा बाँधूँ राह घाट मैदान बांधूँ दुहाई वासुदेव की दुहाई लोना चमारी की छू ।"

साधन-विधि—

सात मंगलवारों को यह मन्त्र १०८ की संख्या में जपने मे सिद्ध हो जाता है ।

प्रयोग विधि—

मार्ग में बाघ के मिलने पर इस मन्त्र को ३ बार पढ़कर उसकी ओर फूँक मार देने से बाघ रास्ते से हट जाता है तथा आक्रमण नहीं करता ।

मार्ग में सर्प, चोर, नाहर आदि का भय न होने का मन्त्र

मन्त्र—"फरीद चले परदेश को कुत्तब जी के भाव । सांपां चोरां नाहरां तीनों दांत बंधाव ।"

साधन-विधि—

यह मन्त्र किसी शुभ मुहूर्त में १००८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है ।

प्रयोग विधि—

मार्ग में जहाँ रात्रि में शयन करना हो, वहां बैठकर तीन बार मन्त्र पढ़कर ताली देने से सर्प, चोर, नाहर आदि का भय उपस्थित नहीं होता ।

सर्प भगाने का मन्त्र

नीचे लिखे श्लोकों को पढ़कर तीन तालियाँ बजाकर, रात्रि के समय सो जाने से सर्प का भय नहीं होता अर्थात् सोते समय सर्प निकट नहीं आता ।

श्लोक इस प्रकार है—

सर्पायसर्प भद्रं ते दूर गच्छ महाविष ।
जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तिक्यवचनं स्मर ॥
आस्तिक्य वचनं स्मृत्वा यः सर्पो न निवर्त्तते ।
सप्तधाभिद्यते मूर्धिन वृक्षात्पक्वफलं यथा ॥

शूकर तथा मूषक भगाने के मन्त्र

जिस खेत या घर में शूकर तथा मूषक (चूहों) का उपद्रव हो, वहाँ निम्नलिखित में से किसी एक मन्त्र को स्नानोपरान्त ५ बार पढ़कर, पांच गांठ हल्दी और अक्षत शूकर-मूषकों के आने वाले स्थान पर रख देने से वे भाग जाते है तथा वहाँ फिर कभी नहीं आते ।

मन्त्र इस प्रकार हैं—

मन्त्र—(१) "हनिवंत धावति उदरहि ल्याये बांधि अब खेत खाय सूअर और घरमां रहे मूष खेत घर छाँड़ि बाहर भूमि जाइ दोहाइ हनुमानक जो अब खेत मुँह सुवर घर महँ मूस जाइ ।"

मन्त्र (२)—"चितफविमनचूहा गांधी एपारी रावन घर बाँधी।"
मन्त्र (३)—"हरदोकर गांठी अक्षत पढ़िके बरावइ दुष्टक खेत घर मँह। पीत पीताम्बर मूज़ागांधी। ले जाइहु हनुवंत तु बांधो, ए हनुवंत लंका के राउ। एहि कोणे पैसे हु एहि कोणे जाउ।"

चूहा भगाने का मन्त्र

स्नानोपरान्त निम्नलिखित मन्त्र को ५ बार पढ़कर ५ हल्दी की गांठ तथा थोड़े से चावलों को, घर या खेत में जहाँ चूहों का उपद्रव हो, वहां डाल देने से चूहे भाग जाते हैं।

मन्त्र इस प्रकार है—

"मूसा चूहा कुम्भ कराई। जबही पठवौ तबही जाई। मूस के ऊपर मूसक पेट। तू जाइ काटहु आन के खेत। गौरा पार्वती की दुहाई महादेव की आज्ञा।"

बाघ, बिच्छी, सर्प तथा चोर-भय नाशक मिश्रित मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को ३ बार उच्चारण करके तीन ताली बजाकर रात्रि के समय शयन करने से बाघ, बिच्छी, सर्प तथा चोर का भय दूर होता है।

मन्त्र इस प्रकार है—

"बाघ बिसुनी सर्प चोर चारिउ बांधौ एक ठौर। धरती बाधा आकाश बिंधा रक्ष रक्ष श्री परमेश्वरी कालिका वाचा दुहाई महादेव की।"

बीस बरावे (भगाने) का मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को ३ बार उच्चारण करने से बीस भाग जाती है—

"बिसुनीबिसुनाक पठै काल एहू एहूँ नाथकै मान मारे पहाँ बाई बीस मरहु बिनजौ चापुहु बीस।"

टिड्डी उड़ाने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को आकाश की जोगिनी पाताल की आदि शक्ति माई, पश्चिम देस सों आई, गोरखनाथ आकाश को चलाई, पश्चिम देस मध्य में कूवा, जहां भवानी जन्म तेरा हुवा, टीडी उपजी सुर्ग समाई, जब टीडी गोरख ने बुलाई, एक जाइ तौवा वैसी एक जाई रुपा, वैसी एक जाई सौना, वैसी एक जाई घोड बहानी, बकरा दंत में हक दंत, सरपा दंतादि दंत, अन्न छोड़ वनकों खाव, धूल छोड़ आकाश लख जाव, स्वेत कुकड़ी मद्य की धार, टीडी चली समंदर पार, हकारे हनुमंत बुलावे भीम जा टीड़ी पैला को सीम, नीचे बैठ किल-किले ऊपर हनुमत गाजे, मेरी सीम में खाय अन्न पानी तो गुरु गोरखनाथ लाजे, मानो भवानी, भवानी का पूत कूँजे जो मेरी सीव में अन्न पानी आवेगी तो दुहाई जैपाल चक्रवे की फिरेगी।"

साधन-विधि—

होली-दिवाली की रात अथवा ग्रहण में १०००८ बार जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि

सरेंद मुर्गी तथा शराब को ७ बार उक्त सिद्ध मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपनी सीमा के बाहर छोड़ दो खेत में बैठा टिड्डी दल उड़कर सीमा से बाहर चला जाय।

टिड्डियों को अपनी सीमा से बाहर निकालने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो पश्चिम देस में अस्तावल हुवा, वहाँ अबैसाल दे खुदाया कुवा। जा कुवा में निकला वीर, वहाँ मेला हुवा बावन वीर। जाने मिलकर मता उपाया, हाथ पकड़

टीड़ी तूँ लाया। सुमरे टीड़ो बाँधू डाढ, जमीं आस्मान बीच रहस्यो गाढ़। उतरे तो तेरी परले बाँधूँ, चढ़े आस्मान तो सर ले साधूँ। तीजा तेरा जाया पाऊँ, बारा कोस में काम कराऊं। इहि विधि बिचरे बावन वीर। जा डारा समुद्र के तीर। मेरी सीम पर हनुमत गाजे, किसी की चलाई तें चले मेरा डंका चारों कूंट में बाजे। इहि विधि चलाई न चलेगो तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर लाजे, शब्द सांचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—

दीवाली अथवा होली की रात या ग्रहण में १००८ बार पढ़ने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

जब कभी यह देखें कि टिड्डी-दल उड़ता हुआ आ रहा है और वह अपने खेत की सीमा में बैठने वाला है, तब एक ठीकरा लेकर उस पर ३ बार मन्त्र पढ़ें तथा अपनी कनिष्ठा अँगुली का रक्त उस पर लगायें। तदुपरान्त पैदल अथवा घोड़े पर बैठ कर दौड़ लगाता हुआ, जहाँ जाकर रुकें, वहाँ तक टिड्डी दल का पड़ाव नहीं पड़ेगा। इस प्रकार वे साधक के खेत की सीमा से बाहर चली जायेगी।

टिड्डी को बाढ़ बाँधने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरू को अजर बाँधूँ बजर बाँधूँ बाँधूँ दसों द्वार, लोह का कोड़ा हनुमंत ठोंक्या धरती घाले घाव, तेरा टीड़ी भस्मंत हो जाइ कोली टीडी कीलूँ नाला, ऊपर ठोकूँ वज्र का ताला, नीचे भैरूँ किलकिले ऊपर हनुमत गाजे, हमारी सींव में अन्न पाणी भखे तो गुरु गोरखनाथ लाजे। शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—

होली, दिवाली की रात अथवा ग्रहण के दिन १००८ की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को ठीकरी पर ७ बार पढ़ कर, उसे जिस खेत में टिड्डी दल बैठा हो, वहाँ डाल देने से टिड्डियों की दाढ़ बँध जाती है और वे फसल को नुकसान नहीं पहुंचा पाती।

टिड्डी को धरती पर बैठाने का मन्त्र

यदि उड़ती हुई टिड्डियों को नहीं बैठाना हो तो निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए—

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को अजर कीलनी वज्र का ताला, कीलूँ टीड़ी धरूँ मसान, धर मार धरती सों मार सवा अंगुल पांख धरती में गड़े, ऊपर मोहम्मद वीर की चौकी चढ़े, पथ धरती चाटे खाइ, बाँये हाथ में ल्हे हाथ में उठाव, मेरा गुरू उठावे तो उठजे और चक्रसों उठे तो दुहाई गोरखनाथ की फिरे आदेश गुरू को।"

साधन एव प्रयोग-विधि—

पूर्वोक्त मन्त्र के अनुसार।

———

टीडी कूँ लाया। सुमरे टीड़ो बाँधू डाढ, जमी आस्मान बीच रहस्यो गाढ़। उतरे तो तेरी परले बाँधूं, चढ़े आस्मान तो सर ले साधूं। तीजा तेरा जाया पाऊं, बारा कोस में काम कराऊं। इहि विधि बिचरे बावन वीर। जा डारा समुद्र के तीर। मेरी सीम पर हनुमत गाजे, किसी की चलाई तें चले मेरा डंका चारों कुट में बाजे। इहि विधि चलाई न चलेगो तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर लाजे, शब्द साचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—

दीवाली अथवा होली की रात या ग्रहण में १००८ बार पढ़ने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

जब कभी यह देखें कि टिड्डी-दल उड़ता हुआ आ रहा है और वह अपने खेत की सीमा में बैठने वाला है तब एक ठीकरा लेकर उस पर ३ बार मन्त्र पढ़ें तथा अपनी कनिष्ठा अँगुली का रक्त उस पर लगायें। तदु परान्त पैदल अथवा घोड़े पर बैठ कर दौड़ लगाता हुआ, जहाँ जाकर एक, वहाँ तक टिड्डी दल का पड़ाव नहीं पड़ेगा। इस प्रकार वे साधक के खेत की सीमा से बाहर चली जायेंगी।

टिड्डी को बद्ध बाँधने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को अजर बाँधूं अजर बाँधूं बाँधूं इसों द्वार, लोह का कोड़ा हनुमंत ठोक्या धरती धसे पाव, तेरा टीड़ी भस्मंत हो जाइ कोली टीडो बाँधूं ताला, ऊपर टोकूं दस का ताला, नीचे थौहूँ किलकिले ऊपर हनुमत गाजे, हमारी सींव में अन्न पानी अछे तो गुरु गोरखनाथ लाजे। शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—

होली, दिवाली की रात अथवा ग्रहण के दिन १००८ की संख्या में अपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को ठीकरी पर ७ बार पढ़ कर, उसे जिस खेत में टिड्डी दल बैठा हो, वहाँ डाल देने से टिड्डियों को दाढ़ बंध जाती है और वे फसल को नुकसान नहीं पहुचा पाती।

टिड्डो को धरती पर बैठाने का मन्त्र

यदि उड़ती हुई टिड्डियों को नहीं बैठाना हो तो निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए—

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को अजर कोलनी वज्र का ताला, कोलूँ टोड़ी धरूँ मसान, धर मार धरती सो मार हवा अगुन पांख धरती में गड़े, ऊपर मोहम्मद वीर की चौकी चढ़े, पथ धरती चाटे खाइ, बाँधे हाथ में लहे हाथ में उठाव, मेरा गुरु उठावे तो उठवे और चकरी उठे तो दुहाई गोरखनाथ की फिरे आदेश गुरु को।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

पूर्वोक्त मन्त्र के अनुसार।

———

१२

चोरी-विषयक प्रयोग

चोरी के विषय में

चोरी की घटनाएं प्रायः सभी जगह होती रहती है। इन घटनाओं का पता लगाने के लिए मन्त्र-प्रयोग की प्रथा भी बहुत पुरानी है।

चोरी का पता लगाने विषयक मन्त्र-प्रयोगों की अनेक विधियां है, उनमें से ११ विधियों का उल्लेख इस प्रकरण में किया जा रहा है।

चोरी गये माल का पता लगाने में 'कटोरी-चालन' की विधि अत्यन्त आश्चर्यजनक है। इस विधि में मन्त्र-प्रेरित कटोरी अपने स्थान से चलकर, वहां जा पहुंचती है, जहाँ चोरी किया गया माल छिपाकर रक्खा गया हो। इस प्रयोग के लिए कटोरी को विशेष रूप से तैयार कराना पड़ता है। मन्त्र संख्या ३ में इस प्रकार की कटोरी तैयार कराने की विधि का उल्लेख किया गया है।

कटोरी-चालन के प्रयोग में मन्त्र प्रेरित कटोरी चोरी के छिपाये गये वाले स्थान पर जाकर रुक जाती है और यदि चोर वहीं उपस्थित हो तो उसके सिर पर चढ़ जाती है। कुछ प्रयोगों में चोर के मुँह से खून निकलने लगता है तथा कुछ के द्वारा चोरी गये माल के सम्बन्ध में स्वप्न में पता चल जाता है। अस्तु यदि चोरी के माल के कहीं समीप ही गढ़ा होने का सन्देह हो अथवा किसी व्यक्ति विशेष पर चोर होने का सन्देह हो तो कटोरी लगाने का चालन का प्रयोग करना चाहिए अन्यथा अन्य प्रयोगों द्वारा चोरी का पता लगाने का प्रयत्न करना चाहिए।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (१)

मन्त्र—"उदमुद जल जलाल पकड़ चीटी धर पछाड़ भेज कुत्ता त्या व मुद्दा कहार या कहार।"

साधन-विधि—

होली, दिवाली अथवा ग्रहण के दिन १०००० की संख्या में जाप से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

नदी के किनारे पहुंच कर, इस मन्त्र को रात्रि के समय ११ बार पढ़कर सो जाय तो ७ दिन के भीतर स्वप्न में यह ज्ञात हो जायगा कि माल किसने चुराया है और वह कहाँ रखा हुआ है।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नाहरसिंह वीर हरे कपड़े ॐ नाहरसिंह वीर चादर चुपड़े सरसों के फक फक करे आइ को छोड़े चोर को पकड़े आदेश गुरु को।"

साधन-विधि—

पूर्वोक्त मन्त्र के अनुसार।

प्रयोग-विधि—

चौकोर रुपया, जिसमें छेद न हो, मँगवा कर उसे दूध से धोये तथा लोबान की धूनी दें। फिर सवा पाव चावल मँगवा कर उन्हें पानी में धोकर गोमूत्र में भिगो कर सुखावे। फिर शनिवार को प्रातः काल धरती को लीप कर उस पर सफेद कपड़ा बिछावे और कपड़े के ऊपर चावलों को रख कर लोबान तथा गुग्गुल की धूप दें फिर उन चावलों को पूर्वोक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर, रुपये के बराबर चावल तौल-तौल कर उन लोगों को चबाने के लिए दें, जिन पर चोरी करने का सन्देह हो। इस विधि से असली चोर उन चावलों को खायेगा तो उसके मुँह से खून निकलने लगेगा।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ सत्तरा सै पोर, चौंसठ सै जोगनी, बावन सै बहत्तर सै भैरूं, तेरा सै तन्त्र, चौदह सै मन्त्र, अठा

...कर, हमारा दो महान, नी दो नहीं, विश्वासघाके दे कारण, हनुमान जी तोरक करता, काली की कटोरी कपूर मेरा कोही, नहीं और नहीं को चलाई, त्रिशूलारी परवत की चलाई, कटारा कार कमलवासी चली, तोरा चमारी की करता पुरी, कहा कहा पुरी, चोर के काल चाकाल के आए, कहा कहा वासे, चोर के लावे, यहा घर मेरा बनावे, काल काल ते हनुमान वीर, नहीं हो चले, यहा है रहे, न कहीं तो तुमा कपुरा डाली मरे, तमर वाचा सिव बाचा, केरी चलि पुरु की शक्ति, पुरी मन्त्र ईश्वर तोहारा वाचा काल आदेश पुरु का।"

प्रयोग विधि —

तीन रेखा पर चमेली तेल्या कपूर कपूर चौड़ी करत की कटोरा को दीवारों की ताकि से चढ़ाकरे (प्रकाशते) फिर उसका काल से उसका यह कर कटोरी को पुजा करे तथा 1000 की संख्या में उसका काल का जप करे की कटोरी एक कपूर सिद्ध हो जाते हैं।

प्रयोग विधि—

...आवश्यकता के समय उसका कटोरी को कील से रख कर, उस पर काल रह-रह कर उसका चारवार तथा तो कटोरी करके चमेली और चोरी का साथ कहां रखा होगा, वही बताना सकेगी। जब तक कटोरी का चमत्कार बना रहे तो तब उस पर काल रह-रह कर उसका लगाते रहना चाहिए।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ तमो गाहुरसिंह वीर, जल-जल तु चाले, पवन चाले पानी चाले, चोर का चित्त चाले, चोर घुस लोही चाले, बाचा वज्र है बाचा दृढ़ करे वीर का नाम की पुजा पाँ टले, गोरखनाथ की आज्ञा तोते तो नाम चौरासी सिद्ध की आज्ञा।"

साधन विधि —

पूर्वोक्त मन्त्र के अनुसार।

प्रयोग-विधि —

चमेली को उसका काल से 1000 बार अभिमन्त्रित करे। फिर कटोरी को पुजा के दीपक, धूप दीप आदि से साथ पूजा करके अभिमन्त्रित चमेली कटोरी जिसका चोरी गया है उसके घर का कोने पर रख देवी।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (५)

मन्त्र—"ॐ नमो त्रिलोकिका पर्वत पर कालजीवन की चल रेत नाम पुरुष देवी पुत्र प्रसाद अपना पालकी पानी साथ हू ती चोर तेरे मुखन को देखी सभी बाचा पूरी।"

साधन विधि —

यह मन्त्र होली, दिवाली अथवा ग्रहण के दिन 1000 की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि —

जिस चोरी पर चोरी करने का संदेह हो, उसके घर अथवा कार्यालय के दरवाजे पर लिखकर, उसे आने की संभावना से अपना काल कर दे; फिर उसके चोरी की उसका काल से 21 बार अभिमन्त्रित कर, एक-एक करके पानी की पत्ते से दरवाजा आरम्भ करें तो जिस चोरी से चोर का पता होगा, वह पानी से डरकर दौड़ने लगेगी।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (६)

मन्त्र—"ॐ हुँ चक्र चमरी चक्र धारिणी चक्र, देवि चोरि पकरी पकरी चोर पुहारी स्वाहा।"

साधन विधि —

पूर्वोक्त मन्त्र के अनुसार।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र द्वारा चावलों को २१ बार अभिमन्त्रित कर, जिन लोगों पर चोरी करने का सन्देह हो, उन्हें चबाने के लिए दें तो चावलों को चबाते ही असली चोर के मुँह से खून बहने लगेगा।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (७)

मन्त्र—"ॐ इन्द्राग्नि बंध बंध ॐ स्वाहा।"

साधन-विधि—

पूर्वोक्त मन्त्र के अनुसार।

प्रयोग-विधि—

रविवार अथवा शनिवार को भोजपत्र के टुकड़ों पर, उन लोगों के अलग-अलग नाम लिखें, जिन पर चोरी करने का सन्देह हो। फिर उन्हें १०८ बार मन्त्र जप कर अभिमन्त्रित करें तथा अग्नि में डालें तो जिस टुकड़े पर चोर का नाम लिखा होगा, वह नहीं जलेगा, अन्य टुकड़े जल जायेंगे।

अथवा

शनिवार या रविवार को मन्त्र लिख कर सफेद मुर्गे के गले में बाँध दें तथा उसके सिर पर एक टोकरी रख दें, फिर सन्देहास्पद लोगों को उस टोकरी पर हाथ रखने के लिए कहें। जैसे ही असली चोर उस टोकरी पर हाथ रखेगा, वैसे ही मुर्गा बोलने लगेगा।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (८)

मन्त्र—"ॐ नमो इन्द्र अग्निमुख बंधु उसारा अग्नि मुख बंधु स्वाहा।"

साधन-विधि—

किसी भी रविवार से आरम्भ कर २१ दिनों तक इस मन्त्र को नित्य १४४ बार जप कर सिद्ध कर लें। मन्त्र-जप के समय गूगल की धूनी देनी चाहिए तथा मिठाई चढ़ानी चाहिए।

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय कागज के टुकड़ों पर उन व्यक्तियों के अलग-अलग नाम लिख, जिन पर चोरी करने का सन्देह हो। फिर प्रत्येक नाम लिखे कागज के टुकड़े को २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अग्नि में डालना आरम्भ करें। जिन टुकड़ों पर चोर का नाम नहीं होगा, वे सब अग्नि में जल जायेंगे, परन्तु वास्तविक चोर के नाम वाला टुकड़ा आग में डालने पर नहीं जलेगा।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (९)

मन्त्र—"ॐ मलि मन्त्र चलि ना चले सेत भय कर चले पण नायक चले यदर मदर चले कोण की शक्ति चले जती हनुमन्त की शक्ति चले। क्यों वंद्यो चले अरडती चले मरडती चले छोरती चले कीला उकीलती चले गाडया उखालती चले, चालि चालि हो भद्र नाम ऋषीश्वर तोम्यों मस्तक टूटे धरणी चुवे श्री महादेव की आज्ञा फुरे पार्गिद स्वाहा।"

साधन विधि—

मन्त्र संख्या ३ के अनुसार।

अलगोजे की सिटली लेकर उसके ऊपर कटोरी रख दें। उस पर उड़द और बांये पांव के रक्त का छींटा दें। फिर उड़दों को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर कटोरी पर मारें तो कटोरी चलने लगेगी और जिस जगह चोरी का माल रखा होगा, वहाँ पहुंच कर रुक जायेगी।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (१०)

मन्त्र—"ॐ नमो काला भैरूं खेचरा भैरूं भूचरा भैरूं आदि भैरूं जुगादि भैरूं जल भैरूं थल भैरुं अवला बला सर्व जीता रण भैरूं एक गुगुल धूप धार भैरूं आई त्रपुरा देवी ऋद्ध सिद्ध लेती आई चोर का मुख सोखत आई साह का मुख पोखंत आई देवों भैरुं जोति तेरी।"

साधन-विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र द्वारा २७ बार अभिमन्त्रित चावलों को सन्देहास्पद व्यक्ति को चबाने के लिए दें। असली चोर जब उन चावलों को चबायेगा तो उसके मुँह से खून निकलने लगेगा।

चोरी का पता लगाने का मन्त्र (११)

मन्त्र—"ॐ चक्रेश्वरी चक्र वेदिनी चक्र वेगेन शं स्वं भ्रमय-भ्रमय स्वाहा।"

साधन-विधि—

पहले इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। अन्य बातें मन्त्र संख्या ३ की साधन-विधि के अनुसार समझें।

प्रयोग-विधि—

उक्त मन्त्र से चावलों को १०८ बार अभिमन्त्रित कर, उन्हें कटोरी पर मारें तो कटोरी चलने लगेगी और जहाँ चोरी का माल रक्खा होगा, वहाँ जाकर रुक जाएगी।

———

१३

चमत्कारी मन्त्र प्रयोग

चमत्कारी मन्त्रों के विषय में

इस प्रकरण में संस्कृत भाषा के उन मन्त्रों का उल्लेख किया जा रहा है, जिनका वर्णन अनेक प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों में पाया जाता है। ये मन्त्र चमत्कारी-मन्त्रों के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त हैं तथा मुख्यतः विद्या-बुद्धि एवं धन प्राप्ति के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं। कर्ज से छुटकारा पाने के लिए "ऋण-मोचक मंगल स्तोत्र तथा भौम-मन्त्र का प्रयोग" विशेष ख्याति लब्ध है। अन्य मन्त्रों के प्रभावकारी होने में भी कोई सन्देह नहीं किया जाता।

इन मन्त्रों को यथा विधि सिद्ध कर लेने के बाद प्रयोग में लाया जाय तो ये अपना चमत्कारी प्रभाव अवश्य प्रदर्शित करते हैं, ऐसा अनुभव असंख्य लोगों का है। परन्तु साधन-विधि में त्रुटि इनके प्रभाव को प्रकट नहीं होने देती, इसे ध्यान में रखना भी आवश्यक है।

जिन मन्त्रों के साथ यन्त्र-पूजन का भी उल्लेख हो, उनका साधन मन्त्र के साथ ही करना चाहिए। यन्त्र-लेखन के विषय में जहाँ किसी वस्तु विशेष का उल्लेख न हो, वहाँ यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्ट गंध अथवा लाल चन्दन, कपूर और केशर के मिश्रण द्वारा चाँदी की सलाई से लिखना उचित रहता है।

आजीविका-दायक मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहिनी सर्व कार्य-कारिणी मम विकट संकट हरणो मम मनोरथ पूरणी मम चिन्ता चूरणी ॐ नमो ॐ पद्मावती नमः स्वाहा।"

प्रयोग-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त से मन्त्र का जप आरम्भ करें।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

ॐ धन धान्याधिपतये कवचाय नमः हुं ।
ॐ धनधान्य समृद्धि मे नेत्र त्रयाय नमः
वौषट् ।
ॐ देही दापय स्वाहा अस्त्राय नमः फट् ।"

अथ ध्यान—"मनुमयाह्य विमान वर स्थितं, गरुड़ रत्ननिर्भनिधि नायकं । शिवमयामुकुटादि विभूषितं, वर गदे दधतिं भज तुन्दिलम् ।"

विधि—

इस मन्त्र का १०००० (एक लाख) की संख्या में जप, जप का दशांश तिलों से होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन कर, मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए । इस विधि से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है तथा साधक के घर में धन-धान्य आदि की वृद्धि करता है ।

मनोकामना-सिद्धि कारक मन्त्र

मन्त्र—"ॐ वां अं स्वाहा ।"

विधि—

इस मन्त्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में जप करें । जप-काल में ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा हल्का भोजन करें । जब सवा लाख की संख्या में मन्त्र-जप पूर्ण हो जाय, तब जप का दशांश होम और क्रमशः उसके दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण-भोजन के कृत्य करें । इस प्रकार यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है ।

मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक के धन-धान्य तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती है तथा सभी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं ।

ऋद्धिदाता-मन्त्र

मन्त्र—"ॐ पद्मावती पद्म मेखे पद्मासने लक्ष्मी दायिनी वांछा भूत क्षेत्र निग्रहणी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी ऋद्धि वृद्धि कुरु-कुरु स्वाहा, ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः ।"

विधि—

गुग्गल, गोरोचन, छारछबीला और कपूरी कचरी—इन सबकी बराबर १०० गोलियां बनावें । फिर शनिवार की रात्रि तथा रविवार को दिन में लाल रंग के वस्त्र पहनकर, लाल कोयली पर लाल रंग के पुष्प चढ़ाकर नित्य १०८ की संख्या में मन्त्र का जप करें । प्रत्येक मन्त्र जप के साथ एक-एक गोली अग्नि में डालता जाय । इस प्रकार नित्य एक माह तक साधन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती । फिर प्रतिदिन २१ गोली को अभिमन्त्रित करके अग्नि में चढ़ाता रहे तो ऋद्धि-सिद्धि एवं धन की वृद्धि प्राप्त होती ।

लक्ष्मीदाता-मन्त्र

मन्त्र—"ॐ पद्मावती पद्म कुमी दध्यव ओवृधी प्रतिल्ल सर्वति सर्वन्ति ।"

विधि—

आधी रात के समय दीपक जलाकर श्री के चरणों पर रखकर तथा मिट्टी की माला पर नित्य १००८ की संख्या में मन्त्र का जप करें । इस प्रकार ११ दिन तक जप करने से लक्ष्मी प्रसन्न होकर वर्षण देती है अर्थात् साधक को धन का लाभ होता है ।

व्यवसाय द्वारा धन लाभ का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं श्रीं की स्त्री की वली श्रीं लक्ष्मी मम गृहे धन पूरय पूरय चिन्तायै दूरये दूरये स्वाहा ।"

विधि—

नित्य प्रातःकाल दांतौन करने के बाद इस मन्त्र का १०८ की संख्या में जप करते रहने से व्यवसाय द्वारा धन का लाभ होता है ।

महालक्ष्मी-मन्त्र

मन्त्र—"क्षोमर्णजाय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं वली महालक्ष्मी श्रीपद्मा वत्यै नमः । महालक्ष्मी महाकाली महादेवी महेश्वरी ।

महामूर्ति महामाया महाधर्मेश्वरी अर्हं ॥ मुक्ता माला धरा माया महामेधा महोदरी। महाजन्तो जगत्माता महामुद्योतिनी अर्हं ॥"

विधि—

भगवती महालक्ष्मी के षोडश नाम युक्त उक्त स्तोत्र का जो व्यक्ति नित्य पाठ करता है, उस पर लक्ष्मी सदैव प्रसन्न रहती है।

ज्वालामुखी मन्त्र

मन्त्र—"श्रीगणेशाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेश्वरी ज्वालामुखी ज्रंभिनी स्तंभिनी मोहिनी वशीकरणी परं न क्षोभिणी सर्व शत्रु निवारिणी ॐ औं क्रौं ह्रीं चाहि चाहि अक्षोभय अक्षोभय सर्वजनं अमुकं मम वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा।"

विधि—

सर्वप्रथम २५०० की संख्या में जप कर मन्त्र को सिद्ध करले। फिर १००० आहुतियां होम की देकर २ ब्राह्मणों को भोजन करायें। तत्पश्चात् नित्य १०८ की संख्या में मन्त्र का जप करता रहे। आवश्यकता के समय ३ अथवा ७ दिन तक नित्य १०८ मन्त्र आधी रात के समय खुले आकाश के नीचे एक पाव से खड़े होकर जपे तो कार्य अवश्य सिद्ध हो।

शारदा मन्त्र

मंत्र—"ॐ ह्रीं श्रीं अहं वद वद वाग्वादिनी भगवती सरस्वती ऐं नमः स्वाहा विद्यां देहि मम ह्रीं सरस्वती स्वाहा।"

विधि—

ग्रहण के समय इस मन्त्र का १४४ बार जप करे। फिर २१ दिन तक विधियुक्त १०८ की संख्या में रात्रिकाल में जप करे तथा बाद में नित्य एक माला मन्त्र का जप करता रहे तो विद्या की दिन प्रतिदिन वृद्धि हो।

विद्या-बुद्धि-वर्द्धक मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो भगवती सरस्वती परमेश्वरी वाग्वादिनी मम विद्यां देहि भगवती हंस वाहिनी हंस समारूढा बुद्धि देहि देहि प्रज्ञा देहि देहि विद्यां देहि देहि परमेश्वरी सरस्वती स्वाहा।"

विधि—

रविवार से आरम्भ करके २१ दिनों तक नित्य १००८ की संख्या में इस मन्त्र का जप करें। ब्रह्मचर्य से रहे तथा एक बार भोजन करे तो पढ़ी हुई विद्या कण्ठस्थ हो और उसे कभी न भूले तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती रहे।

सरस्वती मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।"

विधि—

किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ करके १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर १ सेर गाय के घी को ४ सेर बकरी के दूध में डालकर उसमें एक-एक टंक सहजना की जड़, वच, सेंधा नमक, धावड़ा के फूल, तथा लोध मिलाकर मन्दी आग पर पकायें। जब दूध और दवायें जल जांय तथा घृत शेष रह जाय, तब उसे आग से उतार कर नीचे रक्खे तथा मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके नित्य १ तोला घृत उसमें से खाते रहें। इससे विद्या-बुद्धि की अत्यन्त वृद्धि होगी।

यदि उक्त मन्त्र को नित्य १००० की संख्या में जपता रहे, तब तो विद्या-बुद्धि की वृद्धि के विषय में कहना ही क्या है।

टिप्पणी—

यदि घृत तैयार न कर सकें तो मालकांगनी के तेल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके स्वल्प मात्रा में सेवन करना चाहिए।

बुद्धि-वर्द्धक मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वद पद वाग्वादिनी बुद्धिवर्द्धिनी ह्रीं नमः स्वाहा।"

विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् नित्य एक माला अर्थात् १०८ की संख्या में जप करते रहने से बुद्धि तथा विद्या की वृद्धि होती है।

भगवती मन्त्र

मन्त्र— "ॐ नमो भगवती रक्ते पीठं नमः।"

विधि—

इस मन्त्र को लाल वस्त्र के ऊपर नित्य १००० की संख्या में ७ दिनों तक जपें। फिर उस कपड़े को अपने हृदय से लगायें तो भगवती की प्रसन्नता प्राप्त होकर साधक की समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं।

कर्ण पिशाचिनी मंत्र

मन्त्र—"ॐ हं हन हन स्वाहा।"

विधि—

इस मन्त्र को सवा लाख की संख्या में जपने से कर्ण पिशाचिनी सिद्ध होती है तथा साधक के कान में प्रश्नों का उत्तर देती है।

रुद्र मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते रुद्राय हुँ फट् स्वाहा।"

विधि—

धतूरा, कुसुम तथा घी-इन तीनों को मिलाकर, उक्त मन्त्र का पाठ करते हुए १०००० (दस हजार) की संख्या में होम करने से रुद्र देवता प्रसन्न होते हैं। यदि इतने से सफलता न मिले तो फिर १००००० (एक लाख) की संख्या में होम करना चाहिए, तब सफलता अवश्य मिलेगी।

उच्छिष्ट गणपति मन्त्र

उच्छिष्ट गणपति साधन के मन्त्र, न्यास एवं विधि के सम्बन्ध में अपने पूर्वानुसार समझना चाहिए।

मन्त्र—"ॐ क्षां क्षीं क्षौं ह्रं ह्रं ह्रः उच्छिष्टाय स्वाहा।"

कराङ्गन्यास—"ॐ क्षां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ क्षीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ क्षौं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्रं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रः उच्छिष्टाय स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।"

हृदयादि न्यास—"ॐ क्षां हृदयाय नमः।
ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा।
ॐ क्षौं शिखायै वषट्।
ॐ ह्रं कवचाय हुं।
ॐ ह्रं नेत्र त्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः उच्छिष्टाय स्वाहा। अस्त्राय फट्।"

साधन-विधि—

कृष्ण पक्ष की अष्टमी से आरम्भ करके चतुर्दशी पर्यन्त नित्य १०८ की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

इस मन्त्र की साधना में किसी तिथि नक्षत्र, वार, व्रत आदि का विचार नहीं किया जाता।

आँक की जड़ की लकड़ी द्वारा एक अंगुठे प्रमाण की गणेश जी की मूर्ति बनाकर, उसे किसी एकान्त स्थान में स्थापित कर, एक युवती स्त्री को अपने सामने बैठा, उसके गुह्याङ्ग से सम्बद्ध हो, २८ बार इस मन्त्र का जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

कार्त्तवीर्य-मन्त्र

मन्त्र—"श्रीगणेशायनमः। कार्त्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्य्य सुतो

करते। सहस्रबाहुः धनुष्मतो रथयोगा धनुर्धरः। रथगंधोरक्षकाश्चो एकादशतु रक्षिष्यंति। द्वादशैतानि नामानि कार्त्तवीर्यस्य यः पठेत्। अनष्टं द्रव्यता तस्य नष्टस्य पुनरागमः। पथि लाभं अवाप्नोति अलाभस्य वशे सदा।"

विधि—

जिस व्यक्ति का धन चोरी हो गया हो या राजदण्ड आदि के कारण नष्ट हो गया हो, वह व्यक्ति कार्तवीर्य के इस द्वादश नामों का नित्य २१ बार पाठ करे तो उसका खोया हुआ धन पुनः लौट आता है। जो व्यक्ति इन नामों का नित्य २१ बार पाठ करता है, उसका धन कभी नष्ट नहीं होता। धन की वृद्धि होती है तथा सब लोग उसके अनुकूल रहते हैं।

बटुक मन्त्र

मन्त्र— "ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं स्वाहा।"

इस मन्त्र के न्यास, ध्यान तथा साधन-विधि निम्नानुसार है—

कर न्यास— "ॐ ह्रां बटुकाय नमः।
ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रूं तर्जनीभ्यां वषट्।
ॐ ह्रैं मध्यमाभ्यां हुं।
ॐ ह्रौं अनामिकाभ्यां वौषट्।
ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।"

हृदयादि न्यास— "ॐ ह्रां हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं कवच हुं।
ॐ ह्रौं नेत्रत्राय वौषट्।
ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।"

ध्यान— "कर कलित कपाल कुण्डली दण्डयज्ञोपवीतम्
धृत विशद दुकूलं चन्द्रिकोद्भासि भालम्।
दधतमतिवपुष्टं भीतिनिर्भीतिहेतुं
वटुकमनिशमीडे सिद्धि दं साधकानाम्।"

प्रयोग विधि—

सिन्दूर का टीका लगाकर उसमें एक त्रिकोण अंकित करायें। त्रिकोण के ऊपर कोण में 'ॐ' बाम कोण में 'हूं' तथा दक्षिण कोण में 'ॐ' तथा उसके मध्य में 'ह्रीं' लिखें। 'ह्रीं' के नीचे साधक अपना नाम लिखें।

उक्त विधि से बनने वाले यन्त्र के स्वरूप को स्पष्ट के लिए दे प्रदर्शित किया गया है—

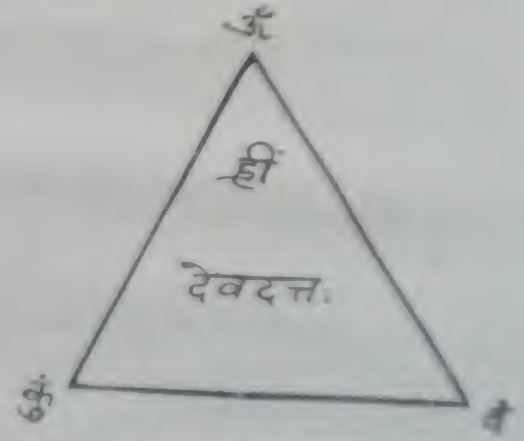

(बटुक-पूजन यन्त्र)

यन्त्रराज 'ह्रीं' अक्षर के ऊपर स्थापित रखें। फिर आचमन, न्यास तथा ध्यान करके आवाहन आदि षोडश उपचारों से पूजन करें। यन्त्र में जहाँ 'ॐ' लिखा है, वहां तेल में सने हुए उड़द के बड़े रखें। जहां 'ह' लिखा है, वहां दही तथा जहां 'हूं' लिखा है, वहां घृत रखें। घोड़ी की बायीं अनामिका अंगुली से यंत्र में रखना चाहिए।

बड़े, दही और घृत मिलाकर रखें। बटुक के भोग की पांच वस्तुएं होती हैं—बड़े, दही, घृत, सराव तथा पूरी हुई छोटी सहनी।

फिर प्रतिदिन 1008 की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करके नवमी को हवनादि 108 आहुतियाँ देकर हवन करें। 11 दिन के पहले प्रयोग से बाधा दूर तथा शत्रु को आहुतियों से हवन करना चाहिए।

इस विधि से जप-हवन करने से साधक की कामना पूर्ण होती है और पहली बार में न हो तो इसी प्रक्रिया को दूसरी तथा तीसरी बार भी दुहराना चाहिए। तीसरी बार के प्रयोग के पश्चात तो कामना पूर्ण हो किसी प्रकार का सन्देह ही नहीं रह जाता।

सहदेई कल्प मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो भगवती पातालदेवी सर्वलोकेश्वरी सर्व वशङ्करणी सर्व लोक वशीकरणी सर्व सुख रंजनी महामाये लघु लघु त्वरा कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि—

कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन दूब रखकर सहदेई (एक प्रकार की दूब) को चीन लावें। फिर दूसरे दिन नवमी को प्रातः काल उसे उखाड़ कर घर में लावें। वहाँ उसे सामने रखकर 8 रात्रि तक उक्त मन्त्र को अनिमेषित नयन से जप कर सिद्ध कर लें। यदि 8 दिन में सिद्धि प्राप्त न हो तो 16 दिन तक मन्त्र-जप करना चाहिए। जप का क्रम टूटे नहीं।

प्रयोग विधि—

मन्त्र सिद्ध सहदेई के प्रयोग निम्नलिखित हैं—

(क) सहदेई को चूर्ण करके जिसके मस्तक पर डाल दिया जायगा, वह वश में हो जायगा।

(ख) उक्त चूर्ण को पान में रख कर जिसे खिला दिया जायगा, वह वशीभूत होगा।

(ग) उक्त चूर्ण में गोरोचन मिला कर अपने ललाट पर तिलक लगावें, फिर जिसे देखें, वही वशीभूत हो।

(घ) उक्त चूर्ण को काजल में मिलाकर आँख में डालकर, जिसे देख वह वशीभूत हो।

(ङ) उक्त चूर्ण को अपने बिछौने में छिड़कर वह पुरुष में करने का विजय प्राप्त हो।

(च) वांछ स्त्री को रखकर व पत्र उक्त चूर्ण बिछाने से वह वशवर्ती हो।

(छ) अभिमन्त्रित सहदेई को राहोच में करके दाहिने के सामने दांत से वह पीड़ा न हो तथा अतिसार नष्ट हो।

(ज) अभिमन्त्रित सहदेई को वह को अपने पल्ले में बांध ले तो वह रोग दूर हो।

(झ) अभिमन्त्रित सहदेई को मुंह में रखकर, जिससे बात करे, वह वशीभूत हो।

स्वप्न में प्रश्न का उत्तर पाने का मन्त्र

मन्त्र—(१) "ॐ नमो भगवते चेटकाय सर्वार्थ सिद्धि कराय मम स्वप्ने दर्शनाय कुरु-कुरु स्वाहा॥"

प्रयोग-विधि—

कलेर के लाल पुष्प लाकर उन्हें 108 बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, अपने सिरहाने रखकर सोवे। तीन या सात दिनों तक यह प्रयोग करते रहने से अभिलषित प्रश्न का उत्तर स्वप्न में मिल जाता है।

मन्त्र—(२) "ॐ स्वप्नावलोकिनी सिद्ध लोचनी स्वप्नेक कथय स्वाहा।"

प्रयोग विधि—

पूर्ववत्। इस मन्त्र को २१ बार जपना चाहिए।

मन्त्र—(३) "ॐ नमो जाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने वा माय विश्वमुख्याय स्वप्नाधिपतये नमः स्वप्नेक कथय मे तथ्यं सर्वं कार्येहा शेषतः क्रिया सिद्धि सविधास्या-मिस्वन् प्रसादात् गणेश्वरे।"

[illegible]

[illegible]

उक्त मन्त्र द्वारा [illegible] के प्रार्थना करके रक्षित को दी जाय। फिर [illegible] ले जाकर [illegible] उसे बाल-काल अपने हृदयदेश में बद्ध कर उसका पोषण करे।

विद्या-मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद वाग्वादिनी भगवती सरस्वती ह्रां नमः मम विद्यादेहि नम ह्रीं भगवती स्वाहा।"

[illegible]—

[illegible] इस मन्त्र का [illegible] बार जप करे। फिर [illegible] नित्य दोनों समय [illegible] बार मन्त्र का जप करे तो दिन-दिन विद्या की वृद्धि हो।

पुत्री के यहां धन सिक्कादि होने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीपुत्री प्रगट नमो सिध्ये स्वाहा।"

[illegible]—

[illegible] तीन बीज की सीपी को सात दिन दूध में औटाकर, दूध को [illegible] उस सीप पर उसके ही [illegible] उक्त बीज को उक्त मन्त्र से [illegible] अभिमन्त्रित कर [illegible] बीज उसका कारण बनाकर, जो [illegible] की ओर से जपा हो, उसकी अंगुली में लगावे तो उसे पृथ्वी में गड़ा हुआ धन दिखाई देता।

[illegible]

[illegible], दूध और [illegible] को साथ के दूध में पीसे। पीसते समय [illegible] मन्त्र का उच्चारण करते जाय। फिर जिस स्थान पर खुदाई करनी है वहां पहले सीपी बनाकर [illegible] तथा निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करे—

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते सुवेर कुबेराय महाकालाय कंकाल कुबेराय ह्रीं वट् स्वाहा।"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए गेहूं तथा तिल के आटे का होम करे तो गड़ा हुआ धन वाले स्थान पर उपस्थित सभी [illegible] का जल दूर हो जाता है।

उक्त प्रयोग शुभ मास, दिन तथा नक्षत्र आदि का विचार करके करना चाहिए।

ऋण-मोचक मङ्गल-स्तोत्र

सर्वप्रथम निम्नानुसार सङ्कल्प वाक्य बोले, तदुपरान्त अपने नित्य अनुसार ध्यान, पूजन, जप आदि करे।

सङ्कल्प—"श्रीगणेशाय नमः। ॐ अस्य श्रीमङ्गल स्तोत्र मन्त्रस्य विरूपाक्ष ऋषिरनुष्टुप छन्दः ऋणहर्ता स्कन्दो देवता धनप्रदो मंगलोग्रिदेवता म बीजं म शक्ति म कीलकं समाभीष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः॥"

ध्यान—"रक्तमाल्याम्बरधरो शक्ति शूल गदाधरः।
चतुर्भुजो मेषगमो वरदश्च धरासुतः॥
ह्रीं होहिं भगवन् भौमः काल कांत हर प्रभो।
त्वयि सर्वमिदं प्रोक्तं त्रैलोक्यं सचराचरं॥"

मन्त्र—"ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः मङ्गलाय नमः।"

नामावलि—"मङ्गलो भूमि पुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टि कर्तापहर्ता च सर्व काम फलप्रदः॥"

विधि—

ताम्रपत्र के ऊपर मङ्गल का त्रिकोण यन्त्र बनाकर, उसका केवा, लाल चन्दन, तथा लाल कनेर के फूलों से पूजन करे। फिर पूर्वोक्त मंगल के २१ नामों का २१ बार जप।

प्रत्येक नाम के साथ निम्नलिखित मन्त्र का पुट लगाना चाहिए—

"ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः मङ्गलाय नमः।"

"ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः।"

मङ्गल के २१ नाम अलग-अलग इस प्रकार हैं—

(१) मंगलाय	(११) धरात्मजाय
(२) भूमि पुत्राय	(१२) कुजाय
(३) ऋण हर्त्रे	(१३) भौमाय
(४) धन प्रदाय	(१४) भूतदाय
(५) स्थिरासनाय	(१५) भूमिनन्दनाय
(६) महाकायाय	(१६) अङ्गारकाय
(७) सर्वकर्मविरोधाय	(१७) यमाय
(८) लोहिताय	(१८) सर्वरोगापहारकाय
(९) लोहिताक्षाय	(१९) वृष्टि कर्त्रे
(१०) सामगानाकृपाकराय	(२०) आपद्धर्त्रे
	(२१) सर्व काम फलप्रदाय

उक्त सब नामों के अन्त में 'नमः' शब्द लगाकर तथा बीज-मन्त्र को आदि अन्त में लगाकर २१ नामों को २१ बार जपे।

मन्त्र जप के बाद खैर की लकड़ी से बाईं ओर तीन लकीरें खींचकर उन्हें निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर बाँये पाँव से मिटा दे—

मन्त्र—"दुख दुर्भाग्य नाशाय धन सन्तान हेतवः।
व्रत रेखादि यं वायेमे वाम पाद तलेनुतः॥"

नाम जप के बाद १ माला "भौम-गायत्री-मन्त्र" को पढ़ें, जो इस प्रकार है—

भौम गायत्री—"ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति-हस्ताय धीमहि
तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥"

फिर रेखा मिटाने के बाद हाथ जोड़कर निम्नलिखित ध्यान के मन्त्र का पाठ करें—

ध्यान—"अमृजमरुणवणं रक्तमाल्यांगरागं कनक कनक माला
सालिनं विश्ववंद्यं। प्रतिललित कराभ्यां बिभ्रतं शक्ति
शूले, भजति धरणि सूनुं मङ्गलं मङ्गलानां।"

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से अर्घ्यदेकर पूजन समाप्त करे—

अर्घ्य का मन्त्र—"भूमि पुत्र महातेजस्तदो भव पिनाकिनः।
धनार्थी त्वाप्रपन्नोस्मिन् गृहणार्घ्यं नमोस्तुते।"

उक्त विधि से भौम-मन्त्र का जप एव पूजन करने से ऋणी मनुष्य ऋण-मुक्त हो जाता है तथा उसे धन-धान्य का लाभ होता है।

ग्रह-पीड़ा नाशक मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो भास्कराय अमुकस्य सर्वग्रहाणां पीड़ानाशन कुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहाँ अमुकस्य शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

यह मन्त्र १००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

एक हांडी में मदार की जड़, धतूरा तथा अपामार्ग का दूध, बरगद और पीपल की जड़, शमी, आम तथा गूलर के पत्ते, घी, दूध, चावल, चना, मूँग, गेहूं, तिल, शहद तथा मट्ठा भर कर, उसे उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष की जड़ में गाड़ दें। इससे ग्रह-पीड़ा नष्ट हो जाती है। यह प्रयोग दरिद्रता तथा पापों को भी नष्ट करता है।

———

11 / प्रभावकारी हाजिर-जवाब प्रयोग

प्रभावकारी हाजिर जवाबों के विषयों में

[illegible]

[illegible] प्रभावकारी हाजिर जवाबों के विषयों में [illegible] [illegible] [illegible]

फिर १००० की संख्या से पूर्वोक्त "या मकूरा" मन्त्र पढ़कर २१ बार दबा दें। इस प्रकार २१ दिनों तक नित्य मन्त्र का जप करते रहने से लाभ की सूरत दिखाई देती है तथा रोजी प्राप्त होती है।

रोजी प्राप्ति का मन्त्र (२)

मन्त्र—"या इब्राफील अहकक या अल्लाही।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

सवा पाव उड़द के आटे का खमीर उठाकर अपने हाथ से एक रोटी बनाएं, फिर उसे घी तह करके गंदूह बनाकर में रखकर चौथाई रोटी के बराबर बेर के बराबर की १०१ गोलियां बनाएं। फिर प्रत्येक गोली को १०१ बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, किसी नदी के जल में मन्त्र पढ़ते हुए बहाएं तो ४० दिन में मनोरथ पूरा होता है।

रोजी प्राप्ति का मन्त्र (३)

मन्त्र—"काली कंकाली महाकाली मरे व सुन्दर जीये व्याली चार वीर भैरू चौरासी तब सो पुड़ पान मिठाई तब वाली काली की दुहाई।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

सिंह प्रति स्नान करके, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठे तथा इस मन्त्र को ७ अथवा ४२ बार जप कर तो शीघ्र ही रोजी प्राप्त होती है।

दिग्बन्धन का मन्त्र

मन्त्र—"या हिसार या हिसार या हिसार परी जबर कुफ्फार एक खाई दूसरी अग्निपसार गिर्द व गिर्द मलायक असवार दायां दस्त रक्खे जिब्राईल बायां दस्त रक्खे मीकाईल पीठ रक्खे इस्राफील पेट रक्खे इज्राईल दस्त चयहसन दस्तरास्तहुसैन पेशवामुहम्मद गिर्द व गिर्द अली लाइलाह का कोट इल्लिल्लाह की खाई हजरत अली की चौकी बेटी मुहम्मद रसूलिल्ला की दुहाई।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

यदि किसी मन्त्र के जपने के बाद उसे अच्छी तरह से करने की आवश्यकता हो तो इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर अपने चारों ओर हाथ फिरा कर चुटकी बजाते जाएं चारों ओर लकीर बना लें। समझ में जहां घेरा होगा, वहां यदि कोई रुकावट आदि हो तो उस रुकावट को दूर किया करनी चाहिए। इससे दिग्बन्धन होकर सब प्रकार से बच दूर हो जाते हैं।

विवाद-विजय मन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को कागज के ऊपर लिख कर जुमे (शुक्रवार) के दिन अपने सर में बांधने से मुकद्दमे में विजय होती है अर्थात् अदालती न्यायालय से बरी हो जाता है।

प्रदर्शित यन्त्र के नीचे साध्य-शक्ति तथा उसकी संख्या का नाम लिखना भी आवश्यक है।

[illegible]	३३८	३३३	या हाफीज
३३८	३३२	३३३	या हाफीज
३३५	३३७	३३७	६६
या हाफीज	या हाफीज	६६	११

२२

(विवाद विजय यन्त्र)

शरीर रक्षा का मन्त्र

मन्त्र—"छोटी मोटी थमंत वार को बार बांधे पार को पार बांधे मराघमा हाण बांधे जादू वीर बांधे टोना टम्बर बांधे दीठ मूंठ बांधे चोरी द्वार बांधे भिड़िया और बाघ बांधे बीछू और सांप बांधे लाइलाह का कोट इल्लिल्लाह की

खाई मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी हजरत अली की दुहाई ।"

साधन-विधि—

यह मत्र शुक्रवार की रात्रि में १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

यदि सभी जंगल अथवा निर्जन स्थान में सोना हो तो इस मन्त्र को ३ बार पढ़कर अपने दोनों घुटनों पर हाथ मारकर जितनी पृथ्वी में सोना हो, उसमें चारो ओर लकीर खींच कर एक घेरा बना दे तो कोई भय—सर्प, चोर, हिंसक जीव आदि का नहीं होता।

आत्म-रक्षा का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ मुरतों का गड़ा अष्ट वेताल आठों वायु तीसों रहसे छेद भेद की जान मो रंगे नकरुद्धामो रमा नारायणी सप्त पाताल जानि मोर काज मोहिसाडारे तड़थिला विकिटार आस आस विकिटार तो सोर-पामो गोरखी कारसी आकार बीज गोरखी वज्र करथिवो ।"

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० की सख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

नित्य प्रात: काल इस मन्त्र को ७ बार पढ़ कर अपने ही शरीर पर फूंक मारते रहने से साधक की आत्मा-रक्षा होती है।

मनोरथ-सिद्धि मन्त्र

मन्त्र—"ॐ हर त्रिपुर हर भवानी वाला राजा प्रजा मोहिनी सर्व शत्रु विध्वंसनी मम चिन्तित फलं देहि देहि भुवनेश्वरी स्वाहा ।"

साधन-विधि—

पवित्रता पूर्वक केवल १०८ बार जपने से ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

जब किसी मनोरथ को सिद्ध करने की आकांक्षा हो, उस समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करके कार्यारम्भ करें तो मनोरथ सिद्ध होता है।

यात्रा में थकान न आने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो विचंडाय हनुमंत वीराय पवनपुत्राय हुं फट् ।"

साधन-विधि—

वंशलोचन, श्वेत भांगरा तथा बकरी का दूध इन सबको लेकर, पुष्य नक्षत्र में उक्त मन्त्र को सिद्ध करें। १०००० की सख्या में जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

यात्रा पर जाते समय उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित उक्त मिश्रण को दोनों पाँवों के तलवों में लगायें और लेप सूख जाय, तब यात्रा करें तो मार्ग में चलने से थकान नहीं आती।

मार्ग और घर में शरीर रक्षा का मन्त्र

मन्त्र—"छोटी मोटी थमन्त वार को वार पार को पार बांधे मरा घमासाण बांधे जादू वीर बांधे टोना टम्बर बांधे दीठ मूंठ बांधे चोरी छार बांधे चिड़िया और बाघ बांधे लाइलाह का कोट इल्लिलल्लाह की खाई मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी हजरत अली की दुहाई ।"

साधन-विधि—

गुरुवार या शुक्रवार को १०८ बार जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

जंगल या घर में सोते समय इस मन्त्र को ३ बार पढ़कर अपने दोनों पाँवों पर हाथ मारे तथा जितनी पृथ्वी पर सोने की व्यवस्था करें, उतनी में घेरा बाँध दे तो किसी प्रकार का भय नहीं होता एवं शरीर की रक्षा होती है।

सर्व बाधा नाशक मन्त्र

मन्त्र—"चौरा बाधा सरपाउधाइ बन छाड़ि आवनन जाउ सावज धड़ धड़ ल्याउ रामचन्द्र मारल कुकुद्रावन के शोषहि बाऊ मोरि जहाँ तहाँ कपसरे मोरे फरले कठहि निर्विस होइ जाइ दुहाई रामचन्द्र कै दुहाई गौरा पार्वती कै जो एही बन रह।"

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

किसी वन, पर्वत अथवा निर्जन स्थान में आकस्मिक संकट, हिंसक पशु आदि के उपस्थित हो जाने पर इस मन्त्र का मन ही मन पाठ करने से सब प्रकार की बाधा (संकट) दूर हो जाती है।

दोष-निवारक एवं रक्षा कारक मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को चजरी वजरी वज्र किवाड़ बज्री पे बाँधूँ दशोद्वार दसों द्वार को थाले थान वज्र-सट वेद वाही को वान पहली चौकी गणपति की दूजी चौकी हनुमत की तीजी भैरों की चौथी चौकी रोम रोम की रक्षा करन कों श्री नरसिंहदेव जी आया

शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।"

साधन-विधि—

यह मन्त्र अष्टमी तिथि को गूगल की धूप देते हुए १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र जप के बाद भोग लगाना चाहिए।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल ७ दिन तक रोगी को पिलाते रहने से किये-कराये का दोष दूर हो जाता है तथा शरीर की रक्षा होती है।

देह-रक्षा का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ अपर केस विकट भेस खंव पत प्रहलाद राखे पाताल राखे पाय देवी जंघा राखे कालिका मस्तक राखे महादेवी जो कोई इह पिण्ड प्राण को छेड़े छेदे तो देवदाना भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी गंड-ताप तिजारी जूड़ी एक पहरु द्वे पहरु शंक का सवारा को कोजा को कराया को उलट वाही के पिण्ड पर पड़े इस पिण्ड की रक्षा श्री नरसिंह जी करे शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—

यह मन्त्र शुभ योग में १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र से जल को ७ बार अभिमन्त्रित करके रोगी को पिला दें अथवा इसे कागज पर लिखकर, गण्डा बनाकर रोगी के कण्ठ या भुजा में बाँध दें तो उसके शरीर की सब प्रकार के रोग-दोष आदि से रक्षा होती है।

सर्व-सुखदाता एवं विपत्ति-निवारक मन्त्र

मन्त्र—"श्री रामजी ।"

प्रयोग-विधि—

उक्त मन्त्र को कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर सवा लाख की संख्या में केशर, कस्तूर तथा लाल चन्दन के मिश्रण द्वारा अनार की लकड़ी की सुन्दर कलम से लिखें। फिर उन्हें आटे की गोलियों में भर कर नदी में डाल दें तथा अन्त में ब्राह्मण भोजन करायें तथा पण्डितों को दान दक्षिणा दें तो सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं तथा सब प्रकार की विपत्तियाँ दूर होती हैं।

देह रक्षा का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ परब्रह्म परमात्मने मम शरीरे पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा ।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को किसी शुभ मुहूर्त से जपना आरम्भ कर २१ दिनों तक नित्य १०८ की संख्या में जपता रहे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर किसी भी मन्त्र, तन्त्र, झाड़-फूंक आदि की क्रिया को आरम्भ करने से शरीर की रक्षा होती है।

ऋद्धि-सिद्धि का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को गणपति वीर बसे मसाणं जो वो मांगूं सो सो आण पाँच लाडू सिर सिन्दूर हाटि की माटी मसाण की खेप ऋद्धि सिद्धि मेरे पास ल्यावे शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

किसी बड़े भोज आदि का आयोजन करना हो, तब इस मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। सर्वप्रथम ५ लड्डुओं के ऊपर सिन्दूर लगा कर उन्हें

कुएँ पर ले जाय, वहाँ एक लड्डू छोटे कलश में रख कर उसे कुएँ में डालें जब कलश भर जाय, तब २ लड्डू कुएँ में डाल आयें तथा जल पूर्ण कलश को लाकर कोठार घर (जहाँ भोजन का सामान रक्खा जाता है) में स्थापित कर दें। फिर शेष २ लड्डू चढ़ाकर देवता का पूजन कर, तदुपरान्त ब्राह्मण तथा अन्य लोगों को भोजन कराना आरम्भ कर तो खाद्य-सामग्री की कमी नहीं पड़ती।

शुभाशुभ-कथन मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं श्रीं वा लीलं बादुली क्षा क्षी क्षूं क्षें क्षः फट् फट् स्वाहा ।"

साधन-विधि—

शुभ मुहूर्त में पूर्वाभिमुख बैठकर इस मन्त्र का १००० की संख्या में जप करें, ब्रह्मचर्य में रहें, भूमि पर शयन करें तथा एक बार भोजन करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जब किसी प्रश्न का शुभाशुभ ज्ञात करना हो तो रात में निम्नलिखित मन्त्र को २१ बार पढ़कर सो जाय—

"ॐ स्वप्ना वलोकिनी सिद्धि लोचनी स्वप्नेक कथन स्वाहा ।"

तो रात्रि में स्वप्न के माध्यम से शुभाशुभ का ज्ञान हो जाता है।

कागज को कड़ाही में पुआ उतारने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो घाणी को तेल कागज की कड़ाही शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त ईश्वरोवाचा ।"

प्रयोग-विधि—

तेली की चलती घानी (कोल्हू) का तेल मँगा कर उसे कड़ाही में भर दें, फिर उस कड़ाही के ऊपर उस मन्त्र को २७ बार पढ़ कर फूंकें।

www.vidyabharati.co.in

विनोद—

...

...

...

...

दुःखभञ्जक-सङ्कल्पक-व्रतम्

व्रतम्—"अहं सर्वदा आर्तिहरं दुःखं मोचयिष्यामि" इति सङ्कल्पं कृत्वा विधिवत् यदि व्रतस्य उद्यापनं करोति तदा कीदृशं फलं प्राप्नोति इति व्रतमाहात्म्ये कथितम् अस्ति। एतत् व्रतं पौषे मासे शुक्लपक्षे प्रारभ्यते। यः व्रतं करोति सः प्रातः स्नात्वा शुद्धवस्त्रं धारयति। तस्य गृहे एकः कलशः स्थाप्यते। कलशे जलं पूरयित्वा तस्योपरि आम्रपल्लवं सप्तधान्यं च स्थाप्यते। कलशस्य मुखे श्वेतवस्त्रेण वेष्टितः नारिकेलः स्थाप्यते। कलशस्य पार्श्वे दीपः प्रज्वाल्यते। व्रतकर्ता तस्य सम्मुखे उपविश्य व्रतकथां शृणोति। कथा-श्रवणानन्तरं सः कलशं ब्राह्मणाय दक्षिणया सह दानं करोति। एवं कृते सति व्रतकर्तुः सर्वे दुःखाः नश्यन्ति इति विश्वासः।

विधानम्—

प्रथमं कलशं ताम्रपात्रे स्थापयित्वा तस्य मुखं पञ्चपल्लवैः आच्छादयेत्। ततः कलशस्य उपरि सप्तधान्यं स्थापयेत्। तदनन्तरं कलशं जलेन पूरयेत्। कलशस्य कण्ठे रक्तसूत्रं बध्नीयात्। ततः कलशस्य मुखे नारिकेलं स्थापयेत्। नारिकेलं श्वेतवस्त्रेण वेष्टयेत्। एवं कलशं सम्पूर्णं कृत्वा तं पूजास्थाने स्थापयेत्।

अनुष्ठान-विधिः—

व्रतदिने प्रातः स्नानं कृत्वा शुद्धवस्त्रं धारयेत्। ततः पूजास्थानं गत्वा कलशं पञ्चोपचारैः पूजयेत्। पूजायां गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं च समर्पयेत्। ततः कलशस्य पार्श्वे दीपं प्रज्वालयेत्। तदनन्तरं व्रतकथां शृणुयात्। कथा-श्रवणानन्तरं कलशं ब्राह्मणाय दक्षिणया सह दानं कुर्यात्। एवं कृते सति व्रतं सम्पूर्णं भवति।

उद्यापन-विधिः—

व्रतस्य उद्यापनं तु व्रतारम्भात् एकवर्षानन्तरं कर्तव्यम्। उद्यापनदिने व्रतकर्ता प्रातः स्नात्वा शुद्धवस्त्रं धारयेत्। ततः पूजास्थानं गत्वा कलशं पञ्चोपचारैः पूजयेत्। पूजायां गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं च समर्पयेत्। ततः कलशस्य पार्श्वे दीपं प्रज्वालयेत्। तदनन्तरं व्रतकथां शृणुयात्। कथा-श्रवणानन्तरं कलशं ब्राह्मणाय दक्षिणया सह दानं कुर्यात्। एवं कृते सति व्रतं सम्पूर्णं भवति।

सखी के पैर धुलाने का व्रत

व्रतम्—"अहं सर्वदा आर्तिहरं दुःखं मोचयिष्यामि" इति सङ्कल्पं कृत्वा विधिवत् यदि व्रतस्य उद्यापनं करोति तदा कीदृशं फलं प्राप्नोति इति व्रतमाहात्म्ये कथितम् अस्ति। एतत् व्रतं पौषे मासे शुक्लपक्षे प्रारभ्यते। यः व्रतं करोति सः प्रातः स्नात्वा शुद्धवस्त्रं धारयति। तस्य गृहे एकः कलशः स्थाप्यते। कलशे जलं पूरयित्वा तस्योपरि आम्रपल्लवं सप्तधान्यं च स्थाप्यते। कलशस्य मुखे श्वेतवस्त्रेण वेष्टितः नारिकेलः स्थाप्यते। कलशस्य पार्श्वे दीपः प्रज्वाल्यते। व्रतकर्ता तस्य सम्मुखे उपविश्य व्रतकथां शृणोति। कथा-श्रवणानन्तरं सः कलशं ब्राह्मणाय दक्षिणया सह दानं करोति। एवं कृते सति व्रतकर्तुः सर्वे दुःखाः नश्यन्ति इति विश्वासः।

श्री हनुमत् प्रसन्न यन्त्र

साथ में दिये यंत्र को भोजपत्र अथवा कागज के ऊपर अष्ट-गंध द्वारा सवा लाख की संख्या में लिखने से हनुमान जी प्रसन्न होकर साधक की समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं। लेखनोपरान्त यन्त्र का धूप, दीपादि से पूजन भी करना चाहिए।

नं	छं	जं	चं
दं	दं	चं	चं
जं	छं	जं	वं
छं	नं	जं	हं

32

(श्री हनुमत्-प्रसन्न यन्त्र)

द्यूत-विजयप्रद यन्त्र

२	२४।	२३।	२३।
३२॥	२७॥	३४॥	३६॥
६॥	९॥	२४॥	१६॥
२६।	९॥।	४॥।	४॥।

33

(द्यूत-विजयप्रद यन्त्र)

साथ में दिये यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर धूप, दीप, पुष्पादि से पूजन करें, तदुपरान्त इसे ताबीज में भरकर दाईं भुजा में बांध लें और जुआ खेलें तो जुए में जीत होती है।

फल-वृद्धि कारक यन्त्र

साथ में दिये यन्त्र को भोजपत्र अथवा कागज के ऊपर जंभीरी नींबू के रस से लिखकर धूप, दीप देने के उपरान्त अनार के वृक्ष पर बांध देने से उसमें अनार अधिक संख्या में लगते हैं।

अन्य फल देने वाले वृक्षों पर भी यदि इस यन्त्र को बांधा जाय तो उनमें अधिक फल लग उठेंगे।

८७	९४	२	८
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	६	८६	९२

34

(फल-वृद्धि कारक यन्त्र)

दुग्ध-वृद्धि कारक यन्त्र

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३१

35

(दुग्ध-वृद्धि कारक यन्त्र)

साथ में दिये यन्त्र को केसर, गोरोचन अथवा हुंडुप द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर पूजनोपरान्त मृगस को धूप देकर साथ के गले में अथवा की के सींग में बांध देने से बछड़े को बजाने अधिक दूध देने लगती है

सर्व जन-वशीकरण यन्त्र

सामने दिये यन्त्र को कुंकुम तथा सिन्दूर द्वारा मोटे के सिवाये साफ से लिखें फिर उस मोटे से दाली कर कर, जिसे खिला-देंगे वह दाली खिलाने वाले के वशीभूत हो जाएगा। मोटे पर यन्त्र लिखने के बाद धूप-दीपादि से उसका पूजन कर लेना आवश्यक है।

६१	६२	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	६	१
४	६	६३	६६

३६

(सर्वजन-वशीकरण यन्त्र)

स्त्री-वशीकरण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को केशर द्वारा अपने दाँये हाथ की हथेली पर लिखकर सात दिनों तक साध्य स्त्री को प्रतिदिन दिखाते रहने से वह साधक (यन्त्र-लेखक) के वशीभूत हो जाती है।

५७	६४	२	८
७	३	६१	६०
६३	५८	६	१
४	६	६६	६१

३७

(स्त्री-वशीकरण यन्त्र)

पति-वशीकरण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को पलाश के पत्ते द्वारा रोटी पर लिखकर उसे पति अथवा किसी भी पुरुष को खिला देने से वह स्त्री के वशीभूत हो जाता है।

७	२१	२	७
६	३	१८	५१
२५	५७	८	१
४	५	७०	२४

५०

(पति-वशीकरण यन्त्र)

पत्नी-वशीकरण यन्त्र

सामने दिये यन्त्र को अपने मुँह के थूक की पाँच द्वारा पान के पत्ते पर लिख कर उसे अपनी पत्नी अथवा किसी अन्य स्त्री को खिला दिया जाता है। वह पान खिलाने वाले पुरुष के वशीभूत हो जाती है।

यह यन्त्र पुष्य नक्षत्र में ही लिखना चाहिए।

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३६	४१

५१

(पत्नी-वशीकरण यन्त्र)

भूत-प्रेतादि-भय नाशक यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को केशर द्वारा कागज पर लिखकर घर में रखने से भूत, प्रेत, डाकिनी शाकिनी आदि का भय दूर होता है तथा यन्त्र वाले घर में सर्प नहीं आता।

८०	८७	२	७
६	३	८५	८३
८६	८१	८	१
४	५	८२	८५

३६

(भूत-प्रेतादि-भय नाशक यन्त्र)

भूत-प्रेत-त्रासन यन्त्र

सामने दिये यन्त्र को सर्व अरक पर सरिया से लिख-कर, उसका पुष्प धूप, दीप, फल आदि से पूजन करें, फिर उसे पूरि से ढँक कर शैर के कोयला की अग्नि के ऊपर रखकर जलावें तो भूत रोगा पीड़ा हुआ स्वप्नस्त व्यक्ति को छोड़कर तुरन्त भाग जाता है।

इस यन्त्र के प्रभाव से प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, ब्रह्मराक्षस आदि भाग जाते है।

हीं	हीं	हीं	हीं
हीं	हीं	हीं	हीं
हीं	हीं	हीं	हीं
हीं	हीं	हीं	हीं

४०

(भूत-प्रेत-त्रासन यन्त्र)

भूत-प्रेत-निष्कासन यन्त्र

सामने दिये यन्त्र को अष्ट-गन्ध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर घर में रखने से वहां भूत प्रेतादि के उपद्रव का भय नहीं रहता।

इसी यन्त्र को चांदी की तश्तरी में श्मशान की मिट्टी (राख) से लिख कर, उस तश्तरी को यदि भूत-ग्रस्त रोगी के मस्तक पर रखकर तालाब में फेंक दिया जाय तो भूत उसे छोड़ कर भाग जाता है।

८५	५६	१	१२
६	६०	६२	१३
५६	५	१८	६१
७	६६	२८	५८

६०

(भूत-प्रेत-निष्कासन यन्त्र)

बलाय-दूर करने का यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को चन्दन द्वारा भोज-पत्र के ऊपर लिखकर,

५६	५७	६	८
६	८	५५	५३
७६	३६	८	८
७	५	७५	५५

५२

(बलाय दूर करने का यन्त्र)

विधि पूर्वक पूजन करें, तदुपरान्त उसे घर में गाड़ दें तो सब प्रकार की बलाय (ऊपरी व्याधियां) दूर हो जाती है।

संख्या का घनफल

(Cube of a Number)

किसी संख्या को उसी संख्या से तीन बार गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल को उस संख्या का घनफल कहते हैं।

संख्या के घनफल का अर्थ इस प्रकार समझा जा सकता है।

प्राकृतिक संख्या का घन

(Cube of Natural Number)

प्राकृतिक संख्या का घन ज्ञात करने के लिए उस संख्या को उसी संख्या से तीन बार गुणा करते हैं। जैसे 2 का घन $2 \times 2 \times 2 = 8$ होता है।

संख्या	घन
1	$1^3 = 1$
2	$2^3 = 8$
3	$3^3 = 27$
4	$4^3 = 64$
5	$5^3 = 125$
6	$6^3 = 216$
7	$7^3 = 343$
8	$8^3 = 512$
9	$9^3 = 729$
10	$10^3 = 1000$

पूर्ण घन संख्या

(Perfect Cube Number)

ऐसी संख्या जो किसी संख्या का घन हो, पूर्ण घन संख्या कहलाती है। जैसे 1, 8, 27, 64, 125, 216, 343, 512, 729, 1000 पूर्ण घन संख्याएँ हैं।

घन संख्या ज्ञात करने की विधि

(Method of Finding Cube Number)

किसी संख्या का घन ज्ञात करने के लिए उस संख्या को उसी संख्या से तीन बार गुणा करते हैं। जैसे 5 का घन $5 \times 5 \times 5 = 125$ होता है।

घन संख्या ज्ञात करने के नियम

(Rules of Finding Cube Number)

1. किसी संख्या का घन ज्ञात करने के लिए उस संख्या को उसी संख्या से तीन बार गुणा करते हैं।
2. किसी संख्या का घन ज्ञात करने के लिए उस संख्या को उसी संख्या से तीन बार गुणा करते हैं।
3. किसी संख्या का घन ज्ञात करने के लिए उस संख्या को उसी संख्या से तीन बार गुणा करते हैं।

घन संख्या ज्ञात करने के उदाहरण

(Examples of Finding Cube Number)

उदाहरण 1. 2 का घन ज्ञात करो।

हल : $2 \times 2 \times 2 = 8$

उदाहरण 2. 3 का घन ज्ञात करो।

हल : $3 \times 3 \times 3 = 27$

उदाहरण 3. 4 का घन ज्ञात करो।

हल : $4 \times 4 \times 4 = 64$

उदाहरण 4. 5 का घन ज्ञात करो।

हल : $5 \times 5 \times 5 = 125$

उदाहरण 5. 6 का घन ज्ञात करो।

हल : $6 \times 6 \times 6 = 216$

उदाहरण 6. 7 का घन ज्ञात करो।

हल : $7 \times 7 \times 7 = 343$

उदाहरण 7. 8 का घन ज्ञात करो।

हल : $8 \times 8 \times 8 = 512$

उदाहरण 8. 9 का घन ज्ञात करो।

हल : $9 \times 9 \times 9 = 729$

उदाहरण 9. 10 का घन ज्ञात करो।

हल : $10 \times 10 \times 10 = 1000$

घन संख्या ज्ञात करने के अभ्यास

(Practice of Finding Cube Number)

1. 11 का घन ज्ञात करो।
2. 12 का घन ज्ञात करो।
3. 13 का घन ज्ञात करो।
4. 14 का घन ज्ञात करो।
5. 15 का घन ज्ञात करो।
6. 16 का घन ज्ञात करो।
7. 17 का घन ज्ञात करो।
8. 18 का घन ज्ञात करो।
9. 19 का घन ज्ञात करो।
10. 20 का घन ज्ञात करो।

घन संख्या ज्ञात करने के प्रश्न

(Questions of Finding Cube Number)

1. 21 का घन ज्ञात करो।
2. 22 का घन ज्ञात करो।
3. 23 का घन ज्ञात करो।
4. 24 का घन ज्ञात करो।
5. 25 का घन ज्ञात करो।
6. 26 का घन ज्ञात करो।
7. 27 का घन ज्ञात करो।
8. 28 का घन ज्ञात करो।
9. 29 का घन ज्ञात करो।
10. 30 का घन ज्ञात करो।

घन संख्या ज्ञात करने के अभ्यास

(Practice of Finding Cube Number)

1. 31 का घन ज्ञात करो।
2. 32 का घन ज्ञात करो।
3. 33 का घन ज्ञात करो।
4. 34 का घन ज्ञात करो।
5. 35 का घन ज्ञात करो।
6. 36 का घन ज्ञात करो।
7. 37 का घन ज्ञात करो।
8. 38 का घन ज्ञात करो।
9. 39 का घन ज्ञात करो।
10. 40 का घन ज्ञात करो।

घन संख्या ज्ञात करने के प्रश्न

(Questions of Finding Cube Number)

1. 41 का घन ज्ञात करो।
2. 42 का घन ज्ञात करो।
3. 43 का घन ज्ञात करो।
4. 44 का घन ज्ञात करो।
5. 45 का घन ज्ञात करो।
6. 46 का घन ज्ञात करो।
7. 47 का घन ज्ञात करो।
8. 48 का घन ज्ञात करो।
9. 49 का घन ज्ञात करो।
10. 50 का घन ज्ञात करो।

प्रश्नोत्तरी-प्रतियोगिता प्रश्न

.....

प्रश्न का उत्तर प्रश्न की प्रतियोगिता के ठीक नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है। प्रश्न का उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है।

प्रश्न का उत्तर प्रश्न की प्रतियोगिता के ठीक नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है।

.....

प्रश्न का उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है। प्रश्न का उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है।

प्रश्न-उत्तर प्रश्न

(प्रश्न-उत्तर प्रश्न)

.....

प्रश्न-उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है। प्रश्न-उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है।

प्रश्न-उत्तर प्रश्न

(प्रश्न-उत्तर प्रश्न)

.....

प्रश्न-उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है। प्रश्न-उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है।

प्रश्न-उत्तर प्रश्न

(प्रश्न-उत्तर प्रश्न)

.....

प्रश्न-उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है। प्रश्न-उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है।

प्रश्न-उत्तर प्रश्न

(प्रश्न-उत्तर प्रश्न)

.....

प्रश्न-उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है। प्रश्न-उत्तर प्रश्न के नीचे वाले प्रश्न में दिया गया है।

बाल-ज्वर-नाशक यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को श्मशान की ठीकरी पर धतूरे के रस से लिख कर कृष्णपक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी के दिन, पूजन करके श्मशान में गाढ़ देने से बालकों का ज्वर तत्काल उतर जाता है। इस यन्त्र को बालक के गले में बाँधने से भी उसका ज्वर उतर जाता है।

५६	१	४४
२०	३८	४६
२८	६२	१४

५८

(बाल-ज्वर-नाशक यन्त्र)

मन्त्र गणना

(उपयुक्त मन्त्र का चयन कैसे करें ?) लेखक—डा० बाई० डी० गहराना

विवाह से पूर्व वर कन्या के सम्बन्धों के भविष्य के बारे में गणना करना जितना जटिल होता है उतना ही संवेदनशील और जटिल कार्य किसी व्यक्ति के लिए मन्त्र का चयन करना है।

आप देखेंगे कि एक ही प्रकार के कार्य के लिए अनेकों मन्त्र दिये जाते हैं। ये सभी मन्त्र प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयुक्त नहीं होते। बाजार में बीसियों प्रकार के टॉनिक उपलब्ध होते हैं परन्तु प्रत्येक टॉनिक हर एक रोगी के लिए उपयुक्त नहीं होता। डाक्टर औषधि-संयोजन का ध्यान रखते हुए ही रोगी को किसी विशेष टॉनिक को लेने की सलाह देता है। इसी प्रकार शब्द संयोजन का ध्यान रखते हुए ही गुरु किसी मन्त्र का उपदेश करता है। मन्त्र के चयन, मन्त्र की दीक्षा और मन्त्र की साधना—इन तीनों में से किसी कार्य में भी थोड़ी सी असावधानी हो जाने पर सिद्धि नहीं मिलती है। मन्त्र का चयन 'मन्त्र-गणना' के आधार पर किया जाता है। अच्छा यह होगा कि मन्त्र गणना की बात करने से पूर्व 'मन्त्रों के प्रभाव की वैज्ञानिक प्रक्रिया को समझ लिया जाय—

आज के विज्ञान का आधुनिकतम यन्त्र रैडार है। इसमें एक एन्टिना होता है, जिसके द्वारा रैडार अपनी तरंगों को आकाश में प्रसारित करता है। कुछ तरंगें आकाश में उड़ती हुई वस्तु से टकराकर वापस आती हैं जो पुनः रैडार के उसी एन्टिना द्वारा ग्रहण कर ली जाती हैं, जिन्हें रैडार में विशेष प्रक्रियाओं द्वारा पर्दे पर देखा जाता है और इस प्रकार आकाश में उड़ते हुए वायुयान. बादल आदि की दूरी, दिशा, ऊँचाई आदि की गणना रैडार द्वारा कर ली जाती है। यदि हम अपने मन्त्र विज्ञान पर ध्यान दें तो ऐसा आभास होगा कि शायद हमारे मन्त्र विज्ञान का रहस्य जान लेने के बाद ही रैडार का निर्माण हुआ है।

मानव के अन्दर जो चैतन्य सत्ता है उसे विद्वानों ने "आत्मा" कहा

कहा है, जो स्वयं तरंगोत्पादक होता है। जैसे रेडार के अन्दर ट्रान्समीटर तरंगोत्पादक होता है। यह तरंग यदि किसी विशेष दिशा की ओर प्रसारित न की जायें तो व्यक्ति के चारों ओर एक घेरे में फैल जाती हैं। इसे आप ऐसे समझ सकते हैं जैसे कि एक टार्च के ऊपर से उसका रिफ्लेक्टर उतार देने से बल्ब का प्रकाश इतना कम होता है कि पास पड़ी हुई वस्तु भी कठिनाई से दिखाई दे पाती है क्योंकि टार्च का प्रकाश चारों ओर बिखर जाता है। यही प्रकाश जब रिफ्लेक्टर लगाकर एक विशेष दिशा की ओर फोकस किया जाता है तो बहुत दूर की वस्तु भी हमें स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाती है। जिस तरह से टार्च में प्रकाश-शक्ति है, उसी तरह से व्यक्ति मात्र में "आत्मिक शक्ति" है इसे फोकस करना सीखने के लिए Concentration एकाग्रता (ध्यान) का अभ्यास करना होता है। एकाग्रता हमारी जितनी अच्छा होगी, आत्मिक शक्ति उतनी ही अच्छी फोकस हो सकेगी। यदि आपको टार्च का फोकस मन्त्र अर्थात रिफ्लेक्टर चमकदार न हो तो टार्च का प्रकाश कैसा होगा, यह आप समझ ही सकते हैं। यदि Concentration एकाग्रता (ध्यान) के इष्ट—अभ्यास द्वारा अपनी आत्मिक तरंगों को फोकस करना सीख लेने के पश्चात प्रश्न उठता है कि फोकस किये हुए शक्तिपुंज को विशेष दिशा में कैसे प्रसारित किया जाय? यह दिशा बोध 'इष्ट' की कल्पना मूर्ति द्वारा होता है। इष्ट से तात्पर्य है -एक विशेष कल्पना मूर्ति, जिसके ध्यान से आत्मिक तरंगों को एक विशेष दिशा मिलती है। यदि यह 'इष्ट' आपकी 'माँ' है तो आपकी माँ की ओर आपकी आत्मिक-शक्ति तरंग प्रवाहित हो जायेंगी। यदि 'इष्ट' बहन है तो उस ओर तरंगें जा टकरायेंगी। यदि कोई और ,दूरस्थ वस्तु है तो तरंगें उसकी ओर पहुंच जायेंगी और उसकी कार्य प्रणाली में अवरोध पैदा करेंगी (लोक-व्यवहार में भी आपने किसी की आँख फड़कने पर या हिचकियां आने पर यह कहते सुना होगा कि अमुक व्यक्ति का नाम लेने पर ही हिचकियां बन्द हुई है, वही मुझे याद कर रहा है—यह इन्हीं 'जी—रेज' की कृपालता होती है)। तात्पर्य यह है कि व्यक्ति विशेष के रूप का ध्यान करने से तरंगें उस दिशा में गमन करने लगती हैं। इसी सिद्धान्त को थोड़ा और आगे बढ़ाने पर हम देखेंगे कि विभिन्न मूर्तियों की कल्पना करके हम अपनी तरंगों को मंगल, शुक्र आदि विभिन्न ग्रहों की ओर प्रसारित कर सकते हैं। जैसा कि मैंने रेडार प्रणाली के सिद्धान्त के बारे में कहा था—इन ग्रहों से टकराकर लौटने वाली तरंगों का उपयोग हम अपने लाभ के लिए कर सकते हैं। यह विशेष मूर्ति (इष्ट) वास्तव में पृथ्वी पर पैदा हुए हों, यह आवश्यक नहीं है। यहाँ पर आवश्यक केवल इतना है कि किस इष्ट का ध्यान करने से हमें क्या परिणाम मिलता है? जैसे हनुमान का ध्यान करने

से हमें बल पराक्रम मिलता है, जो मंगल ग्रह की विशेषता है। तात्पर्य यह है कि हनुमानजी का विशेष प्रकार वर्णित रूप में ध्यान करने पर हमारी आत्मिक शक्ति मंगल ग्रह की दिशा में गमन करती है। अब प्रश्न यह है कि शक्ति मंगल तक पहुंचे कैसे? दिशा का निर्णय तो इष्ट ने कर दिया। दूरी का निर्णय कौन करे। यह निर्णय मन्त्र की जप संख्या और जप काल निर्धारित करता है। ऋषियों ने बहुत काल की खोज के उपरान्त अपने विभिन्न निर्णयों के आधार पर मन्त्रों की जप संख्या निर्धारित की है। जैसे तांत्रिक हनुमानजी के किसी विशेष मन्त्र की जप संख्या २ लाख है। उसका तात्पर्य है कि हनुमानजी के व्यक्त-रूप का ध्यान करते हुए उस मन्त्र का २ लाख बार जप किया जाय तो हमारी आत्मिक शक्ति मंगल ग्रह पर पहुंच जायगी। वहां से टकराकर जो तरंगें पृथ्वी पर वापस आयेंगी वे बराबर यह की शक्ति से प्रभावित रहेंगी और इस प्रकार शक्ति-प्राप्त हो सकेंगी। यह प्रभावित शक्ति-तरंगों का उपयोग विभिन्न प्रकार के कष्ट-बन्धन को काटने में सहायक होता है।

जो कर्म हम करते हैं उनके आधार पर उत्पादित संस्कारों का एक आवरण आत्मा के ऊपर चढ़ता जाता है, जो कर्म बन्धन बन जाता है। इस प्रकार के सारे करोड़ों जन्मों-जन्मान्तर एक-एक आवरण का होते हैं। आत्मा स्व प्रकाशित शक्ति पुंज है, जिसमें से शक्ति तरंगें अनवरत रूप से प्रसारित होती रहती हैं। कर्म-बन्धन की काठिन्यता की समझने के लिए एक और उदाहरण लीजिये—बाजार की-सी सेट के तीन बल्ब लीजिये। एक बल्ब पर एक हजार पारदर्शी प्लास्टिक के आवरण लपेट दीजिये। दूसरे बल्ब पर दो सौ आवरण लपेटिये और तीसरे बल्ब को ऐसे ही रहने दीजिये। अब तीनों बल्ब जलाकर उनकी प्रकाश शक्ति का अध्ययन कीजिये। आप पायेंगे कि तीनों बल्बों के प्रकाश के अन्तर का कारण अर्थात तीनों बल्ब की प्रकाश-शक्ति में अन्तर होना, यद्यपि वास्तव में तीनों बल्बों की 'प्रकाश-शक्ति' एक जैसी (सौ वाट) ही है। इसी प्रकार प्रत्येक आत्मा की अन्दर की शक्ति एक ही है परन्तु विभिन्न आवरणों के कारण प्रत्येक जीव की आत्मिक शक्ति में अन्तर हो जाता है। अब किसी बल्ब द्वारा धीरे से सौ-सौ आवरण दोनों बल्बों के ऊपर से काट दीजिये। आप देखेंगे कि बल्ब की प्रकाश-शक्ति बढ़ जाती है, फिर सौ-सौ आवरण और काटिये, प्रकाश-शक्ति और बढ़ जायगी, साथ ही दूसरे बल्ब का बल्ब पूर्ण

शास्त्रीय मान्यता के अनुसार—सतयुग में वेदों में वर्णित विधि से, त्रेता में स्मृतियों में दी गई विधि से, द्वापर में पुराणों में दी गई विधि से और कलियुग में तन्त्रोक्त विधि से पूजा-अर्चना करने का विधान है क्योंकि कलियुगी मानव अपेक्षाकृत अधिक अपवित्र भाव वाले माने गये हैं अतः वेद वर्णित मान्यता को अपेक्षा तन्त्र शास्त्र वर्णित विधि ही उनके लिये अधिक सरलतर और लाभप्रद रहेगी।

यह तो हुई शास्त्रीय बात। अब आप स्वयं देखिये—तांत्रिक अनुष्ठानों में अकेली मानवता ही काम नहीं करती। यहां विभिन्न साधनों व कर्मकांडों के द्वारा उस आद्य तत्त्व को अधिक उग्र (शक्ति पूर्ण) बनाया जाता है और उस शक्ति पुंज को विशेष दिशा में कार्यशील कर दिया जाता है इसीलिये कहा जाता है कि तांत्रिक मंत्रों में अधिक शक्ति होती है।

तांत्रिक कर्म कांड के बारे में भय

लोक व्यवहार में आप देखते हैं कि जब आप किसी सड़क के किनारे-किनारे पैदल चलते हैं तो इतनी सतर्कता नहीं बरतते, जितनी कि साइकिल से चलने पर। इससे भी अधिक सतर्कता स्कूटर से चलने पर बरतनी होती है। हवाई जहाज चलाते पर और भी अधिक सावधानी रखनी होती है। तात्पर्य यह है कि जितनी तेज काम करने वाली मशीन होगी उतनी ही अधिक सावधानी रखनी पड़ेगी। तांत्रिक अनुष्ठान भी बहुत तेज मशीन की तरह ही कार्य करते हैं। थोड़ी सी असावधानी होने पर तेज मशीन की तरह ही हानि पहुंचाते हैं। इसलिये जितना अधिक शक्ति पूर्ण कार्य करना हो उसी अनुपात में तन्त्रानुष्ठान में सतर्कता बरतनी होगी। मारण, उच्चाटन, विद्वेषण आदि कर्मों में ही नहीं अपितु शान्ति-पुष्टि के कार्यों में भी तन्त्र उसी तेजी (स्पीड) के साथ काम करता है। मैंने स्वयं ध्यान (मेडिटेशन) में देखा है कि जो अनुभव दूसरी विधियों से साधकों को सौभाग्य रूप से दस-बारह वर्ष की तपस्या के पश्चात् प्राप्त हो पाते हैं वे तांत्रिक विधि से १-२ घंटे के अन्दर ही प्राप्त होने लगते हैं। इतनी लाभदायक विधि को केवल संभावित दुर्घटना के भय के कारण छोड़ दिया जाय, इससे अधिक कायरता और क्या होगी? ऐसे अनुभवों का अधिक विस्तृत अध्ययन करने वाली संस्था आई० सी० एम० की भी तांत्रिक अनुष्ठानों के बारे में यही चेतावनी है कि घर में विद्युत से हम कई तरह

के कार्य सम्पन्न करते हैं। परन्तु विद्युत का व्यवहार और यन्त्र की कार्य विधि समझ लेने के पश्चात् ही अन्यथा नहीं बिजली जान लेने से डर नहीं लगती। विद्युत के इस जान लेवा गुण के कारण यदि हम विद्युत उपकरणों का उपयोग न करें तो यह कोई बुद्धिमानी की बात नहीं होगी। तात्पर्य यह है कि तंत्र से इसलिये दूर भागना क्योंकि उसमें अधिक खतरे का विस्फोट होता है, इस वर्ग की बेवकूफी और कायरता की बात है। यदि सभी ऐसा सोचने लगें तो सारे विकास कार्य रुक जांय, न रेल चले न हवाई जहाज। रही बात तांत्रिक अनुष्ठानों की दीक्षा उपासना आदि में सतर्कता और जागरूकता बर्तने की, वह तो आवश्यक है ही। कई लोग काली (को केवल कामना करते हैं पाते कभी नहीं) लोगों को यह कहते सुना जाता है कि यदि धीरे-धीरे चलने में कोई रिस्क (जोखिम) नहीं है तो धीरे चलना अधिक अच्छा है, परन्तु ऐसे धीरे चलने का क्या लाभ है, जो अन्त समय तक मंजिल पर ही न पहुंचे गाओ? यदि कोई एम० बी० बी० एस० होने में पूरी उम्र लगा दे, तो उस डिग्री का उपयोग कब करेगा? वैसे भी यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि इस तरह धीरे-धीरे डिग्री लेने की बात करने वाले कभी भी डिग्री पूरी नहीं कर पाते। इसीलिये ऐसे छात्रों को एक-दो वर्ष की प्रतीक्षा के उपरान्त डिग्री के अयोग्य मानकर, विद्यालय से निकाल दिया जाता है।

अब हम अपने मूल विषय 'मन्त्र-गणना' पर आते हैं। मन्त्र गणना से तात्पर्य है—यह गणना कैसे की जाय कि जिस मन्त्र का जप आप किसी विशिष्ट प्रयोजन हेतु करना चाहते हैं वह "मन्त्र" आपके लिए उपयुक्त है या नहीं? इसके लिए हमें कुछ बातों पर विस्तारपूर्वक विचार करना होता है, यथा—

वर्ग विचार—उपयुक्त मन्त्र का चयन करते समय पहले यह देखिये कि जिस प्रयोजन के लिए आप मन्त्र चुनना चाहते हैं, वह किस वर्ग का है? अर्थात स्वापेक्ष, परापेक्ष अथवा मध्यवर्ती है। स्वापेक्ष वर्ग में वे सभी मन्त्र हैं, जो अपने तक ही सीमित कार्यों के लिए प्रयुक्त होते हैं, जैसे मोक्ष मुक्ति हेतु या लक्ष्मी प्राप्ति हेतु किये गये प्रयोग। परापेक्ष वर्ग में वे मन्त्र आते हैं, जिनमें दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव पड़ता हो जैसे—मारण, वशीकरण उच्चाटन, स्तंभन, विद्वेषण आदि। इन दोनों के बीच के प्रयोगों के मन्त्र मध्यवर्ती वर्ग में आते हैं। जैसे गड़े धन की प्राप्ति या सन्तान प्राप्ति के मन्त्र।

SHAIKH ABDUL GAFAR,RMU,CONFIN

गुण विचार—जब आप प्रयोजन के आधार पर मन्त्रों के ग्रुप (वर्ग) का विचार कर लें तब मन्त्रों के 'गुण' पर ध्यान दें—सतोगुणी मन्त्र को जप करने वाला रजोगुणी या तमोगुणी साधना करे तो काम नहीं बनता। तात्पर्य यह है कि विरोधी गुण वाले मन्त्रों का जाप एक साथ नहीं किया जा सकता है। उदाहरणार्थ—सांसारिक लाभ चाहने वाला व्यक्ति प्रणव मन्त्र "ॐ" का जप करे तो एक दम उल्टा प्रभाव मिलेगा और मोक्ष चाहने वाले के लिए 'प्रणव' के समान दूसरा मन्त्र नहीं है। इसी प्रकार गायत्री मन्त्र भी शुद्ध सतोगुणी मन्त्र है। जिससे गायत्री मन्त्र सिद्ध किया है। वह भैरव के मन्त्र को सिद्ध नहीं कर सकता। अन्यथा जितने उसने गायत्री मन्त्र के जाप किये हैं उतने भैरव के मन्त्र के जप करने पर उसकी 'जीरो' की स्थिति आयेगी, तत्पश्चात् निर्दिष्ट संख्या में भैरव के जप करने पर ही भैरव की सिद्धि सम्भव हो सकेगी। तात्पर्य यह है कि पूर्ण सतोगुणी मन्त्र का जप करने वाले को रजोगुणी या तमोगुणी मन्त्र का जप, अपना प्रभाव नहीं देगा, जो सांसारिक उन्नति चाहता है उसके लिए रजोगुणी मन्त्र उपयुक्त है। वैसे भी रजोगुणी से सतोगुणी या तमोगुणी साधना के द्वारा आसान रहता है।

आद विचार—मन्त्र के चयन करने में अरिभाव या मित्र भाव का भी विचार करना चाहिये। कई बार मन्त्र के प्रथमाक्षर का साधक के नाम के प्रथमाक्षर या जन्म राशि से मेल नहीं बैठता यह 'अरिभाव' कहलाता है। मन्त्र अनुकूल है या नहीं इसके लिए 'मित्रारि चक्र' और "कुलाकुल चक्र" द्वारा गणना करनी चाहिए। एक प्रकार के काम के लिए अनेक मन्त्र रहते हैं, उनमें से बहुत आसानी से अनुकूल मन्त्र चुना जा सकता है।

ऋतु विचार—मन्त्र की उपयुक्तता की गणना करने में ऋतु का भी ध्यान रखना पड़ता है। वर्ष मन्त्रों को उल्टी ऋतु में करने पर कार्य सिद्धि में विलम्ब होना स्वाभाविक है, परन्तु एक ऋतु वर्ष में एक ही बार आती है अतः इसके विलम्ब हेतु २४ घन्टे (एक दिन रात) में छः ऋतुएं मान ली गई हैं।

बलाबल विचार—जब मन्त्र गणना में नहीं आता है उस व्यक्ति के 'शक्ति का विपरीत असर मन्त्र का प्रभाव डालता है। रक्षित, शक्ति व मन्त्र, कार्यशील व्यक्ति पर साधारण मन्त्र प्रभाव नहीं दिखा सकते। ऐसे में बलाबल का विचार करके मन्त्र गणना करनी होती है।

पावना विचार—मन्त्र गणना करते समय पर्यावरण का ध्यान भी रखना होगा पर्यावरण का प्रभाव बड़ा महत्वपूर्ण होता है। यदि आप कौए और गीध आमन्त्रित करने की इच्छा करते हैं तो एक शव के आस-पास कहीं डाल दीजिये और देखिये कितने दिन दूसरे सहचर पधारते हैं? इसी प्रकार जब आपको इच्छा वस्तुयें आदि जल-जन्तु एकत्र करने की हो तो एक सुन्दर सा तालाब बना डालिये। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार के देवता का आह्वान करना हो उसी प्रकार का वातावरण बना लेने पर सिद्धि में आसानी हो जाती है। यह वातावरण दो तरह से बनाया जाता है—बाह्य और आन्तरिक। बाह्य वातावरण से तात्पर्य है साधक के आस-पास का वातावरण जैसे वैताल साधना के लिए उपयुक्त स्थल श्मशान होता है। आन्तरिक वातावरण से तात्पर्य है अपने शरीर को देवता के उपयुक्त बनाना, जिसे पावना प्राप्त करना कहते हैं। बाह्य वातावरण को उपयुक्त बनाने के ढंग को 'कर्म काण्ड' कहा जाता है। आन्तरिक वातावरण वाली बात से साधक के मानसिक स्तर का प्रदर्शन होता है, जिसे 'चरित्र' कहते हैं। इसी आधार पर व्यक्ति किसी कार्य के लिए सुपात्र या कुपात्र कहलाता है।

वर्ण-विचार—जिस मन्त्र में चार दीर्घ अक्षर हों, वह ब्राह्मण मन्त्र कहलाता है, अर्थात् वह ब्राह्मण के उपयुक्त मन्त्र है। इसी क्रम से तीन अक्षर वाला क्षत्रिय मन्त्र है, दो अक्षरों वाला वैश्य मन्त्र, और एक अक्षर वाला शूद्र मन्त्र होता है।

ब्राह्मण व्यक्ति क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि के मन्त्र ग्रहण कर सकता है, परन्तु क्षत्रिय या वैश्य आदि ब्राह्मण मन्त्र ग्रहण नहीं कर सकते क्योंकि ब्राह्मण मन्त्र के अक्षर क्षत्रिय शूद्रादि मन्त्रों से अधिक होते हैं। इसी प्रकार वैश्य क्षत्रिय मन्त्र का प्रयोग नहीं कर सकता। शूद्र मन्त्र का प्रयोग कोई भी कर सकता है। पौराणिक मन्त्रों में कोई दीर्घ अक्षर नहीं होता अतः शूद्र के लिए भी उपयोगी है। प्रणव मन्त्र "ॐ" एक दीर्घ अक्षर मन्त्र है परन्तु शूद्र के लिये उपयुक्त नहीं है। वैसे भी सांसारिक सुख चाहने वाले गृहस्थी अर्थात्यों के लिए प्रणव मन्त्र प्रतिकूल सिद्ध होता है। गृहस्थी छूटने लगती है। उसके संन्यासी के लिए प्रणव से बढ़ कर दूसरा मन्त्र नहीं है। स्त्री वर्ग को भी प्रणव मन्त्र या प्रणव युक्त मन्त्रों से बचना चाहिये। इसी प्रकार अग्नि मन्त्र 'हूं', जिन मन्त्रों के अन्त में स्वाहा हो, भी (स्त्रियों)

बीज मन्त्र, आदि शूद्र और स्त्री को फलदायी नहीं होंगे। इनके लिये शिव, दुर्गा, गणेश, सूर्य, गोपाल आदि के मन्त्र अधिक उपयुक्त रहेंगे परन्तु उसमें प्रणव तथा स्वाहा न हो, अन्यथा स्त्री और शूद्र मे सेवा भाव कम हो जायगा और स्वेच्छाचारिता में वृद्धि हो जायगी, जिससे इनके कर्तव्य कर्म में अवरोध प्रारम्भ हो जायेंगे। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र वाली बात इन वर्णों के शास्त्रीय कर्तव्य कर्म का ध्यान रखते हुए ही कही गई है। किसी को छोटा बड़ा प्रदर्शित करने के उद्देश्य से नहीं। यदि कोई ब्राह्मण शूद्र कर्मी हो गया है तो उसके लिये शूद्र वाला नियम लागू होगा, ब्राह्मण वाला नहीं।

मध्यकाल में कुछ अज्ञानियों द्वारा मन्त्रों में 'ॐ' और स्वाहा जोड़-जोड़ कर अधिकतर मन्त्रों को दूषित कर दिया गया है। यहाँ तक कि षड़-क्षर और नव-अक्षर मन्त्रों में 'ॐ' आदि जोड़कर मन्त्राक्षरों की संख्या में ही दोष पैदा कर दिया गया है। यह सभी बातें अविलम्ब संशोधन माँगती है। यह बड़े हर्ष की बात है कि विश्व की आधुनिकतम सामाजिक संस्था 'रिफोर्मर्स ऑफ ह्यूमैनिटी एण्ड हैल्थ (संस्कृति एवं आरोग्य प्रवर्तिका) ने योग और आत्म ज्ञान, मन्त्र-तन्त्र में शोध कार्य करने की ओर ध्यान दिया है और 'इन्स्टीट्यूट ऑफ कास्मिक योगा एण्ड मैटाफिजीकल रिसर्चेज' (आई० सी० एम०) की स्थापना की है।

लिंग विचार—जिन मन्त्रों के अन्त में "हूं फट्" आत्म है वह पुल्लिग मन्त्र होते है। जिनके अन्त में "स्वाहा" हो वह स्त्रीलिंग मन्त्र होते हैं और जिनके अन्त में "नमः" आये वह नपुंसक लिंग।

राशि विचार—नीचे कोष्ठकों में राशि के नाम और उनके साथ कुछ अक्षर लिखे हैं। साधक अपने जन्म की राशि से, मंत्र के प्रथम अक्षर वाले कोष्ठक तक गिनें। जन्म राशि का ज्ञान न हो तो नाम-राशि से गिनें। उदाहरणार्थ साधक की राशि सिंह है और 'न' अक्षर से प्रारम्भ होने वाला मन्त्र वह लेना चाहता है, जो कि सिंह राशि के खाने से आठवें खाने में पड़ता है। आठवां खाना मृत्यु सूचक है अतः मन्त्र अशुभ रहेगा। स्थान सूची इस प्रकार है—प्रथम स्थान को लग्न द्वितीय को धन, तृतीय को भाई, चौथे को बन्धु, पांचवें को पुत्र, छठवें को शत्रु, सातवें को स्त्री, आठवें को मृत्यु नवमें को धर्म, दसवें को कर्म, ग्यारहवें को आय और बारहवें को व्यय का स्थान माना गया है। जिस कोष्ठक में जो स्थान आता है, उस सिद्धि को प्राप्त

करने के लिए उस कोष्ठक में लिखे अक्षरों से प्रारम्भ होने वाले मंत्रों का जाप ही उपयुक्त रहेगा। उदाहरणार्थ—सिंह राशि वाला साधक आयु वृद्धि हेतु कोई मंत्र जपना चाहता है तो सिंह राशि के स्थान से ग्यारहवां स्थान गिने जो कि तुला राशि का स्थान है, जिसमें "क ख ग घ ङ" अक्षर है अतः इन अक्षरों से प्रारम्भ होने वाला "आयवर्धक-मंत्र" ऐसे साधक के लिए उपयुक्त रहेगा।

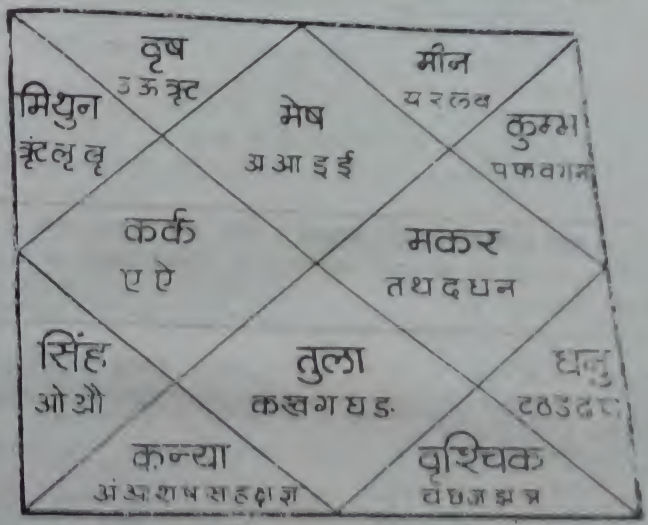

इस प्रकार आप देखेंगे कि छठा, आठवां और बारहवां स्थान कभी भी शुभ नहीं हैं, घातक है।

नक्षत्र विचार—नक्षत गणना की कई विधियां हैं। पाठकों के लाभार्थ सरलतम विधि यहां दे रहे हैं। साधक के जन्म नक्षत्र और मन्त्र के प्रथम अक्षर का गण नक्षत्र सारिणी में देखकर मिलायें—यदि जन्म नक्षत्र और प्रथमाक्षर दोनों के गण मिल जाते हैं तो इससे अच्छी क्या बात हो सकती है। वर्ना देव गण के जन्म नक्षत्र वाला देव गण वाले अक्षरों से प्रारम्भ होने वाले मन्त्र को ग्रहण करें। राक्षस-गण के जन्म नक्षत्र वाला राक्षस गण में लिखे अक्षरों से प्रारम्भ होने वाले मंत्रों को सिद्ध करें। देव-गण जन्म नक्षत्र वाला नर-गण में लिखे अक्षरों से प्रारम्भ होने वाले मंत्र को ले सकता है परन्तु यदि साधक के जन्म नक्षत्र का गण राक्षस है और मंत्राक्षर का गण न हो तो विनाशकारी है। इसी प्रकार देव और राक्षस गण हों तो भी अशुभ है

| | | |

इन २७ वीथी में से केवल १५ वीथि ही विद्धिदग्ध हैं—शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य, कार्त्तिक, सुक्ष्म, वर्षेण, वरीयान, ब्रह्म, सौभाग्य, शोभन, धृति, वृद्धि, ध्रुव और आयुष्मान।

कुलाकुल विचार—

वर्ण	अ	पृथ्वी	आकाश	वायु	अग्नि
	अ क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह क्ष त्र ज्ञ
संख्या	१	२	३	४	५

उक्त तालिका में साधक के नाम का प्रथमाक्षर एवम् मंत्र का प्रथमाक्षर मिलाकर देखें कि कौन से खाने में है। यदि दोनों अक्षर एक ही खाने में हों तो स्व कुल के कहलाते हैं अन्यथा 'अ कुल' के कहे जाते हैं।

उदाहरणार्थ— मदन मोहन नामक साधक 'शक्रोदेवी' शब्द से प्रारम्भ होने वाला मंत्र ग्रहण करना चाहता है तो साधक के नाम का प्रथमाक्षर 'म' और मंत्र का प्रथमाक्षर 'श' दोनों एक ही खाने में [अर्थात] आकाश तत्व [तीसरे खाने में] में है अतः स्व कुल है अर्थात साधक और मंत्र दोनों में प्राकृतिक समानता है, ऐसा मंत्र शुभ फल देता है। यदि मंत्र और साधक का कुल अर्थात एक ही तत्व न मिले तो 'मित्र तत्व' का मंत्र ग्रहण करें अर्थात् ऐसा मंत्र ग्रहण करें, जिसका प्रथमाक्षर मित्र तत्व के खाने में लिखे हुये अक्षरों से मेल रखता जाए।

जल तत्व और वायु तत्व का मित्र पृथ्वी तत्व है। वायु का अग्नि मित्र है। आकाश सभी का मित्र है। वायु और पृथ्वी शत्रु हैं इसी प्रकार अग्नि के शत्रु जल एवम् पृथ्वी तत्व है।

निषिद्ध समय

बादल के गरजते समय भूकम्प के समय, संध्या के समय, उल्कापात के समय, मंत्र ग्रहण करने का निषेध है।

पक्षी और अशौचकी तिथियों में किसी तरह नहीं ग्रहण करना चाहिए।

विशिष्ट समय

माघों के दोनों पक्षों की छठी व अष्टमी, आश्विन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तथा अष्टमी, कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की नवमी, पौष की कृष्ण चतुर्दशी तथा शुक्ल पक्ष की अमावस्या, वैशाख की शुक्ल तृतीया तथा शुक्ल पक्ष की एकादशी, ज्येष्ठ की दशमी तथा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, आषाढ़ की शुक्ल पक्ष की पंचमी, श्रावण मास की कृष्ण पक्ष की पंचमी व एकादशी, मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष की छठी, चैत्र की चतुर्दशी, माघ की शुक्ल पक्ष की एकादशी, फाल्गुन की शुक्ल पक्ष की छठी तिथियां मंत्र ग्रहण के लिए शुभ हैं।

सोमवती अमावस्या, मंगलवारी चतुर्दशी और रविवारी सप्तमी भी अच्छी तिथियां हैं।

संक्रान्ति के समय, ग्रहण के समय तथा सन्धिकाल तिथियों में मंत्र ग्रहण के लिए शुभ हैं।

शुद्ध मन्त्र— नृसिंह, वाराह, सूर्य, काली, दुर्गा, तारा, कमला, भुवनेश्वरी, बगला, भुवनेश्वरी, धूमावती, मातंगी, त्रिपुरा, बाला, छिन्नमस्ता, कामाख्या, अन्नपूर्णा, वाग्देवी (सरस्वती) के मंत्र स्वयं शुद्ध है। इसी प्रकार प्रसाद बीज मन्त्र "हों", स्वप्न में प्राप्त मन्त्र सही गुरु द्वारा दिया गया मंत्र, बीस अक्षर से अधिक का मन्त्र, तीन अक्षर वाला मन्त्र तथा वेद विहित मंत्र, के शोधन की आवश्यकता नहीं होती। यह सभी स्वयं शुद्ध मन्त्र हैं।

गुरु मंत्र का चयन

अभी तक हमने साधारण मंत्रों के चयन की विधियों का वर्णन किया है, अब गुरु मंत्र के चयन की विधियों का उल्लेख करते हैं। गुरु मंत्र का अर्थ जन साधारण 'गुरु द्वारा दिया गया मंत्र' समझते हैं। इसमें संदेह नहीं कि 'गुरु मंत्र' गुरु द्वारा ही दिया जायगा परन्तु यह भी सही है कि गुरु मंत्र देने वाला व्यक्ति ही 'गुरु' है। अब आपकी समझ में सामान्य मंत्र और गुरु मंत्र में भिन्नता स्पष्ट होने लगेगी।

www.vedicastrologyonline.com अनुसार ये दुर मंत्र एक प्रकार आपकी फोटोकॉपी मंत्र है। जिस प्रकार से दुरदर्शन के ट्रांसमीटर की फोटोकॉपी का पता लगाकर, आप दूरदर्शन को फोटोकॉपी वस्तु के जरा से हटा सकते हैं। इसी प्रकार आपके गुरु मंत्र (अर्थात आपकी फोटोकॉपी) का पता लग जाने पर कोई भी व्यक्ति आपको दूर बैठे नष्ट कर सकता है। यही कारण है कि गुरु मंत्र को अत्यन्त गुप्त रखा जाता है। अन्यथा दुरुपयोग सामान्य मंत्र को गुप्त रखने की कोई आवश्यकता नहीं होती। चूंकि दुर मंत्र केवल फोटोकॉपी मंत्र है अतः कई प्रकार से उसका प्रयोग हो सकता है। जिसमें पाश्चात्य अंक दर्शन विधि, हिन्दी वर्णमाला विधि, कोरिक सेलाक्स विधि आदि ही प्रमुख रूप से प्रयोग में आते हैं। ये सभी विधियां व्यक्ति का सम्बन्ध सही से मानती है।

ब्रह्म और व्यक्ति—वेदांत दर्शन के अन्तर्गत 'आत्म तत्व विवेचन' में एक सिद्धान्त आत्मिक शक्ति से सम्बन्धित है, जिसके अनुसार आत्मा पर आच्छादित कर्म बंधनों के आवरणों में से छन कर आने वाला अत्यन्त सूक्ष्म अंश ही उस आत्मा की आत्मिक शक्ति है। अतः जो भी व्यक्ति वस्तु, व्यवस्था तथा अन्य वस्तुएं कर्म-बंधनों को प्रभावित करता है वे सभी आत्मिक शक्ति में भी परिवर्तन करती है, क्योंकि कर्म बंधन ही आत्मिक-शक्ति में कमी-बेशी का कारण होते हैं।

दूसरा सिद्धान्त 'तपस्या' से सम्बन्धित है, जिसके अनुसार—आत्मा की शक्ति को संचय करने ध्यान व तप आदि सहायक विधियों द्वारा) ब्रह्मांड स्थित विभिन्न शक्ति-केन्द्रों (ग्रहों-नक्षत्र आदि) की ओर प्रवाहित किया जाता है। ये शक्ति स्रोत जिन्हें हम देव (Divine) भी कहते हैं, उस शक्ति को और अधिक मात्रा में आत्मा पर भेजते हैं और आत्मा पर आच्छादित आवरणों को प्रभावित करती है, इस प्रकार कर्म बंधनों के आवरण हटाये जा सकते हैं।

तीसरा सिद्धान्त पवित्रता से सम्बन्धित है—तीनों ही प्रकार के आवरण तामसी एवं अन्य तामसी आवश्यक भोजन (Essential) होते हैं, इसलिये इन का संचय वह अन्य अशुद्धियां सेवें आदि की प्रभावकारी होती है।

इन तीनों सिद्धान्तों से यह स्पष्ट हो जाता है कि संचय और वह शक्ति जो जिस वस्तु से प्रभावित करते हैं।

यह बात तो हुई (Metaphysical) तत्व ज्ञान की अब ज्योतिष की बात करते हैं, किसी व्यक्ति की शुरू करी आप देखें तो यही पायेंगे कि व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन उसके 'जन्म के समय नक्षत्रों की स्थिति' से प्रभावित रहता है। आज का ज्योतिष शास्त्र हजारों वर्षों के गहन चिंतन का परिणाम है। आप तो जानते हैं चीन सदैव छोटी कमजी है। हजारों ज्योतिषों का अध्ययन उनके जन्म नक्षत्रों के आधार पर करने के पश्चात ही यह निष्कर्ष बन पाता था कि अमुक नक्षत्र में पैदा होने वाले जातक का व्यक्तित्व प्रकार का होगा। इस आधार पर नक्षत्रों की मुख्य विशेषताएं होंगी—

अश्विनी—जातक बुद्धिमान, रहस्यवादी, चंचल प्रकृति, नयी दृष्टि गृह कलह और अर्श रोग पीड़ित होता है।

भरणी—जातक धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला भी दुष्टित स्वभाव, कामी हिंसक प्रवृत्ति, चिड़चिड़ा होता।

कृतिका—जातक कलह प्रिय, धार्मिक, विद्या अध्ययनी, बंधु वर्ग पर विश्वास रखने वाला होता है।

रोहिणी—जातक पंच तत्व भूत प्रेत का विश्वासी, सफाई पसंद, स्वच्छता और संगीत का प्रेमी होता है।

मृगशिर—जातक वन लोलुप, तथा प्रदर्शन के लिये पूजा-पाठ करने वाला होता है।

आर्द्रा—जातक सबके साथ प्रेमपूर्ण और मधुरभाषी रहने पर भी अपनी अदूर दर्शिता के कारण जीवन भर पश्चात्ताप में ही दुखी होता रहता है।

पुनर्वसु—जातक महत्वा कांक्षी, कर्तव्यनिष्ठ, विवेकी, दुखी पुरुषार्थ पक्ष में भी सम्पन्न होता है परन्तु अहंकारी, क्रोधी, पार्थिवता और पीड़ित आदि से पीड़ित हो जाता है।

पुष्य—जातक अपने मतलब के आधार पर मित्रता व शत्रुता का व्यवहार करता है अर्थात चोर मतलबी और अधिक बुद्धि एवम् चतुर होता है।

आश्लेषा—जातक काम लोलुप, स्वार्थी, लोभी, विशेष प्रिय विपरीत लिंगी के प्रति अत्यधिक आकर्षण वाला होता है।

मघा—जातक कामुक, आधिक चिंता ग्रस्त, दूसरे के धन पर अधि-

...कार करने वाला अपनी उन्नति के लिये प्रयत्नशील, ऊँची आकांक्षा वाला होता है।

पुरुषोत्तमपुत्री—बालक असफलताओं से निराश न होने वाला, दीनबन्धु के रोगों से ग्रस्त, धर्म के प्रति अपनी रखने वाला होता है।

उत्तरफाल्गुनी—धनवान, विलासी, दृढ़ता लिए, तीव्र स्मृति सहित बालक, आकांक्षा के पूरक से अधिकतर चकित रहता है।

हस्त—बालक विद्याध्ययन, स्वेच्छाचारी, पूर्ण चमत्कार, पाखंडी चोर और धूर्त होता है।

चित्रा—बालक बाहुली, अवसाद, क्रोधी, वीरवान तथा विद्वान बनने की इच्छा करता है।

स्वाति—बालक की विचार शक्ति तीव्र होती है, उन्नति के लिए चतुर, क्रोधी महत्वाकांक्षी, कर्मशील, भाग्यवान होता है।

विशाखा—बालक अध्ययनशील, नेक सलाह देने वाला, उत्साह, चतुर, अधिक कार्यों का योगेन होता है।

अनुराधा—बालक का बचपन कष्टमय होता है, ईमानदार दार्शनिक, उदार हृदय, धार्मिक, कारवाबाज, जनता के प्रति अभिरुचि रखने वाला, अधिकार के साथ्यान रखने वाला होता।

ज्येष्ठा—बालक विलासी, आलसी, अभिमानी, मित्रों पर विश्वास करने वाला, नेतृत्व और रक्षा होता है।

मूल—बालक स्वेच्छाचारी, अपनी बात को सर्वोपरि रखने वाला, विद्वान, चमत्कृत, तर्क-तन्त्र से सिद्ध पाने वाला, स्वतन्त्रता प्रेमी, पिता के लिये अशुभ कर होता है।

पूर्वाषाढ़—बालक तगड़ा, प्रबल कार्यी, मित्रों से धन पाने वाला, विशिष्ट संगीत प्रवीण, कार्यकुशल पिता की ओर से दुःखी रहता है।

उत्तराषाढ़—बालक की इच्छा शक्ति प्रबल दूरदर्शी, पुष्ट शरीर वाला, अधिक सन्तानों का होता, प्रखर वक्ता, गृह कार्यों एवं व्यापार से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

श्रवण—बालक धर्म एवं पुस्तकों के प्रति विश्वासवान, वणिक वृत्ति, धनी, सोच-विचार कर काम करने वाला होता है।

धनिष्ठा—बालक अदूरदर्शी, उतावला, मित्र को शत्रु समझने वाला, आततायु होता है।

शतभिषा—बालक स्वस्थ, गंभीर, शत्रु पक्ष के लोग रखने वाला, अर्थ लोभ अधिकारी, कपटी प्रकृति का होता है।

पूर्वाभाद्रपद—बालक प्रतिष्ठा लिखने के लिए प्रयत्नशील, पुजारी, उपासक, कपटी के लिए सर्वथुर पुरुषार्थ में लगे रहने वाला होता है।

उत्तराभाद्रपद—बालक चतुर, कपटी, दयालु, सहयोग करने वाला, उपकारी, परोपकार परायण, विद्वानों का विरोध करने वाला, विद्या व्यसनी होता है।

रेवती—बालक शान्त स्वभाव, अधिकार, कपट व्यवहार, दीन जनों की सहायता करने वाला, विद्वानों का सहयोग पाने वाला।

इन नक्षत्रों का उपयोग भावना की सिद्धता प्राप्त करने तथा विद्याओं को स्थापित होता है, जिसमें व्यक्ति की समुचित आवश्यकताओं के समाधान होता है।

इन नक्षत्रों के अलावा कुछ अन्य विद्वानों विशेषतः अधिकांशतः जन्म के अधिकांश पर अधिकांशित उपयोग करते हैं उन नक्षत्रविद्याओं को राशियाँ कहते हैं। राशियाँ केवल बारह होती हैं।

नक्षत्रों का यह या उपयोग पढ़ने से नक्षत्रों का उपयोग ठीक से होना हुआ करता है। यह तो सत्य माना गया है परन्तु यहाँ का उपयुक्त यह सत्य है। इस बारे में कतिपय विशेषज्ञों विद्वानों हैं।

१. **मेष**—इस राशि में उत्पन्नों व्यक्ति को शक्ति अधिक उत्पन्न होती। जीवन में बहुत उथल-पुथल और विशेषतः परिस्थितियाँ विपरीत। बालक चाहती होता। नेतृत्व करने की प्रबल प्रवृत्ति पाती। जिसे की आवश्यकता व्यक्ति से विशेषतापूर्ण सम्बन्ध बनाते हैं जिनसे से काम लेता। बालक में उत्साह होती। बालक कुछ न कुछ नया करतीकि करने आगे की सोच में पड़ता। शरीर सुदृढ़ सशक्त होता। शक्ति सीमाओं के विपरीत हुआने की चाह नहीं करता। व्यापार में अपनी दूरदर्शिता के कारण सफल होता। सीमाओं में सीमित ही उपयोग होता। बालक अपने उद्देश्य के प्रति पूर्णतः सजग होता सतर्क रहेगा, भटकेगा नहीं। [बालक विवेक वाले में चतुर, व्यवहारिक व्यक्तित्व वाला होता। अपने विचार स्वयं व्यवस्थित और उन पर अडिग रहेगा। किसी की ओर से नहीं रहेगा। अपने निर्णय पर अटल होने के कारण बालक सफलता

वाला, प्राकृतिक दृश्यों से आनन्द पाने वाला, साहसी, समुद्र पार देशों से लाभ पाने वाला, लोहे और विद्युत के व्यापार से लाभ कमाने वाला, गहरे जल से जाने का खतरा पाने वाला, जल्दी-जल्दी विचार बदलने वाला समय को न पहचानने के कारण हानि उठाने वाला, आत्म-निर्भर बनकर ही लाभ उठाने वाला, चौंतीसवें वर्ष के बाद से सम्पन्नता में वृद्धि पाने वाला, किसी भी कार्य में जागरूक चेष्टावान और तत्पर रहकर ही सफल होने वाला, जीवन में कई बार धन प्राप्ति और धन हानि के अवसर पाने वाला, सुशील पत्नी की अवहेलना करने वाला, घरेलू कार्यों में दिलचस्पी न लेने वाला, यात्राओं से लाभ उठाने वाला, स्वतन्त्र व्यापार से लाभ कमाने वाला, बड़ी-बड़ी जलमय आंखें सौम्य चेहरा, सलज्ज मधुर और चुम्बकीय व्यक्तित्व वाला, अनेक स्त्रियों के सम्पर्क में आकर भी प्रेम के मामले में अभाग्यवान, द्यूत की बीमारियां पाने वाला, अधिक पसीना निकालने वाली त्वचा वाला, उदर रोग, वात रोग, गुप्त रोग, गठिया, हृदय रोग, फेफड़े के रोग, आदि से व्यथित रहने वाला, अपने ध्यान को एकाग्र कर लेने वाला होता है। इसका ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७०, ७९, ८८, ९७, वाँ वर्ष परिवर्तन कारी व श्रेष्ठ होंगे।

(८) शनि—इस ग्रह से प्रभावित व्यक्ति का जीवन भयंकर संघर्षों और उथल-पुथल वाला, दूसरे को अपने मन की थाह न देने वाला, अन्तर्मुखी वृत्ति वाला, फूहड़पन और घटिया स्तर की बात न पसन्द करने वाला, छोटे कार्य से सन्तुष्ट न होने वाला, मित्र पर जान देने वाला, प्रेम पाने के लिये लालायित हृदय वाला, दिखावा न करने वाला, सेवा भावी, अर्थ प्राप्ति के लिये कुछ भी कार्य करने को तैयार रहने वाला, लोहे से सम्बन्धित व्यापार या लोहे की फर्म ने नौकरी से लाभ पाने वाला, अधिक हँसी मजाक और गप्पों में समय न गँवाने वाला, व्यर्थ कार्यों में समय व्यतीत न करने वाला, प्रचार प्रसार से दूर रह कर एक मौन चिन्तक जैसे व्यक्तित्व वाला, जीवन में लाभ और हानि अत्यन्त उच्च स्तर के झेलने वाला, शत्रु को परास्त करके ही दम लेने वाला, ठोस और महत्व पूर्ण कार्य करने वाला, गम्भीर प्रकृति वाला, छिछोरापन पसन्द न करने वाला, धार्मिक कार्यों में रुचि न होते हुए भी हर उत्सव को सफल बनाने वाला, कोई भी कार्य करने के लिए खाना-पीना आमोद-प्रमोद त्याग कर भूत की तरह लग जाने वाला, काली वस्तुओं के व्यापार या तेल-तिलहन के व्यापार से भी लाभ पाने वाला, दूसरे के उत्सवों को सफल करने में गांठ का भी लगा

बैठने वाला, कार्य व्यस्तता को ही मनोरंजन समझने वाला, काम को ही भगवान मानने वाला, ढोंग और पाखण्ड से घृणा करने वाला, संकट के समय तक ही पूजा-पाठ में ध्यान लगाने वाला, धन संग्रह करके भी व्यय करने में कंजूस, व्यसनी, स्वभाव में रूखापन और कठोर वाणी वाला, मनुष्य को पहिचानने की शक्ति वाला, पत्नी को धोखे में रखने वाला, इधर की बात उधर करने वाला, अधिकारी से बात करने में हिचकिचाने वाला, दूसरों के भरोसे कार्य छोड़ देने पर हानि उठाने वाला, भाई बन्धु या समाज से कोई सहायता न पाने वाला, शत्रुओं से सुरक्षित, ऊँचे पर्वतों की यात्रा या गहरे जल में जाना दोनों स्थितियों में जान के खतरे वाला, प्रेम के चक्कर में स्त्रियों से हानि उठाने वाला, घोर भौतिकवादी, अत्यधिक सावधानी रखते हुए भी परेशानी में फँस जाने वाला, शंकालु प्रकृति वाला, होता है। ऐसे व्यक्ति गठिया आदि वात रोग, आँतों के रोग, हृदय रोग, कुष्ठ रोग, मूत्र रोग आदि से ग्रस्त हो सकते हैं। जीवन का ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८०, ८९ वाँ वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

(९) मंगल—इस ग्रह से प्रभावित व्यक्ति धुन का पक्का, आन पर मर-मिटने वाला, क्रोधी, साहसी, वीर, दृढ़ निश्चयी, देखने में प्रचण्ड और विस्फोटक होते हुए भी हृदय से कोमल सहृदय, अधिक दिखावा करने वाला, अधिकारियों को महत्व न देने वाला, पत्नी से खटपट चलती रहने के कारण दाम्पत्य जीवन में पूर्णता न पाने वाला, उतावला, नकली स्वाभिमान वाला, व्यसनी, एक से अधिक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला, शीघ्र ही पुंसत्व हीनता से ग्रसित हो जाने वाला, न्यायालय के चक्कर में अधिक रहने वाला पत्नी की बीमारी पर अधिक खर्चा करने वाला, घर में आतंक का सा वातावरण बना देने वाला, आन और बात पर मर मिटने वाला, आपरेशन से हानि उठाने वाला तीस वर्ष बाद मार्ग दर्शक और सच्चा मित्र पाने वाला, मित्रों को भी शत्रु बना लेने वाला, गलत फहमियों का शिकार होने वाला चुगली निन्दा करने वाला, परस्त्री के प्रति आकृष्ट होने वाला, लोगों को संगठित कर लेने वाला, मन के विपरीत कार्य होने पर निराशा और उदासी के गर्त में जा पड़ने वाला, जमीन के क्रय-विक्रय से लाभ उठाने वाला, कर्म क्षेत्र से टक्कर लेने वाला, सामर्थ्यवान होता है। ऐसा व्यक्ति का ९, १८, २७, ३६- ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०, ९९ वाँ वर्ष श्रेष्ठ होगा। ऐसे व्यक्ति रक्त सम्बन्धी, हृदय सम्बन्धी, रक्तचाप आदि बीमारियों लग

[illegible] है : [illegible], [illegible], आदि अनावश्यक तुलने वाली [illegible] को दू- [illegible] है।

[illegible] यह भी पूरा, [illegible] [illegible] का तुलना [illegible] करना चाहिए कि [illegible] में तुलना के तुलना आधार है जब [illegible] [illegible] [illegible]

इसके आधार पर एक उदाहरण देखिये—
जोसेफ Joseph का मूलांक—

१०+१५+१६+५+१६+८ =७३
७+३=१०
१+०=१

१ मूलांक का प्रतिनिधि ग्रह 'सूर्य' है। अतः इस व्यक्ति के स्वभाव से सूर्य ग्रह की चारित्रिक विशेषताएँ मिलाने के पश्चात ही अपनी गणना को सही मानिये, अन्यथा फिर से गणना कीजिये।

हिन्दी वर्णमाला के क्रमांक के आधार पर हिन्दी वर्णाक्षरों की भी मूल्य तालिका बनाई जाती है, परन्तु इन सभी मूल्य तालिकाओं में अधिक उपयुक्त मूल्य तालिका "ईरानी पद्धति" की मैंने अनुभव की है।

ईरानी पद्धति में हर्षल और वरुण अर्थात् मूलांक ४ और ७ का ग्रह नहीं है अतः ४ मूलांक वाले का सूर्य ग्रह और ७ मूलांक वाले का चन्द्रमा ग्रह मानकर, ईरानी सूत्रों काम करते हैं। अपनी ग्रह-गणना करते समय पहले आप वरुण और हर्षल की चारित्रिक विशेषतायें मिलायें। यदि न मिलें तो उनके समकक्षी ग्रह सूर्य व चन्द्र से मिला कर देखें।

काकणी गणना—मन्त्र शास्त्र में आप एक ही ग्रह से सम्बन्धित कई मन्त्रों को पायेंगे। इनमें से उपयुक्त मन्त्र का चयन करने के लिए 'काकणी-गणना' की जाती है।

काकणी दो निकालनी पड़ती हैं एक तो साधक के नाम की और दूसरी मन्त्र की। इनके सूत्र—

साधक के नाम की काकणी—

$$\frac{\text{नाम का वर्गांक} \times २ + \text{मन्त्र का वर्गांक}}{८}$$

मन्त्र की काकणी—

$$\frac{\text{मन्त्र के प्रथमाक्षर का वर्गांक} \times २ + \text{साधक के नाम का वर्गांक}}{८}$$

इन सूत्रों के अनुसार 'वर्गांक' जानना आवश्यक है। वर्गांक निम्न प्रकार हैं—

वर्ग के अक्षर	वर्गांक	वर्ग के अक्षर	वर्गांक
अ से अः तक—	१	प फ ब भ म—	५
क ख ग घ ङ—	२	य र ल व—	६
च छ ज झ ञ—	३	श ष स ह—	७
ट ठ ड ढ ण—	४		
त थ द ध न—	५		

अब एक उदाहरण से इसे समझिये—

प्रश्न—"नरेन्द्र नाम का साधक" सविता त्वामवतात्..... मन्त्र का जाप करना चाहता है तो फलप्रद होगा या नहीं।

उत्तर—काकणी के पहले सूत्र के अनुसार—
साधक के नाम का वर्गांक=५
मन्त्र के प्रथम अक्षर का वर्गांक = ८

$$\frac{५ \times २ + ८}{८} = \frac{१८}{८} = \text{शेष बचे २. (साधक की काकणी)}$$

काकणी के दूसरे सूत्र के अनुसार—

$$\frac{८ \times २ + ५}{८} = \frac{२१}{८} = \text{शेष बचे ५. (मन्त्र की काकड़ी)}$$

काकणी का तीसरा सूत्र है—
"यस्याधिक शेषः सः ऋणी"

(काकणी के जिसके अंक अधिक (शेष) है वही ऋणी होगा अर्थात् देता रहेगा)

इस आधार पर मन्त्र साधक को फलप्रद होगा क्योंकि साधक की काकणी में शेष २ बचे हैं और मन्त्र की काकणी में शेष ५ बचे हैं अतः मन्त्र ऋणी है।

'काकणी-गणना' का प्रयोग 'गुरु मन्त्र' के अलावा सामान्य मन्त्रों के ग्रहण करने में भी उचित रहता है।

विषम परिस्थिति—कभी ऐसी विषम परिस्थिति भी आ सकती है जब साधक के लिये मन्त्र-गणना के आधार पर कोई भी मन्त्र उपयुक्त न बैठता हो तो बीज मन्त्रों के बीजाक्षरों को आवश्यकतानुसार उपर्युक्त मन्त्र-गणना के नियमों का ध्यान रखते हुए इधर-उधर कर लेते हैं। जैसे—"श्रीं ह्रीं क्लीं" मन्त्र को 'क्लीं ह्रीं श्रीं या 'ह्रीं श्रीं क्लीं' कर देना। इसी प्रकार इलोक मन्त्रों के लिए भी उनके शब्द संयोजन को अर्थ-भाव बदले बिना आवश्यकतानुसार बदला जा सकता है। जहाँ तक हो सके इस प्रकार से मन्त्र के अक्षरों में फेर बदल करने के लिये इस विषयज्ञ मन्त्र द्रष्टा विद्वान को ही खोजना चाहिए, जिससे कहीं कोई गलती होने की संभावना न रहे।

—डा० वाई० डी० गहराना

होम्योपैथिक चिकित्सा विज्ञान

(कॉम्प्रिहेन्सिव एण्ड प्रैक्टिकल मैनुअल)

डॉ. वाई. डी. गहराना एवम् डा. (श्रीमती) सकुन्तला कुलश्रेष्ठ

यह पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है। विज्ञान खण्ड में तीन भाग हैं जिनमें होम्योपैथी के सैद्धान्तिक विवेचन, संक्षिप्त इतिहास, व्यावहारिक निर्देश, चिकित्सक के लिये आवश्यक निर्देश, होम्योपैथिक तथा होम्योपैथिक औषधियों से सम्बन्ध, औषधि निर्माण और महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है। प्रैक्टिस खण्ड औषधियों के पूर्ण वर्णन तथा उनकी विशेषता व्याख्या से सम्बन्धित है। साथ ही विभिन्न अंगों पर होने वाली औषधि की प्रतिक्रिया के विषय में भी विवरण दिये गये हैं। रिपीटरी खण्ड में ऐसे लक्षणों के आधार पर औषधियों के विवरण दिये गये हैं। इसमें जिन चिकित्सकों के अनुभव इस पुस्तक को अधिक उपयोगी बना दिया गया है, आवश्यक स्थानों पर साथ में उनके वर्गीकृत अभिप्रायों तथा रोगों के दिये गये निर्देशकों वाली अनुक्रमणिका के साथ पाये जाते) स्पष्ट कर दिये गये हैं।

अनुक्रमणिका पद्धति में लक्षणों के विवरणों तथा कठिन विषयों के चित्र सहित्यों के साथ लगभग 50 विषयों से सुसज्जित यह अनुपम पुस्तक है। पृष्ठ संख्या लगभग 320।

चतुर्थी आवृत्ति सेलोफेन कवर पृष्ठ मूल्य मात्र ६० रु., डाक खर्च १० रु. अलग

होम्योपैथिक चिकित्सा विज्ञान

डा. वाई. डी. गहराना एवं (श्रीमती) सकुन्तला कुलश्रेष्ठ

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में सुसज्जित चित्रों, रोगों के उग्र लक्षणों के वैज्ञानिक विवेचनों तथा रोगी विवेचनों के साथ उपलब्ध यह अपने ही प्रकार की विशिष्ट पुस्तक है। लेखक वर्ग के परिश्रम का अनुपम इक-इक चित्रों के लिये, व्यावहारिक दैनंदिनी की रक्षा के रोगियों के उपचार का सकता है। पुस्तक दो खण्डों में विभाजित है—विज्ञान खण्ड तथा चिकित्सा खण्ड।

इस पुस्तक में होम्योपैथी के सिद्धान्त, औषधि निर्देशन, होम लक्षण दर्शन, होम्योपैथी तथा होम्योपैथिक से सम्बन्ध, रोगी के लिये व्यावहारिक निर्देश, चिकित्सक के लिये आवश्यक निर्देश आदि विषयों पर विस्तृत विवरण स्पष्ट किये गये हैं। विभिन्न औषधियों तथा अन्य सब प्रकार संक्षिप्त रूप सहित औषधि वर्णन इस पुस्तक की विशेष निधि है। लगभग 50 चित्रों के साथ पृष्ठ संख्या लगभग 320 है।

चतुर्थी आवृत्ति सेलोफेन कवर मूल्य मात्र ६० रु.। डाक खर्च १० रु. अलग

वी. पी. द्वारा मँगाने का पता

सुमित प्रकाशन

B,91/A, आलोक नगर, आगरा-10